फरवरी 2024 ■ वर्ष : 69 ■ अंक : 05 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

चेतना शुद्धि और स्वस्थ समाज निर्माण का संकल्प

75
1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत गीत

रचयिता - आचार्य तुलसी

संयममय जीवन हो।
नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन मन पावन हो।
संयममय जीवन हो।।

अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा।
वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से, मुक्त धर्म की भाषा।
छोटे-छोटे संकल्पों से मानस-परिवर्तन हो।
संयममय जीवन हो।।1।।

मैत्री-भाव हमारा सबसे, प्रतिदिन बढ़ता जाए।
समता, सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए।
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो ।
संयममय जीवन हो ।।2।।

विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी।
नर हो नारी बने नीतिमय, जीवनचर्या सारी।
कथनी-करनी की समानता में गतिशील चरण हो ।
संयममय जीवन हो ।।3।।

प्रभु बनकर के ही हम, प्रभु की पूजा कर सकते हैं।
प्रामाणिक बनकर ही, संकट सागर तर सकते हैं।
शौर्य-वीर्य-बलवती अहिंसा ही जीवन-दर्शन हो।
संयममय जीवन हो ।।4।।

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।
'तुलसी' अणुव्रत-सिंहनाद, सारे जग में प्रसरेगा।
मानवीय आचार-संहिता में अर्पित तन-मन हो।
संयममय जीवन हो ।।5।।

अणुव्रत गीत
अणुव्रत गीत महासंगान
संयम ही जीवन है
18
जनवरी
2024
चेतना शुद्धि और स्वस्थ समाज निर्माण का संकल्प
नैतिकता की सुर सुरिता में जन-जन मन पावन हो,
संयममय जीवन हो
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

■ ■ ■

अणुव्रत वर्ग-भेद की समाप्ति पर बल देता है, यह प्रयास भारत के लिए गौरव की बात है। आचार्य श्री तुलसी जैसे सन्त पुरुष ही यदि ऐसा प्रयास करें, तो ही भारत से वर्ग-भेद की समाप्ति का स्वप्न लिया जा सकता है। वरना यह कार्य बेहद कठिन है।

-डॉ. राममनोहर लोहिया

■ ■ ■

वर्ष 69 ● अंक 05 ● कुल पृष्ठ 60 ● फरवरी, 2024

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

■ ■ ■

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

अविनाश नाहर, अध्यक्ष
भीखम सुराणा, महामंत्री
राकेश बरड़िया, कोषाध्यक्ष

प्रकाशन मंत्री
देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार
सुरेन्द्र नाहटा

:: सदस्यता शुल्क विवरण::

एक अंक	–	₹ 60
एक वर्षीय	–	₹ 750
त्रैवर्षीय	–	₹ 1800
पंचवर्षीय	–	₹ 3000
दसवर्षीय	–	₹ 6000
योगक्षेमी (15 yrs.)	–	₹ 15000

:: बैंक विवरण ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::

इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- लोकतंत्र-शुद्धि की प्रक्रिया 06
  आचार्य तुलसी
- समाज-व्यवस्था के मौलिक आधार 09
  आचार्य महाप्रज्ञ
- जीवन का आनंद 12
  आचार्य महाश्रमण

आलेख

- अहिंसक समाज-रचना ... 14
  जयप्रकाश नारायण
- नकारात्मक विचारों से पाएं मुक्ति 16
  किरण बाला
- आखिर जीत गयी मानवता 17
  डॉ. बसंतीलाल बाबेल
- माटी की महिमा 18
  डॉ. लोकेन्द्रसिंह कोट
- सादगी हो शादी ... 20
  डॉ. मोनिका शर्मा
- संकल्पित बचपन : नशामुक्त जीवन 22
  प्रकाश तातेड़
- भारतीय भाषाओं के प्रयोग ... 24
  डॉ. सी. जय शंकर बाबु
- अशिक्षित जानकर न करें अवमानना 26
  डॉ. कृष्णा कुमारी
- आत्मसम्मान का रखें ध्यान 28
  डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव
- गुरु आज्ञा पालन से ... 29
  पारसमल चण्डालिया

कहानी

- प्यार की डोर 30
  कविता विकास

कविता

- प्रकृति प्रेम का रूप है ... 11
  डॉ. राजीव गुप्ता
- ...प्यार के शामियाने बचा 27
  जय चक्रवर्ती

लघुकथा

- आत्मगौरव 23
  देवेन्द्रराज सुथार
- पूर्णता 23
  सुमन कुमार
- संवेदना 32
  अशोक 'अंजुम'

- संपादकीय 05
- तुलसी उवाच 08
- परिचर्चा 34
- अणुव्रत की बात 36
- अणुव्रत गीत महांसगान : एक रिपोर्ट 38
- अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 48
- अणुव्रत बालोदय एजुटूर 50
- अणुव्रत कार्यकर्ता प्रशिक्षण संगोष्ठी 51
- अणुव्रत काव्यधारा 52
- अणुविभा स्थापना दिवस 53
- पर्यावरण जागरुकता अभियान 54
- अणुव्रत समाचार 56

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

एक प्रार्थना है अणुव्रत गीत

लय और ताल
पर सवार
कुछ शब्द जब
दिल में उतरते हैं
झकझोरते हैं
हलचल-सी
पैदा करते हैं
सोचने को
मजबूर करते हैं
और
जीने का अंदाज ही
बदल देते हैं।

पर,
यह ताकत
शब्दों की कहाँ!
शब्द खोखले हैं
बेजान हैं
अपने प्रभाव से
अनजान हैं।

वो युगपुरुष
कोई और है
शब्दों में जिसने
भाव भरे
दिल के गहरे
घाव भरे
चेतन में ऐसा
भरा स्फुरण
जीवन की देखो
नाव तरे।

शब्द और भाव के
उस जादूगर को
नमन है
श्रद्धासिक्त
अभिवन्दन है।

आचार्य तुलसी एक महान जननायक थे। उनके प्रवचन जितने प्रभावी होते थे, उतने ही उनके लिखे और गाये गीत जनता के दिल को छूने वाले होते थे। उनके गीतों में क्रान्ति के बीज होते थे। सामाजिक चेतना को झकझोरने में इन गीतों की बड़ी भूमिका रही। जब वे गीत गाते थे, वे स्वयं उस गीत में डूब जाते थे और मंत्रमुग्ध श्रोता भी भाव प्रवाह में बहते चले जाते थे। "अणुव्रत गीत" आचार्य तुलसी द्वारा रचित एक विशिष्ट गीत है। इस गीत में उन्होंने अणुव्रत के दर्शन को बहुत ही खूबसूरती के साथ पिरोया है।

अणुव्रत गीत पिछले कई दशकों से लाखों लोगों के जीवन का हिस्सा बना हुआ है। किसी गीत को गाना तभी अर्थपूर्ण होता है जब उसे गाते हुए हम उसके भावों के साथ स्वयं को जोड़ सकें। शब्दों से आगे बढ़ कर उनमें छिपे भावार्थ को आत्मसात कर सकें। अणुव्रत गीत में गजब की प्रभावशीलता है। इस गीत की प्रत्येक पंक्ति को उसके निहितार्थ में डूब कर प्रतिदिन गाया जाये, तो यह गीत एक प्रार्थना का रूप ले लेता है, जिसे अपना कर व्यक्ति जीवन में सकारात्मक परिवर्तन को घटित होते हुए देख सकता है।

18 जनवरी 2024 को देश के कोने-कोने में अणुव्रत गीत की स्वर-लहरियाँ गुंजायमान हुईं। अनेक देशों से भी लोग इस अभिक्रम से जुड़े। अणुव्रत आन्दोलन के 75वें वर्ष में यह प्रवर्तक आचार्य तुलसी के प्रति आस्था रखने वाले हर एक अणुव्रत समर्थक की भावभीनी श्रद्धांजलि थी। अणुव्रत गीत में अभिव्यक्त भावनाओं के सकारात्मक स्पन्दन हिंसा और अशान्ति से आक्रांत विश्व को अहिंसा और शान्ति की शीतलता प्रदान करेंगे, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती। इंसान-इंसान के बीच सद्भाव बढ़े, असमानता दूर हो, मानव धर्म मुखर हो और नैतिकता हर व्यक्ति का स्वभाव बने - यही अणुव्रत गीत का आह्वान है।

अणुव्रत-दर्शन व्यक्ति की उदात्त चेतना के ऊर्ध्वारोहण का राजमार्ग है। स्वयं को पहचान कर स्व-कल्याण की इबारत लिखने का एक सटीक माध्यम है। आचार्य तुलसी ने लगभग 5 दशकों तक हजारों किलोमीटर की पदयात्राएँ कर हर जाति-धर्म के अनुयायियों तक अणुव्रत की बात पहुँचायी। राष्ट्रपति भवन से ले कर गरीब की झोपड़ी तक वे पहुँचे। लाखों-लाखों लोग उनकी बात से प्रभावित हुए और अपनी जीवन-यात्रा को सद्मार्ग की ओर मोड़ा। इसका एक लम्बा इतिहास है।

आचार्य तुलसी अणुव्रत गीत के अन्तिम पद्य में यह विश्वास व्यक्त करते हैं कि एक दिन अणुव्रत का सिंहनाद पूरे विश्व में अनुगूँजित होगा। आचार्य तुलसी के सपने को साकार करने की दिशा में आज अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण निरन्तर गतिशील हैं। प्रत्येक अणुव्रत कार्यकर्ता का यह दायित्व है कि वह स्वयं के जीवन को अणुव्रतमय बनाते हुए पूर्ण समर्पण भाव से यह प्रयास करे कि जन-जन अणुव्रत की मानवीय आचार संहिता के प्रति तन और मन से समर्पित हो। आचार्य तुलसी चाहते थे कि हर व्यक्ति का जीवन संयममय हो। हमें इस दिशा में निरंतर आगे बढ़ते जाना है। अणुव्रत अमृत महोत्सव के अवसर पर यही हमारी रचनात्मक भेंट होगी।

सं. जै.
sanchay_avb@yahoo.com

आचार्य तुलसी

लोकतंत्र-शुद्धि की प्रक्रिया

कोई भी तंत्र, मंत्र या यंत्र तब तक सफल नहीं होगा, जब तक मनुष्य, सही मनुष्य नहीं होगा। तंत्र का संचालक मनुष्य होता है। वह संचालन में जितनी अनैतिकता करेगा, तंत्र उतना ही विकृत होता जाएगा। विकृत तंत्र के आधार पर स्वस्थ समाज या राष्ट्र की परिकल्पना ही बेमानी है।

विश्व में अनेक प्रकार की शासन प्रणालियां प्रचलित रही हैं। उनमें गणतंत्र, राजतंत्र, अधिनायकतंत्र, लोकतंत्र आदि प्रमुख हैं। इनमें कौन-सा तंत्र अच्छा है? इस प्रश्न का निरपेक्ष उत्तर नहीं हो सकता। प्रत्येक तंत्र में कुछ अच्छाइयां और कुछ कमियां हो सकती हैं। अब तक कोई भी तंत्र समग्र रूप से सही प्रमाणित नहीं हो पाया है। फिर भी वर्तमान में हवा का रुख लोकतंत्र की ओर प्रतीत हो रहा है। विश्व के अनेक देशों में लोकतांत्रिक पद्धति से राज्य का संचालन हो रहा है। जहाँ लोकतंत्र नहीं है, वहाँ के लोग लोकतंत्र का सपना देख रहे हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अन्य तंत्रों की तुलना में लोकतंत्र के प्रति जनआस्था प्रबल है।

लोकतंत्र की श्रेष्ठता के अनेक कारण हैं। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें प्रत्येक व्यक्ति को शिखर तक पहुँचने का अवसर मिल सकता है। अन्य तंत्रों में सामूहिक नेतृत्व की परंपरा हो या एकल नेतृत्व की, हर व्यक्ति को शीर्ष पर देखने की कल्पना ही नहीं हो सकती। एकतंत्र और अधिनायकतंत्र में सत्ता के विरोध में बोलने वाला निश्चिन्त होकर नहीं जी सकता। इतिहास बताता है कि ऐसे व्यक्ति को अनेक प्रकार की यातनाएं अथवा मृत्युदण्ड झेलने के लिए तैयार रहना पड़ता है, जबकि लोकतंत्र में राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री को भी न्यायालय के कठघरे में खड़ा किया जा सकता है। जन-आकांक्षाओं की पूर्ति का अवकाश जितना लोकतंत्र में है, एकतंत्र में नहीं हो सकता।

लोकतंत्र असफल क्यों?

लोकतंत्र में अच्छाइयों की प्रबल संभावना के बावजूद वह सफल नहीं हो रहा है, यह चिन्ता का विषय है। लोकतंत्र की असफलता के कारणों की मीमांसा की जाये तो एक लम्बी कारण-शृंखला उपस्थित की जा सकती है, पर देखना यह है कि उससे लाभ क्या होगा? जनता में थोड़ी-बहुत आस्था इस तंत्र के प्रति बची है, वह भी समाप्त हो जाएगी। मेरा अपना अभिमत यह है कि कोई भी तंत्र, मंत्र या यंत्र तब तक सफल नहीं होगा, जब तक मनुष्य, सही मनुष्य नहीं होगा। तंत्र का संचालक मनुष्य होता है। वह संचालन में जितनी अनैतिकता करेगा, तंत्र उतना ही विकृत होता जाएगा। विकृत तंत्र के आधार पर स्वस्थ समाज या राष्ट्र की परिकल्पना ही बेमानी है।

लोकतंत्र सर्वोत्तम शासन-तंत्र है, यदि उस तंत्र को संचालित करने वाले और उनका चयन करने वाले व्यक्ति सही हैं। लोकतंत्र सबसे दुर्बल शासन-तंत्र है, यदि नेता और जनता

भारत एक ऐसा देश है, जहाँ भगवान महावीर के अनेकान्त दर्शन को फलने-फूलने का मौका मिला है। अनेकान्त लोकतंत्र की आधारशिला है। सापेक्षता, समानता, सहअस्तित्व और स्वतंत्रता अनेकान्त के घटक तत्त्व हैं। इन्हीं तत्त्वों के आधार पर लोकतंत्र चल सकता है।

सही नहीं है। लोकतंत्र में लिखने, बोलने और सोचने की स्वतंत्रता है, पर इसका अर्थ यह तो नहीं है कि व्यक्ति उच्छृंखल हो जाये। लोकतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को सत्ता के सिंहासन पर बैठने का अधिकार है, पर चरित्र-बल और बुद्धि-बल से शून्य व्यक्ति के हाथों में सत्ता आती है, तब उसका क्या परिणाम हो सकता है?

लोकतंत्र की सफलता के सूत्र

भारत एक ऐसा देश है, जहाँ भगवान महावीर के अनेकान्त दर्शन को फलने-फूलने का मौका मिला है। अनेकान्त लोकतंत्र की आधारशिला है। सापेक्षता, समानता, सहअस्तित्व और स्वतंत्रता अनेकान्त के घटक तत्त्व हैं। इन्हीं तत्त्वों के आधार पर लोकतंत्र चल सकता है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था- "आज का लोकतंत्र भगवान महावीर के अनेकान्त दर्शन का फलित है।" लोकतंत्र में आस्था रखने वाले लोग अनेकान्त दर्शन का उपयोग करें तो लोकतंत्र की सफलता में सन्देह नहीं रहेगा।

वाणी और चिन्तन की स्वतंत्रता का सीधा सम्बन्ध अहिंसा के साथ है। बाध्यता हिंसा है। दमन हिंसा है। देश के नागरिकों को सोचने और बोलने की स्वतंत्रता वहीं मिल सकती है, जहाँ अहिंसा में विश्वास है। सत्ता के विरोध में मुखर लोगों को भी जहाँ शान्ति से सहन किया जाता है, लोकतंत्र वहाँ सफल होता है। विरोधी स्वरों को कुचलने के लिए गोली की भाषा का प्रयोग सर्वथा अलोकतांत्रिक तरीका है। ऐसा तरीका जहाँ कहीं अपनाया जाता है, वहाँ लोकतंत्र की निर्मम हत्या होती है।

लोकतंत्र की रीढ़

शरीर रीढ़ के आधार पर चलता है। लोकतंत्र चुनाव के आधार पर चलता है। इस अर्थ में चुनाव लोकतंत्र की रीढ़ है। चुनाव का लक्ष्य होता है - सही काम के लिए सही व्यक्तियों का चयन। आज की चुनाव-प्रक्रिया देखकर लगता है कि मूल लक्ष्य विस्मृत हो गया और जैसे-तैसे सत्ता हथियाना चुनाव का लक्ष्य बन गया। इस चुनाव ने उम्मीदवार, मतदाता और चुनाव आयोग की ही नहीं, लोकतंत्र की गरिमा को धूलिसात् कर दिया है।

एक लड़का मिट्टी खोद रहा था। पिता ने पूछा- "क्या कर रहे हो?" लड़का बोला - "पिताजी! आपका नाम खोज रहा हूँ।"

पिता ने आश्चर्य के साथ पूछा- "मेरा नाम यहाँ कैसे मिलेगा?"

लड़का बोला- "पिताजी! आपने ही तो कहा था कि मैंने आपका नाम मिट्टी में मिला दिया।" क्या ऐसे लड़के अपने पिता का नाम रोशन कर सकते हैं?

लोकतंत्र के सपूतों ने भी उसके साथ यही किया है। जब देश के नेताओं से कहा जाता है कि वे लोकतंत्र के साथ कैसा खिलवाड़ कर रहे हैं तो उनकी जुबान बन्द हो जाती है। लोकतंत्र की न कोई जाति है और न कोई सम्प्रदाय है। फिर भी उसे जातिवाद और सम्प्रदायवाद के साथ जोड़ने का दुष्प्रयास हो रहा है। जिस राष्ट्र में जाति, सम्प्रदाय और अर्थबल के आधार पर चुनाव होगा, वह राष्ट्र लोकतंत्र की विडम्बना करता रहेगा।

जरूरी है जटायु वृत्ति को जगाना

लोकतंत्र की जड़ को मजबूत करने के लिए चुनाव की प्रक्रिया को स्वस्थ बनाना जरूरी है। चुनाव की प्रक्रिया गलत होगी तो लोकतंत्र की जड़ खोखली होती रहेगी। इस बात को सब लोग समझते हैं कि चुनावी भ्रष्टाचार द्रौपदी का चीर बन रहा है, किन्तु उसका प्रतिवाद करने की क्षमता को पक्षाघात हो गया है। एक गहरी खामोशी, एक गहरी चुप्पी बढ़ती जा रही है। बुराई को देखकर आँखें मूँदना या कानों में अँगुलियां डालना ही पर्याप्त नहीं है। उसके विरोध में व्यापक जनचेतना जगाने की अपेक्षा है।

महात्मा गांधी की दृष्टि में भ्रष्टाचार बढ़ने का सबसे बड़ा कारण था 'जटायु वृत्ति' का लोप। रावण ने सीता का अपहरण किया। वह सीता को जबरदस्ती अपने विमान में बिठाकर ले जा रहा था। जटायु ने सीता का करुण क्रन्दन सुना। वह जानता था कि रावण के शिकंजों से सीता को मुक्त कराना उसके सामर्थ्य की बात नहीं है। किन्तु उसके लिए उसका अर्थ यह नहीं था कि वह बिना लड़े ही सीता का हरण होने दे। उसने मौत को स्वीकार करके रावण का मुकाबला किया। जब तक उसके शरीर में शक्ति रही, वह रावण से लड़ता रहा।

आज भ्रष्टाचार का रावण मानवता रूपी सीता का अपहरण कर ले जा रहा है। करोड़ों लोगों की आँखों के सामने ले जा रहा है, किन्तु कोई भी जटायु आगे आकर उसका प्रतिरोध करने की स्थिति में नहीं है। भ्रष्टाचार के प्रति जनता का यह मौन, यह उपेक्षा भाव उसे बढ़ाएगा नहीं तो और क्या करेगा?

आज भ्रष्टाचार का रावण मानवता रूपी सीता का अपहरण कर ले जा रहा है। करोड़ों लोगों की आँखों के सामने ले जा रहा है, किन्तु कोई भी जटायु आगे आकर उसका प्रतिरोध करने की स्थिति में नहीं है। भ्रष्टाचार के प्रति जनता का यह मौन, यह उपेक्षा भाव उसे बढ़ाएगा नहीं तो और क्या करेगा? आज सब राजनैतिक दल, अधिकारी वर्ग, सरकारी और गैरसरकारी तंत्र एवं जनता - सब यह अनुभव कर रहे हैं कि चुनाव की पद्धति गलत है, भ्रष्टाचार के आरोपों से नहीं, वास्तविक भ्रष्टाचार से लिप्त है। चुनाव जीतने के लिए पैसे को पानी की तरह बहाया जा रहा है, इस कारण वह भारभूत है, किन्तु सुधार की दिशा में कोई एक कदम भी नहीं उठा रहा है। यदि ऐसे समय में व्यक्ति-व्यक्ति की जटायु वृत्ति को जगाया जा सके और चुनावी भ्रष्टाचार के विरोध में एक शक्तिशाली समवेत स्वर उठ सके तथा उस स्वर को स्थायित्व मिल सके तो लोकतंत्र की जड़ को सिंचन मिल सकता है।

लोकतंत्र के सारथियों की अर्हता

लोकतंत्र का रथ कीचड़ में फँसा है। रथ के सारथि उसे कीचड़ से बाहर निकालना चाहते हैं, पर निकालने की कला से अनभिज्ञ हैं। वे जितनी शक्ति लगा रहे हैं, रथ उतना ही गहरा धँसता जा रहा है। कारण साफ है। सारथि योग्य नहीं हैं। उनकी योग्यता के लिए कोई मानक भी निर्धारित नहीं है। सत्ता और अर्थ के प्रभाव अथवा जाति और सम्प्रदाय की प्रतिबद्धता से लोकसभा और विधानसभाओं के टिकट मिलते हैं। मतदाता प्रलोभन, भय और प्रतिबद्धता के घेरे में खड़ा है। वोट बटोरने के लिए वांछनीय एवं अवांछनीय सभी प्रकार के उपाय काम में लिये जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में योग्य व्यक्तियों का चयन कैसे होगा?

जो लोग लोकतंत्र का रथ हाँक रहे हैं, उनके प्रशिक्षण की भी कोई व्यवस्था नहीं है। अबोध बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित अध्यापक का चयन होता है, किन्तु राष्ट्र का संचालन करने के लिए न शैक्षिक योग्यता की अपेक्षा है और न आन्तरिक अर्हता की। संयम, आत्मानुशासन, सहिष्णुता, प्रामाणिकता जैसे मूल्यों को अर्हता की कसौटियों के रूप में स्वीकार किया जाये तो युग के चालू प्रवाह को मोड़ा जा सकता है।

अणुव्रत आन्दोलन का एक कार्यक्रम है लोकतंत्र की शुद्धि। सन् 1949 से यह नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों को लोकजीवन में प्रतिष्ठित करने के लिए काम कर रहा है। चुनाव की प्रक्रिया को परिष्कृत करने की दृष्टि से अणुव्रत ने कुछ मानक प्रस्तुत किये हैं। उसके अनुसार वोट का अधिकारी वह व्यक्ति है-

- जो ईमानदार हो।
- जो नशामुक्त हो।
- जो चरित्रवान हो।
- जो कार्यनिपुण हो।
- जो जाति और सम्प्रदाय से बंधा हुआ न हो।

जिस राष्ट्र का लोक जागृत नहीं होता, उसका तंत्र स्वस्थ नहीं हो सकता। लोकतंत्र को स्वस्थ और विश्वस्त बनाना है तो ऐसे प्रत्याशी का चयन करना होगा, जो उपर्युक्त अर्हताओं से संपन्न हो। चयन का दायित्व लोक पर है। इसीलिए लोकमत को चरित्र के पक्ष में करना जरूरी है। जिस दिन मतदाता और प्रत्याशी चरित्र के आधार पर चुनाव के महासमर में उतरेंगे, उसी दिन लोकतंत्र को विजयश्री प्राप्त हो सकेगी।

तुलसी उवाच

अहिंसा है धर्म का सार

संसार में जितने भी धर्मप्रवर्तक और महान व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने अहिंसा का उपदेश दिया है। उसको सर्वोच्च जीवन-मूल्य के रूप में स्वीकार किया है। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो अहिंसा एक सार्वभौम सत्य है, शाश्वत सत्य है, धर्म का सार है और इस जगती का आधार है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अहिंसा के मूल्य को समझना चाहिए। उसे यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि जैसी पीड़ा स्वयं उसे होती है, वैसी ही पीड़ा दूसरों को होती है। अतः किसी भी प्राणी को संकल्पपूर्वक पीड़ा पहुँचाना अनुचित है, धर्म के विपरीत आचरण है।

हिंसक व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में सन्तुष्ट और समाहित नहीं रह सकता। उसकी हर प्रवृत्ति में एक खिंचाव-सा रहता है। वह जिन क्षणों में हिंसा से गुजरता है, एक प्रकार के आवेश से बेभान हो जाता है। आवेश का उपशम होते ही वह पछताता है, रोता है और संताप से भर जाता है।

आचार्य महाप्रज्ञ

समाज-व्यवस्था के मौलिक आधार

स्वतंत्रता, समानता, सहयोग, सहानुभूति और सहिष्णुता - ये समाज-व्यवस्था के पाँच मौलिक आधार हैं। अणुव्रत के संदर्भ में इनकी मीमांसा आवश्यक है। अणुव्रत के बिना स्वतंत्रता की बात फलित नहीं होती। जब तक जीवन में अहिंसा, सत्य और इच्छा-परिमाण का विकास नहीं होता, तब तक व्यक्ति किसी को स्वतंत्र नहीं रहने देगा।

यदि हम समाज का संदर्भ छोड़ दें तो चरित्र, आचार और नैतिकता की व्याख्या सिमट जाएगी और इतना छोटा-सा बिंदु बन जाएगा कि उसे देखने के लिए माइक्रोस्कोप की जरूरत पड़ेगी। आचार और नैतिकता का विकास समाज के संदर्भ में हुआ है। कोई दूसरा है तो अहिंसा है, सत्य है। जहाँ दूसरा नहीं है, वहाँ सत्य, असत्य का प्रश्न ही नहीं है। अचौर्य, अपरिग्रह का मूल्य भी समाज के संदर्भ में है। अब्रह्मचर्य का भी बहुत व्यापक रूप समाज के संदर्भ में है।

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह - ये पाँच हमारे चरित्र के मूल आधार माने जाते हैं। इनकी व्याख्या जैनागमों में की गयी है, बौद्ध-दर्शन, पातंजल योग-दर्शन और महात्मा गांधी ने भी की है। दो-तीन हजार वर्षों से लेकर अब तक जिसकी व्याख्या चरित्र या आचार के रूप में होती आयी है, वह चरित्र समाज के संदर्भ में है।

हम चरित्र और आचार के विकास की बात करें, यह जरूरी है, पर इसके लिए समाज को समझना जरूरी है। समाज-व्यवस्था को समझना जरूरी है। समाज क्या है? सामाजिक व्यवस्था का आधार क्या है? समाज कैसे चलता है? यदि हम समाज के मूलभूत आचार को न समझें तो चरित्र और आचार को समझना भी कठिन होगा। नैतिकता तो पूर्णतः समाज पर आधारित है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करे, यह है नैतिकता। पुराना शब्द है - चरित्र। नैतिकता शब्द इन शताब्दियों में व्यवहृत होने लगा है। नीति शब्द से बना है नैतिकता। नैतिकता समाज-सापेक्ष है, इसीलिए समाज के मूल आधार को जानना जरूरी है। इस युग में इस विषय पर काफी चिन्तन हुआ है। अणुव्रत के परिप्रेक्ष्य में उसकी मीमांसा से एक नया पक्ष सामने आ सकता है।

स्वतंत्रता और नियंत्रण

अणुव्रत के विचारक से पूछा जाये कि समाज-व्यवस्था का मूल आधार क्या है तो उसका उत्तर होगा - समाज-व्यवस्था का मूल आधार है अनेकान्तवाद। हम इस सच्चाई को समझें। व्यक्तियों से समाज बना या जंगल से समाज बना? अरण्य से नगर बना है। अरण्य में समाज नहीं था। अरण्यवास छूटा और समाज बना, तब कहा गया - जंगल में सब स्वतंत्र थे। समाज बन रहा है, पर हमारी स्वतंत्रता अक्षुण्ण रहनी चाहिए। यह थी समाज-व्यवस्था की पहली शर्त। समाज-व्यवस्था का पहला आधार बनता है स्वतंत्रता, पर इससे समस्या पूरी हल नहीं होती। प्रश्न आया जहाँ हजार आदमी मिलें, वहाँ स्वतंत्रता में बाधा आएगी। उस स्थिति में क्या करना चाहिए? समाधान मिला - स्वतंत्रता के

समाज-व्यवस्था में समानता और असमानता - दोनों का मूल्य है। जीवन की जो मूल आवश्यकताएं हैं, वे सबकी समान हैं और उनकी पूर्ति समानता के आधार पर होनी चाहिए। जहाँ व्यवस्था का प्रश्न है, न्याय का प्रश्न है, बुद्धि और कौशल का प्रश्न है, वहाँ समानता की बात कभी सम्भव नहीं बन सकती।

साथ नियंत्रण भी जरूरी है। अनेकान्त का पहला सूत्र बन गया - स्वतंत्रता और नियंत्रण। नियंत्रण इसलिए कि सभी की स्वतंत्रता रहे। स्वतंत्रता की भी एक सीमा होनी चाहिए। जहाँ नियंत्रण नहीं होगा, वहाँ स्वतंत्रता टिक नहीं पाएगी। नियंत्रण का मतलब है - एक शक्तिशाली व्यक्ति भी किसी कमजोर की स्वतंत्रता में बाधा न डाले। यह स्वतंत्रता और नियंत्रण का सन्तुलन समाज-व्यवस्था का पहला मौलिक आधार है।

समानता और असमानता का सामंजस्य

समाज-व्यवस्था का दूसरा आधार खोजा गया - समानता। सबके प्रति समान व्यवहार होना चाहिए। समानाधिकार शब्द मधुर लगता है, पर यह बात ऐकान्तिक नहीं हो सकती । भगवान महावीर ने कहा - 'णो हीणे णो अइरित्ते' - कोई हीन नहीं है, कोई अतिरिक्त नहीं है। यह निश्चयनय की बात हो सकती है किन्तु व्यवहारवाद में यह नियम संभव नहीं है। व्यवहार के क्षेत्र में हीनता और अतिरिक्तता प्रकृति के नियम जैसा है। जहाँ हम शरीर के साथ जीते हैं, प्राण-यात्रा के साथ जीते हैं, मस्तिष्क के साथ जीते हैं, वहाँ असमानता भरी पड़ी है। समानता की बात सर्वत्र एकरूपता में कैसे लागू हो सकती है? जहाँ न्याय और औचित्य का प्रश्न है, वहाँ समानता भी है, असमानता भी है। जब आर्थिक दृष्टि से समानता की बात सोची गयी तब यह सोचा गया - एक मजदूर को न्यूनतम इतना मिलना चाहिए, जिससे उसके परिवार का भरण-पोषण हो सके। यह न्यूनतम आय का निर्धारण तो कर दिया गया, पर अधिकतम का निर्धारण नहीं किया गया। साम्यवादी व्यवस्था में भी जहाँ एक मजदूर को पाँच सौ-हजार रुबल मिलते थे, वहाँ एक साहित्यकार-विचारक को दस-पन्द्रह हजार रुबल मिलते थे। यह न्यूनतम मर्यादा तो की जा सकती है कि प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनतम आय इतनी मिलनी चाहिए किन्तु समानता की बात सर्वत्र लागू नहीं होती। समाज-व्यवस्था में समानता और असमानता - दोनों का मूल्य है। जीवन की जो मूल आवश्यकताएं हैं, वे सबकी समान हैं और उनकी पूर्ति समानता के आधार पर होनी चाहिए। जहाँ व्यवस्था का प्रश्न है, न्याय का प्रश्न है, बुद्धि और कौशल का प्रश्न है, वहाँ समानता की बात कभी सम्भव नहीं बन सकती। अनेकान्तवाद पर आधारित समाज-व्यवस्था का महत्वपूर्ण अभ्युपगम है - समानता और असमानता का औचित्यपूर्ण सामंजस्य।

सहयोग

समाज-व्यवस्था का तीसरा सूत्र है - सहयोग। यदि सहयोग नहीं है, तो समाज क्या है? दो साथ रहें तो एक-दूसरे का योग होना चाहिए। यह समाज-व्यवस्था का मूल आधार है। पाँच व्यक्ति साथ रहते हैं और परस्पर सहयोग नहीं है तो प्रत्येक के आगे कौमा (अर्धविराम) लग जाएगा। हम इस भाषा में समझें - 1,1,1 - ये अर्धविराम लगने से तीन बनते हैं। यदि अर्धविराम हटा तो 111 हो जाएंगे। जहाँ अर्धविराम और पूर्णविराम लगता चला जाये, वहाँ समाज नहीं बनता। जहाँ समाज होगा, वहाँ अर्धविराम या पूर्णविराम नहीं होगा। वहाँ एकसूत्रता होगी, सहयोग होगा। यह चिन्तनीय प्रश्न है - दो व्यक्ति साथ रहें और एक दूसरे को योग न दें। इसका अर्थ है - वे समाज का मूल्य नहीं जानते, साथ रहने की उपयोगिता नहीं जानते। जैन दर्शन की भाषा है - एक परमाणु एक आकाश प्रदेश में अवगाढ़ है किंतु वह स्कंध नहीं है। एक आकाश प्रदेश में अनन्त प्रदेशी स्कंध भी होते हैं और परमाणु भी। अनंत परमाणु हैं, पर वह स्कंध नहीं बनता। जब तक योग नहीं होता, बंध नहीं होता, तब तक परमाणु स्कंध नहीं बन सकता। समाज तभी बनता है, जब योग होता है, सहयोग होता है ।

जरूरी है असहयोग भी

सम्यक् समाज-व्यवस्था के लिए जितना सहयोग जरूरी है, असहयोग भी उतना ही जरूरी है। महात्मा गांधी ने कहा था - असहयोग करो, विनयपूर्वक असहयोग करो। एक साधक का शरीर यदि संयम की यात्रा के लिए चलता है, तो वह उसका सहयोग करता है। यदि वह संयम में बाधक बने तो उसके साथ असहयोग भी करो। शरीर को पोषण देना बंद कर दो। ऊनोदरी, उपवास आदि तपस्या करो। तपस्या के प्रयोग के साथ असहयोग के प्रयोग हैं। उसे इतना सहयोग मत दो कि शरीर संयम में बाधक बन जाये। बुराई के साथ असहयोग करना समाज-व्यवस्था का मुख्य सूत्र है। जैसे एक व्यक्ति दहेज के लिए एक युवती को जिंदा जला देता है। ऐसे क्रूर व्यक्ति के साथ समाज को असहयोग करना

आज समाज की जो नैतिकता है, वह समाज-व्यवस्था के मूल आधारों पर ही कुठाराघात कर रही है। अपने पैरों पर अपने हाथों से ही कुल्हाड़ी चलायी जा रही है। करोड़ों लोग ऐसे हैं, जो बुराई करना नहीं चाहते, पर उन्हें पता नहीं है कि वे अंधेरे में हैं। ऐसे लोगों के लिए अणुव्रत आलोक दीप बन सकता है।

चाहिए। उसके विवाह-शादी आदि प्रसंगों का बहिष्कार कर असहयोग किया जाता है। मृत्युदण्ड, आजीवन कारावास आदि दंड-विधान बुराई के प्रतिकार और असहयोग के लिए ही हैं।

सहानुभूति : असहानुभूति

समाज-व्यवस्था का चौथा सूत्र है - सहानुभूति। समाज में सहानुभूति का बहुत विकास हुआ है। किसी एक व्यक्ति के दर्द होता है, तो सौ व्यक्ति दर्दी बन जाते हैं, सहानुभूति व्यक्त करने चले आते हैं। व्यक्ति मर जाता है तो संवेदना और सहानुभूति जताने के लिए सैकड़ों व्यक्ति उपस्थित हो जाते हैं। दूसरे की सहानुभूति से व्यक्ति का दु:ख-दर्द हल्का हो जाता है। उसे लगता है कि उसका दु:ख-दर्द केवल उसका ही नहीं है, समाज भी उसके साथ जुड़ा हुआ है। एक ओर सहानुभूति की चेतना विकसित है तो दूसरी तरफ असहानुभूति की चेतना भी विकसित है। वह व्यक्ति जो गलत और अनैतिक कार्यों में लिप्त है, समाज की सहानुभूति खो देता है।

सहिष्णुता : असहिष्णुता

समाज-व्यवस्था का पाँचवां आधार सूत्र है - सहिष्णुता। समाज में कितने प्रकार के लोग हैं। विभिन्न रुचियां और विभिन्न प्रकृतियां हैं सबकी। इस स्थिति में समाज सहिष्णुता के बिना चल नहीं सकता। समाज पृथ्वी के समान होता है, जो सबको सहन करता है किंतु समाज केवल सहिष्णुता के आधार पर नहीं चलता। यह प्राकृतिक नियम है - बिजली तभी जलेगी जब धन और ऋण विद्युत का संयोग होगा, पोजिटिव एवं निगेटिव विद्युत का योग होगा। यह अनेकान्त का महत्वपूर्ण सूत्र है। इसमें सहिष्णुता भी है और असहिष्णुता भी है। अनेक लोग इस भाषा में बोलते हैं - सहने की एक सीमा होती है। अब मैं सहन नहीं करूँगा। यह असहिष्णुता का भाव भी समाज-व्यवस्था का प्रमुख तत्त्व बनता है।

अणुव्रत : लोकतंत्र का स्वास्थ्य-सूत्र

स्वतंत्रता, समानता, सहयोग, सहानुभूति और सहिष्णुता - ये समाज-व्यवस्था के पाँच मौलिक आधार हैं। अणुव्रत के संदर्भ में इनकी मीमांसा आवश्यक है। अणुव्रत के बिना स्वतंत्रता की बात फलित नहीं होती। जब तक जीवन में अहिंसा, सत्य और इच्छा-परिमाण का विकास नहीं होता, तब तक व्यक्ति किसी को स्वतंत्र नहीं रहने देगा। यदि अणुव्रत के ये तत्त्व नहीं हैं तो समाज-व्यवस्था चल नहीं पाएगी। यदि समानता और सहिष्णुता नहीं है तो समाज- व्यवस्था का सम्यक् संयोजन कैसे होगा? इन तत्त्वों के विकास के लिए अणुव्रत की अनिवार्यता है। यदि इन तत्त्वों के प्रति हमारी धारणा या आस्था नहीं बनती है तो समाज-व्यवस्था के मूल आधार ही लड़खड़ा जाते हैं।

आज समाज की जो नैतिकता है, वह समाज-व्यवस्था के मूल आधारों पर ही कुठाराघात कर रही है। अपने पैरों पर अपने हाथों से ही कुल्हाड़ी चलायी जा रही है। करोड़ों लोग ऐसे हैं, जो बुराई करना नहीं चाहते, पर उन्हें पता नहीं है कि वे अंधेरे में हैं। ऐसे लोगों के लिए अणुव्रत आलोक दीप बन सकता है। इसकी व्यापकता में समाज के अस्तित्व और अस्मिता को बनाये रखने का सामर्थ्य निहित है। यही लोकतंत्र के स्वास्थ्य का सूत्र है। ■

दोहे

प्रकृति प्रेम का रूप है...

■ **डॉ. राजीव गुप्ता** - फर्रुखाबाद ■

धीरे-धीरे छँट गया, मन में घुला तनाव।
हरी घास पर गाँव की, जब से रखा पाँव।।

जैसे गहने नारी का, देते रूप निखार।
प्रकृति धरा का उसी तरह, करती है शृंगार।।

मेघों ने पानी दिया, वृक्षों ने दी साँस।
प्रकृति ने इतना दिया, फिर भी बुझी न प्यास।।

प्रकृति प्रेम का रूप है, चारों ओर निहार।
देती है यह नित्य ही, कुछ अनुपम उपहार।।

प्रकृति से नित इस तरह, करो न तुम खिलवाड़।
इक दिन तुम पछताओगे, अपना काम बिगाड़।।

नदियों में फेंको नहीं, वस्तु कोई बेकार।
नदियाँ जल का स्रोत हैं, जीवन का आधार।।

पाप नहीं धोती नदी, देती जीवन दान।
यह हम सबको प्रकृति ने, दिया नेक वरदान।।

इनके जल को स्वच्छ रख, दो सबको यह ज्ञान।
इनकी पूजा का यही, सबसे सही विधान।।

एक नदी का किस तरह, हम पर है अहसान।
यह हम सब हैं जानते, कोई नहीं अनजान।।

आचार्य महाश्रमण

जीवन का आनंद

आदमी हर समय जागरूक रहे। हो सके तो किसी का भला करे किंतु किसी का बुरा न करे। स्वयं कुछ कष्ट झेलकर भी दूसरों का हित करने का प्रयास करे। परोपकारपूर्ण जीवन जीये, किसी का अपकार न करे। इस प्रकार के सत्कार्यों से वह अपने जीवन को सुफल बना सकता है।

जैन वाङ्मय का एक सुन्दर सूक्त है - 'धम्मो दीवो पइट्ठा य गई सरणमुत्तमं।' जरा और मृत्यु के वेग से बहते हुए प्राणियों के लिए, धर्म द्वीप, प्रतिष्ठा, गति और उत्तम शरण है। इस संसार में जन्म है, बुढ़ापा है, रोग है और मृत्यु है। इन सबसे बच पाना कठिन होता है। यदि संयम प्रधान जीवनशैली हो तो बीमारियों से कुछ बचा भी जा सकता है, किंतु मृत्यु तो अवश्यंभावी है।

जैन दर्शन आत्मा के त्रैकालिक अस्तित्व को स्वीकार करता है। उसका मानना है कि आत्मा अतीत में भी कहीं थी, वर्तमान में है और भविष्य में रहेगी। इस मान्यता के आधार पर मृत्यु के बाद फिर जीवन मिलता है, इसलिए आदमी को भविष्य के बारे में भी चिंतन करना चाहिए। भविष्य भी उसी का अच्छा बनता है जिसका वर्तमान अच्छा होता है। वर्तमान में आदमी जैसा कर्म करता है, भविष्य में उसे वैसा ही फल मिलता है। एकमात्र धर्म ही ऐसा तत्त्व है जो वर्तमान और भावी दोनों को उजला बनाने वाला है।

जो व्यक्ति केवल पदार्थ-सुख में आसक्त रहता है, आत्मिक-सुख की ओर अग्रसर नहीं होता, मानसिक शांति को अधिक महत्व नहीं देता तो समझना चाहिए कि वह बाल है, नादान है। उसने अभी धर्म के मर्म को समझा नहीं है। समझदार आदमी इन छोटी-मोटी वस्तुओं की प्राप्ति से, पदार्थों से खुश नहीं होता। वह तो परम वस्तु को पाकर ही प्रसन्न होता है। एक संत के पास भिखारी गया, बोला - "बाबा ! मुझे कुछ दो।" बाबा बोला, "मेरे पास कुछ नहीं है।" भिखारी - "कुछ तो देना ही होगा।"

बाबा - "मैंने अभी एक पत्थर फेंका था, वह तुम ले लो।" भिखारी ने देखा कि यह तो पारसमणि है। उसने जैसे ही पत्थर को उठाया, मन में विचार आया, लगता है बाबा के पास इससे भी अधिक कीमती वस्तु है। इसलिए बाबा ने इसको फेंका है।

वह तत्काल संन्यासी के पास आया और बोला - "बाबा ! मुझे तो वह वस्तु दें जिसको प्राप्त कर आपने इस पत्थर को फेंका है।"

संन्यासी - "वह वस्तु तो आत्मा की है। परम शांति, परम आनंद और परमज्ञान की है। मुझे वह मिल गयी। तब इस पत्थर से विरक्ति हो गयी।"

धर्म एक ऐसा मार्ग है, जिस पर चलने वाला व्यक्ति उस परम तत्त्व को प्राप्त कर सकता है जिसको पाने के बाद ये बाहर के पदार्थ, बाहर की दुनिया, बाहर के आकर्षण फीके लगने लगते हैं। फिर वह भौतिक प्रलोभनों की चिकनी मिट्टी में कभी नहीं

फिसलता। वह नाना प्रकार के कष्टों को सहकर भी आत्महित के लिए अग्रसर होता है। उसके सामने बाह्य पदार्थ नगण्य होते हैं। वह उनमें आसक्त नहीं होता। उसकी प्रवृत्ति अहिंसा, संयम, ईमानदारी आदि से अनुप्राणित होती है। अपेक्षा है, आदमी के जीवन में यह निष्ठा जाग जाये कि मैं ईमानदारी के रास्ते पर चलूँगा। नैतिकता के पथ पर चलने वाले व्यक्ति के सामने कठिनाइयां भी आ सकती हैं किंतु उन कठिनाइयों को झेलने की क्षमता हो तो आदमी ईमानदारी के रास्ते पर चल सकता है। ईमानदारी, मैत्री, करुणा, अहिंसा ही तो धर्म है। धर्म ही व्यक्ति के लिए शरण और त्राण होता है।

गुरुकुल के शिष्यों ने जिज्ञासा की - "गुरुदेव ! धन, परिवार और धर्म में से कौन सच्चा मित्र है?" गुरु ने सीधा उत्तर न देकर एक कहानी सुनायी- "एक व्यक्ति के तीन मित्र थे। एक बहुत प्रिय, दूसरा मध्यवर्ती और तीसरा उपेक्षित। एक बार वह किसी मुसीबत में फँस गया। सहायता के लिए वह सबसे प्रिय मित्र के पास गया। उसने उससे सहायता करने और राजदरबार तक साथ चलने के लिए कहा। मित्र ने स्पष्ट इनकार कर दिया। फिर वह मध्यवर्ती के पास गया। उसने अन्य प्रकार से सहायता करने का भरोसा दिलाया किंतु राजदरबार तक जाने से इनकार कर दिया। अब वह तीसरे मित्र के पास गया। हालाँकि उससे घनिष्ठता तो कम थी किंतु उसने मित्रता निभायी। वह राजदरबार तक गया और पूरी सहायता करके मित्र को संकट से उबारा।" गुरु ने शिष्यों को समझाते हुए कहा - "वत्स! धन वह है, जिसे परम प्रिय समझा जाता है, पर वह मृत्यु के बाद घर से एक कदम भी आगे नहीं जाता। परिवार वह है, जो यथासंभव सहायता तो करता है किंतु तभी तक करता है जब तक शरीर है। धर्म ही एकमात्र ऐसा मित्र है, जो इहलोक और परलोक में साथ देता है, दुर्गति से बचाता है, चिरस्थायी सुख-शांति प्रदान करता है।" यद्यपि उसकी उपेक्षा की जाती है, पर सच्चा मित्र वही है। इसलिए, आदमी धर्म का आचरण करे। धर्म की शरण को स्वीकार करने वाला व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन को और भविष्य को सुफल बना सकता है।

जीवन का यथार्थ

जैन वाङ्मय का एक सुन्दर सूक्त है - 'अधुवं जीवियं नच्चा' आदमी के जीवन का एक यथार्थ प्रकट किया गया है कि तुम्हारा जीवन अध्रुव है, अशाश्वत है। तुम यह मत सोचो कि मुझे हमेशा यहाँ रहना है। आचारांग वृत्ति में अध्रुव के दो अर्थ प्राप्त होते हैं - अनित्य और चल। अनित्य वह होता है, जिसका नाश अवश्यंभावी होता है और चल वह होता है जो गतिशील होता है। इस संसार में कुछ भी ध्रुव नहीं है। राज्य, धन, परिवार आदि सब कुछ अनित्य हैं। और तो क्या, बड़े-बड़े महापुरुष भी यहाँ स्थायी नहीं रह सके।

शरीर और आत्मा के संयोग से बना यह जीवन अध्रुव है, इस बात को समझने के बाद शाश्वत सिद्धि के मार्ग को भी जानना चाहिए क्योंकि इस दुनिया में अगर दुःख है तो दुःख से मुक्ति का मार्ग भी है। आवश्यकता है उस मार्ग को खोजने और उस पर चलने की। वह मार्ग है- 'विणियट्टेज्ज भोगेसु' भोगों से विनिवृत्ति

यह दुनिया राग के धागे से बंधी हुई है किंतु साथ में विराग भाव, त्याग भाव को भी जोड़ा जाये। समाज में प्रवृत्ति चलती है किंतु निवृत्ति का योग भी आवश्यक होता है। इस प्रकार भोग के साथ योग, मनोरंजन के साथ आत्मरंजन, राग के साथ विराग और प्रवृत्ति के साथ निवृत्ति का योग हो जाये तो आदमी इहलोक और परलोक दोनों को सुखमय बना सकता है।

करना। एक आम आदमी के लिए भोग का सर्वथा त्याग करना कठिन होता है किंतु भोग के साथ योग का संयोग हो जाये, भोग निरंकुश न रहे, उस पर योग का अनुशासन रहे। समाज में मनोरंजन भी चलता है। उसे भी सर्वथा नहीं छोड़ा जा सकता, किंतु मनोरंजन के साथ-साथ आत्मरंजन को भी जोड़ा जाये। कुछ समय आत्म-रमण के लिए भी अर्पित किया जाये। संसार में राग भी चलता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति राग भाव होता है। इस राग के बिना संबंध टिक नहीं पाते। यह दुनिया राग के धागे से बंधी हुई है किंतु साथ में विराग भाव, त्याग भाव को भी जोड़ा जाये। समाज में प्रवृत्ति चलती है किंतु निवृत्ति का योग भी आवश्यक होता है। इस प्रकार भोग के साथ योग, मनोरंजन के साथ आत्मरंजन, राग के साथ विराग और प्रवृत्ति के साथ निवृत्ति का योग हो जाये तो आदमी इहलोक और परलोक दोनों को सुखमय बना सकता है।

आदमी अध्रुवता के सिद्धांत को याद रखे और यह चिंतन करे कि मेरा आयुष्य भी परिमित है। मुझे भी एक दिन यहाँ से जाना होगा। प्रायः आदमी सौ वर्ष से पहले-पहले परभवगामी बन जाता है। हालाँकि मनुष्य की तुलना में देवों का आयुष्य बहुत लम्बा होता है। हजारों-लाखों वर्ष तो क्या, हमारे गणित से भी पार हो चुके आंकड़े पल्योपम, सागरोपम तक का आयुष्य होता है। इनकी तुलना में देखा जाये तो वर्तमान आदमी का आयुष्य बहुत अल्प है। आदमी आयुष्य की सीमा को समझे और क्षण-क्षण जागरूक रहने का प्रयास करे। क्योंकि पता नहीं कब क्या घटित हो जाये? आदमी जाता तो है किसी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए किंतु सड़क पर कोई ऐसी दुर्घटना घट जाती है कि कोई दूसरा कार्यक्रम हो जाता है। इसलिए आदमी स्वयं को स्थायी न माने, राही माने। हर समय जागरूक रहे और अपने जीवन का अंकन करे। इस अध्रुव जीवन में हो सके तो किसी का भला करे किंतु किसी का बुरा न करे। स्वयं कुछ कष्ट झेलकर भी दूसरों का हित करने का प्रयास करे। आदमी परोपकारपूर्ण जीवन जीये, किसी का अपकार न करे। किसी का हित न हो सके तो किसी का अहित भी न करे। इस प्रकार के सत्कार्यों से व्यक्ति अपने जीवन को सुफल बना सकता है। ■

■ जयप्रकाश नारायण ■

समाज सुधार के लिए शुरू किये गये किसी भी आंदोलन की सफलता का सूत्र है उसकी उपादेयता, प्रासंगिकता और स्वीकार्यता। समाज के सर्वमान्य व्यक्ति यदि उस सुधारवादी आंदोलन की उपादेयता और प्रासंगिकता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर लेते हैं तो आमजन भी उस आंदोलन के दर्शन का अनुसरण करने की दिशा में अग्रसर होते हैं। अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभिक काल से ही तात्कालिक समाज के गणमान्य महानुभावों ने इसकी महत्ता को स्वीकार किया तथा इसे अभिव्यक्ति भी दी। इसी कड़ी में प्रस्तुत हैं लोकनायक नाम से जन-जन में प्रिय रहे जयप्रकाश नारायण के उद्‌गार:

अहिंसक समाज-रचना के लिए सुधार आंदोलन

जब तक व्यक्ति नहीं सुधरेगा, तब तक कुछ नहीं होगा। समाज का मूल व्यक्ति ही है। व्यक्ति से समुदाय, समुदाय से समाज का रूप सामने आता है। जैसा मनुष्य रहेगा, वैसा समाज बनेगा और फिर जैसा समाज बनता रहेगा, वैसा-वैसा परिवर्तन मनुष्यों में भी आता रहेगा। अस्तु, सर्वप्रथम व्यक्ति-सुधार पर जोर देना चाहिए।

हम भारतीयों के सम्मुख बहुत-सी पारिवारिक समस्याएं हैं, लेकिन उनसे बढ़कर सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याएं भी हैं। हमें संकीर्ण स्वार्थ से बाहर निकल कर समाज-हित का चिन्तन करना चाहिए। समाज के बाहर हम लोगों के जीवन का कुछ भी अस्तित्व नहीं है। बाहर जो कुछ होता है, उसका असर हमारे ऊपर भी न्यूनाधिक मात्रा में पड़ता है। इसलिए संकीर्ण वृत्ति को छोड़कर व्यापक वृत्ति को अपनाना हमारा प्रमुख कर्त्तव्य हो जाता है। अगर हम अपना दृष्टिकोण व्यापक नहीं रखेंगे तो राष्ट्र की कुछ ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएं, जो घटित हो सकती हैं, हमारा अस्तित्व अवश्य मिटा देंगी। संकीर्ण स्वार्थ के प्रतिरोध में संसार के कोने-कोने में विद्रोहात्मक घटनाएं घटी हैं, जिनका परिणाम बुरा ही रहा है।

हम अपने को धार्मिक कहते हैं, पर धर्माचरण से बिल्कुल दूर रहते हैं। किसी भी धर्म में असत्य, शोषण, हिंसा, पर-पीड़न आदि को उच्च स्थान प्राप्त नहीं है, सभी की दृष्टि में ये सब हेय हैं। जितने धार्मिक सम्प्रदाय हैं, उनके पीछे एक ही भावना है - आनन्द, एक का नहीं, सबका। सम्प्रदायों की अपनी भाषाएं, विचार एवं पथ अवश्य भिन्न-भिन्न हैं, पर जनसाधारण के हित की भावना सबमें श्रेष्ठतम उपदेशित है, पर आज हम अपने इस परम उद्देश्य को भूल गये हैं और शोषण तथा संग्रह को सब कुछ मान बैठे हैं।

इसी परिस्थिति में ही संत आचार्य विनोबा भावे ने अध्यात्म के मूल सिद्धान्तों पर आधारित अपनी क्रान्ति का श्रीगणेश किया है। उनकी क्रान्ति सत्याग्रह, प्रेम और हृदय-परिवर्तन की है। रूस और फ्रांस की क्रान्तियों के समान हिंसक और रक्त-रंजित नहीं, क्योंकि हृदय-परिवर्तन के बजाय शक्ति के बल से किये हुए परिवर्तनों के कारण कोई स्थायित्व नहीं है और असमानता, परतंत्रता आदि भी ज्यों की त्यों मौजूद है। हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि आचार्य विनोबा भावे एवं आचार्य तुलसी जैसी

संसार की सबसे बड़ी आवश्यकता स्थायी शान्ति की स्थापना है। यह उद्देश्य तभी प्राप्त किया जा सकता है, जबकि प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह किसी भी राष्ट्र का नागरिक हो और किसी भी धर्म का अनुयायी हो, अपने मन में दूसरे के प्रति मैत्री की भावना का संचार करे और उसके अनुसार आचरण करे।

दिव्य विभूतियां हमारा पथ-प्रदर्शन कर रही हैं। दोनों महापुरुष मानवता के प्रतिष्ठापन द्वारा समता, सहिष्णुता स्थापित करना चाहते हैं तथा शोषण का अन्त चाहते हैं। भूदान और अणुव्रत आन्दोलन की प्रवृत्तियां ऐसी हैं, जो हृदय-परिवर्तन द्वारा अहिंसक समाज की नव रचना में अग्रसर हो रही हैं; जिसे कायम करने के लिए रूस आदि देश प्रायः असफल ही दीख पड़ते हैं। अपने देश की निर्धनता देखने से पता चलता है कि कितना असीम दुःख समाज में व्याप्त है। निर्धनों के साथ कितना अन्याय हो रहा है। इन्हीं अन्यायों एवं शोषणों के कारण ही शोषित वर्ग के कुछ नवोदित नेता रक्त-रंजित क्रान्ति की दुन्दुभि बजाने तथा शोषकों को धन-विहीन एवं उनकी प्रवृत्तियां समूल नष्ट कर देने के लिए लोगों का आह्वान कर रहे हैं।

अणुव्रत आन्दोलन भी सर्वोदय आन्दोलन का एक सहयोगी ही है। इससे भी देश-विदेश के प्रायः सभी विचारक और नेता परिचित हो ही गये हैं। हमारे आदर्श की ओर बढ़ने के लिए आचार्य तुलसी ने बहुत सुन्दर क्रम रखा है। विनोबाजी और तुलसीजी सभी जाति और वर्ग के लिए हैं, दोनों सबका भला चाहते हैं। आचार्य तुलसीजी से बम्बई में वार्तालाप करने पर उनके उच्च उद्देश्यों की झलक मिली। उनका कहना है कि जब सारी हिंसक शक्तियां एकत्रित हो सकती हैं, तब अहिंसक शक्तियां भी एक हो सकती हैं और सबके सामूहिक प्रयास से अवश्य ही अहिंसक समाज की कल्पना पूरी हो सकेगी। सबको मिलकर काम करने में शीघ्र सफलता मिलेगी।

हमारे सामने यह प्रश्न अवश्य हो सकता है कि किस पद्धति के द्वारा सबका हित हो सकता है, शोषण मिट सकता है? क्या सरकार शोषण को मिटा सकती है? नहीं, बिल्कुल असम्भव है। यह जनता कर सकती है। मनुष्य की आन्तरिक शक्ति के द्वारा यह कार्य पूरा हो सकता है। संविधान द्वारा सर्वोदय असम्भव है। जैसा कि आचार्य तुलसी कहा करते हैं कि व्यक्ति-व्यक्ति से समाज-परिवर्तन होगा और जब तक व्यक्ति नहीं सुधरेगा, तब तक कुछ नहीं होगा। ध्यान से देखा जाये तो उनकी इस वाणी में कितना तत्त्व भरा पड़ा है। समाज का मूल व्यक्ति ही है। व्यक्ति से समुदाय, समुदाय से समाज का रूप सामने आता है। समाज तो प्रतिबिम्ब है। जैसा मनुष्य रहेगा, वैसा समाज बनेगा और फिर जैसा समाज बनता रहेगा, वैसा-वैसा परिवर्तन मनुष्यों में भी आता रहेगा। अस्तु, सर्वप्रथम व्यक्ति-सुधार पर जोर देना चाहिए।

आचार्य तुलसी यह भी कहते हैं कि सब अपनी-अपनी आत्म-शुद्धि करें। यह और अच्छा है। अगर सब स्वतः आत्म-शुद्धि कर लें; तो क्रान्ति की क्या आवश्यकता है? महात्मा गांधी भी समाज-सुधार के पहले व्यक्ति-सुधार पर जोर देते रहे हैं। साम्यवादी आदि क्रान्तियां बाह्य सुधार की द्योतक हैं, किंतु जब तक आन्तरिक सुधार नहीं हुआ, तब तक कुछ नहीं हुआ, बाह्य सुधार तो क्षणिक और सामयिक कहलाएगा। वह आन्तरिक सुधार के समान शाश्वत कहाँ? अगर हम आन्तरिक सुधार को प्राथमिकता नहीं देंगे तो हमारा कार्य अधूरा ही रह जाएगा। रूस, अमेरिका, फ्रांस आदि देशों में आज भी असमानता, परतंत्रता, असहिष्णुता, भ्रातृत्वहीनता, पूँजीवादिता आदि किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान हैं। विचार-स्वातंत्र्य की आज भी सुविधा नहीं। एक तरह से अधिनायकवाद का बोलबाला ही है। वैतनिक असमानता बहुत है। अस्तु, शक्ति और हिंसा पर आधारित क्रान्ति से उद्देश्य पूर्ति नहीं, वह तो एकमात्र हृदय-परिवर्तन पर आधारित है। इसलिए हम लोगों को चाहिए कि उक्त देशों के समान दुर्दिन आने से बचाने तथा समाज में उथल-पुथल न आने देने के लिए उचित मात्रा में त्याग और निःस्वार्थ भावना को जीवन में उतारें। महात्माजी ने भी व्यक्ति को केन्द्र मानकर उसके सुधार पर जोर दिया है और राजतंत्र के स्थान पर लोकतंत्र को स्थापित करने की अपनी नेक सूझ दी है।

राजनीति और कानून की चर्चा विशेष हुआ करती है। आचार्य श्री तुलसी कहते हैं कि क्या कानून किसी स्वार्थी को निःस्वार्थी या पर-स्वार्थी बना सकता है? कानून तो दिवा मात्र है। इसलिए राजनीति और कानून के परे आचार्य विनोबा और आचार्य तुलसी के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। जिस क्रान्ति से हृदय और विचारों में परिवर्तन नहीं आया, वह क्रान्ति नहीं। हिंसा पर

सम्पत्तिदान और अणुव्रत आंदेलन की भी भावना एक ही है। एक समाज के हक को उसे दे देने के लिए बाध्य करता है, प्रेरित करता है या उसे सीख देता है तथा दूसरा संग्रह को ही त्याज्य बताता है और जो कुछ है उसे दान स्वरूप देने को नहीं, बल्कि त्याग स्वरूप, समाज के लिए छोड़ देने की भावना प्रदर्शित करता है।

आधारित क्रान्ति से हृदय-परिवर्तन कभी सम्भव नहीं। उसके लिए तो प्रेम और सद्भावना का सहारा लेना होगा।

जब-जब समाज में शिथिलाचार हुआ, तब-तब अवतारों एवं महापुरुषों द्वारा विचारों में क्रान्ति लायी गयी। धर्म और नीति से अधर्म और अनीति को निकाल फेंका गया। समाज का सुधार किया गया। धर्म और नीति समाज के अनुकूल बनायी गयी। समाज में एक नया विपर्यय हुआ। धार्मिक, सांसारिक और सामाजिक जीवन के बीच की दीवार तोड़ी गयी। महात्मा गांधी, विनोबा भावे और आचार्य तुलसी भी ऐसी ही अध्यात्मनिष्ठ क्रान्ति की उद्घोषणा लिये हैं। अनावश्यक एवं समाज हित के लिए घातक रूढ़ियों का अन्त करना, इन्होंने भी आवश्यक समझा। भगवान बुद्ध का 'धर्मचक्र प्रवर्तन' या धार्मिक क्रान्ति भी सर्वोदय या समाज-सुधार का दिशा-संकेत था। अणुव्रत आंदोलन भी नैतिक क्रान्ति का एक चिर प्रतीक्षित चरण है।

ऐसे संगठित रूप से काम होना चाहिए, जिससे सारी समस्याएं साथ-साथ हल हो जाएं। भूदान-आंदोलन का कार्य सिर्फ भूमिहीनों को भूमि बांटने तक ही नहीं, नये समाज का रूप बनाने का नैमेत्तिक कार्य है। भूमि की समस्या तक ही हल करना इसका क्षेत्र या अभिप्राय नहीं। जिस तरह महात्मा गांधी का 1930 का 'नमक आंदोलन' नमक तक ही सीमित नहीं रहा, वह तो स्वतंत्रता की माँग का एक महत्वपूर्ण आंदोलन था। आततायियों को भगाने, उनके अत्याचार को सामने लाने तथा परतंत्र भारतीयों की भीरुता को भगाकर उनमें आत्मबल लाने तथा स्वतंत्रता के मार्ग पर अग्रसर होने का एक पथ था। भूदान आंदोलन भी उसी तरह महान है। हमारा नारा सर्वोदय का है। एकांगी नहीं बल्कि सर्वांगी है।

सम्पत्तिदान और अणुव्रत आंदेलन की भी भावना एक ही है। एक समाज के हक को उसे दे देने के लिए बाध्य करता है, प्रेरित करता है या उसे सीख देता है तथा दूसरा संग्रह को ही त्याज्य बताता है और जो कुछ है उसे दान स्वरूप देने को नहीं, बल्कि त्याग स्वरूप, समाज के लिए छोड़ देने की भावना प्रदर्शित करता है। अणुव्रत आंदोलन परिग्रह मात्र को पाप का मूल मानता है। इसके अनुसार संग्रह ही हिंसा की जड़ है। जहाँ संग्रह है, वहाँ शोषण और हिंसा अपने आप मौजूद हैं। ■

नकारात्मक विचारों से पाएं मुक्ति

■ किरण बाला, मंदसौर ■

हमारे दिमाग में रोजाना हजारों विचार आते हैं। विचारों की यह शृंखला अनवरत जारी रहती है। यहाँ तक कि नींद में भी सपनों के माध्यम से दिमाग में विचार आते रहते हैं। विडम्बना यह है कि जितने भी विचार आते हैं, उनमें 80 प्रतिशत नकारात्मक ही होते हैं। ये नकारात्मक विचार हमारी सोच, दिनचर्या, स्वास्थ्य और जीवन को प्रभावित करते हैं और सफलता में सबसे बड़ा रोड़ा होते हैं। इनके चलते व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं कर पाता और प्रगति की दौड़ में पीछे रह जाता है।

हमारे जीवन में तनाव के क्षण आते रहते हैं, जिनसे जूझना पड़ता है। तनाव की वजह चाहे जो हो, परिणाम एक ही होता है नकारात्मक विचारों का जन्म। यदि हमें अपने जीवन को सहज, सामान्य, सुखी तथा समृद्ध बनाना है तो नकारात्मक विचारों को त्यागना ही होगा। सकारात्मक विचारों के लिए दिमाग में जगह बनानी होगी। तभी नकारात्मक विचारों से मुक्त हुआ जा सकता है। महज चंद मिनटों का ध्यान या मेडिटेशन न केवल तनाव दूर कर सकता है, अपितु नकारात्मक विचारों की शृंखला को तोड़कर दिमाग में सकारात्मक विचारों का सृजन कर सकता है। इससे जीवन में बदलाव दिखायी देगा।

रोजमर्रा की जिंदगी में हम कई बार नकारात्मक विचारों के भंवर में फँस जाते हैं। यह इस हद तक होता है कि हम उन्हीं के बारे में सोचते रहते हैं और ये हमारे मूड को प्रभावित करने लगते हैं। धीरे-धीरे ये नकारात्मक विचार हमारी मानसिक सेहत पर असर डालने लगते हैं। विचारों पर हमारी संगति का भी असर पड़ता है। इसलिए सकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों की ही संगति करनी चाहिए।

सकारात्मक सोच हमारे जीवन में बदलाव ला सकती है। अतः शुभ सोचें। कभी किसी का बुरा न सोचें। जीओ और जीने दो के सिद्धांत पर चलें। प्राणी मात्र से प्रेम करें। अलगाव की बात मन में न लाएं। फिर देखिए, दुनिया कितनी हसीन और खुशहाल नजर आती है।

■ डॉ. बसन्ती लाल बाबेल, लावासरदारगढ़ ■

आखिर जीत गयी मानवता

यह सार्वभौम सत्य है कि प्रेम, स्नेह, सौहार्द, विनम्रता, इंसानियत एवं मानवता से पत्थर दिल भी पिघल जाता है। ऐसा ही एक प्रसंग जयपुर का है, जब मैं वहाँ अपर जिला न्यायाधीश था। दो भाइयों में सम्पत्ति के विभाजन को लेकर लम्बे समय से विवाद चल रहा था। वे आपस में समझने को तैयार नहीं थे। एक दिन की बात है। दोनों भाई तारीख पेशी पर अदालत में आये हुए थे। जब सुनवाई के लिए आवाज लगी तो बड़ा भाई अदालत के कक्ष में प्रवेश कर गया। उसने अपने जूते अदालत कक्ष के बाहर खोल दिये थे।

मई-जून का महीना था। तेज धूप थी। जूते धूप में पड़े थे। तभी पीछे से छोटा भाई अदालत कक्ष में प्रवेश करने लगा। उसने देखा कि बड़े भाई के जूते धूप में पड़े हैं। उसने अपने हाथों से दोनों जूतों को उठाकर छाया में रख दिया। बड़े भाई ने उसे देख लिया। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि छोटा भाई उसके जूतों को अपने हाथों से उठाकर छाया में रख रहा है। उसका मन पसीज गया। सोचा - छोटे भाई के मन में उसके प्रति कितनी श्रद्धा एवं चिन्ता है, मैं ख्वामख्वाह ही यह मुकदमा लड़ रहा हूँ। उसने अदालत से प्रार्थना की कि वह मुकदमा नहीं लड़ना चाहता है। उसने मुकदमा उठा लिया। दोनों भाइयों में विवाद समाप्त हो गया। यह सब भाई के प्रति प्रेम, स्नेह, श्रद्धा एवं विनम्रता का परिणाम था।

ऐसा ही एक और प्रसंग चित्तौड़गढ़ का है, जब मैं वहाँ मुंसिफ मजिस्ट्रेट था। वहाँ भी दो भाइयों के बीच संपत्ति के विभाजन को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा था। छोटा भाई थोड़ा चालाक एवं बदमिजाज था। मैंने उन दोनों भाइयों को खूब समझाया और आपस में सुलह कर लेने को कहा। बड़ा भाई तो मान गया, लेकिन छोटा भाई नहीं माना। आखिर दोनों के बीच संपत्ति का बँटवारा कर दिया गया। दोनों भाइयों में संपत्ति को बराबर-बराबर बाँट दिया, लेकिन मकान में शौचालय एक ही था। इस शौचालय पर दोनों भाइयों का हक-हकूक रखा गया। वे दोनों उसका उपयोग कर सकते थे।

कुछ ही दिनों बाद बड़ा भाई अदालत में आया और कहने लगा - "जज साहब, गजब हो गया। छोटा भाई शौचालय का एक किवाड़ उठाकर ले गया। इससे शौचालय का उपयोग असंभव हो गया।" मैंने छोटे भाई को अदालत में बुलाया और पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया? उसने कहा - "साहब, शौचालय दोनों भाइयों की शामिलाती है। शौचालय के दो किवाड़ हैं। एक मेरा और दूसरा बड़े भाई का। मैं अपना किवाड़ उठाकर ले गया, इसमें क्या हर्ज है।" मैंने समझा-बुझाकर उस किवाड़ को वापस लगवाया, पर छोटा भाई कहाँ मानने वाला था। उसने फिर एक शैतानी की। वह शौचालय के दो पायदानों में से एक पायदान उठाकर ले गया, जिससे शौचालय फिर अनुपयोगी हो गया। छोटे भाई का वही जवाब था, "एक पायदान मेरा और एक पायदान बड़े भाई का। मैं अपना पायदान उठाकर ले गया।" इस बार मैंने थोड़ी सख्ती बरती और उसके विरुद्ध न्यायालय के अवमानना की कार्यवाही अमल में लाने की सोची। उसे सिविल जेल भेजने की तैयारी थी। इसी बीच बड़े भाई का मन पसीज गया। उसने कहा - "साहब, इसे जेल मत भेजो, यह पूरा शौचालय ही उसके हिस्से में कर दो ताकि सारा विवाद ही समाप्त हो जाये।"

बड़े भाई का यह रुख देखकर छोटा भाई रोने लग गया। अपने किये हुए पर पश्चाताप करने लगा। उसने बड़े भाई से माफी माँगी और भविष्य में ऐसी हरकतें नहीं करने का आश्वासन दिया। सहृदयता, उदारता एवं समर्पण का भाव हो तो अनेक कष्टों से बचा जा सकता है। ■

डॉ. लोकेन्द्र सिंह कोट

माटी की महिमा

अहंकार से मुक्त रहने वाली मिट्टी कहती है - अहंकार को छोड़कर देखो, सब आपके हो जाएंगे। जिसका जो भी अवगुण होता है, उसे मिट्टी अपने अंदर समा लेती है और भर देती है गन्ने में मिठास, फूलों में पराग, फलों में रस और समय आने पर नीम, करेले में कड़वाहट ताकि हम तंदुरुस्त भी रह सकें।

मनुष्य का अस्तित्व पंच तत्त्वों का मेल है और उनमें मिट्टी भी एक है। मिट्टी में इतने गुण समाहित हैं जितने एक श्रेष्ठ मनुष्य में होने चाहिए। मिट्टी के पास ही है स्वीकार करने का भाव। अच्छा, बुरा जो भी है उसे सहजता से स्वीकार करना। मिट्टी कभी नहीं कहती कि तू खराब है, इसलिए तेरे काम नहीं आऊँगी, तू अच्छा है, इसलिए तेरे साथ रहूँगी। दूसरा है देने का भाव। इस मिट्टी में हम एक मुट्ठी दाने डालते हैं और यह हमारे भंडार भर देती है। दान करना कोई मिट्टी से सीखे, निःस्वार्थ केवल देने का भाव और वह भी अनेक गुना करके।

तीसरा भाव है विनम्रता। मिट्टी को जो आकार दिया जाता है, वह बन जाती है - बर्तन, दीये, मटके आदि...पता नहीं किन-किन आकारों में ढलती आयी है मिट्टी। इतनी विनम्र कि अनगिनत स्वरूपों में घर-घर में मौजूद है। चौथा भाव है संघर्ष का। मिट्टी कितनी भी विपरीत परिस्थिति में अपने आपको बनाये रखती है, पहाड़, मैदान कहीं पर भी अपना सर्वस्व देकर मौका देती है पेड़-पौधों को, नवजीवन को, सूखी-पथरीली जगह को हरियाली में मिट्टी ही बदलती है।

पाँचवां भाव है अहंकार से मुक्त। अमीर-गरीब, मान-अपमान, तेरा-मेरा जैसे कई भावों से परे होकर जस की तस अपने में रमी मिट्टी सभी को सहज करती है और कहती है अहंकार को छोड़कर देखो, सब आपके हो जाते हैं। जिसका जो भी अवगुण होता है, उसे मिट्टी अपने अंदर समा लेती है और भर देती है गन्ने में मिठास, फूलों में पराग, फलों में रस और समय आने पर नीम, करेले में कड़वाहट ताकि हम तंदुरुस्त भी रह सकें।

एक समय था जब घरों में मिट्टी की ही भरमार हुआ करती थी। मिट्टी के घर अपेक्षाकृत बेहतर वातानुकूलन करते थे, गर्मी में ठंडे और शीत में गरम। वास्तु के हिसाब से भी ये बेहतरीन माने जाते थे। फिर घरों के बर्तन, पानी का घड़ा, लोटा, रोटी के तवे, सब्जी बनाने की डेकची, कड़छी, दही जमाने के लिए दोणी और भी बहुत कुछ था जिससे न केवल सेहत बेहतर रहती थी वरन मानसिक शांति और आवश्यक संतोष बना रहता था, इसलिए जीवन भी सहज था।

आज मिट्टी से कटने के परिणामस्वरूप उत्पन्न असहजता ने हमारे अंदर उथल-पुथल पैदा कर दी है और एक अनजानी जल्दबाजी हमारे जीवन का हिस्सा बन गयी है। अंदर एक कोलाहल है जो बार-बार हमें उनींदा बनाये रखता है। गुस्सा, चिड़चिड़ापन हमारे जीवन में कब शामिल हो गया, हमें पता भी नहीं चला।

मिट्टी से जुड़ना यानी सहजता के पास रहना। जो वाइब्रेशन जमीन से मिलते हैं वे हमारी सकारात्मकता के साथ, बुद्धि, विवेक, धैर्य जो जीवन के आवश्यक तत्त्व हैं, उनके घनत्व को कई गुना कर देते हैं, इसलिए जमीन पर सोना, जमीन पर बैठकर खाना ज्यादा फायदेमंद होता है। अपने अंश के साथ रहना हमें उससे ही नहीं, सीधे ईश्वर से जुड़ने में भी मदद करता है।

ध्यान, साधना, योग के लिए ऐसे कक्ष बेहतरीन माने जाते हैं। विज्ञान कहता है कि मिट्टी का संबंध हमारी सेहत से सीधा जुड़ा है और यदि हमने मिट्टी से दूरी बनाने का प्रयास किया तो वह सीधे-सीधे हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर असर डालती है। शेष अस्वस्थता हमारे शरीर को ही खराब करती है लेकिन मानसिक अस्वस्थता पूरे परिवार, समाज, देश को खराब कर सकती है।

खरबों बैक्टीरिया से भरा एक और पारिस्थितिकी तंत्र है जिसके बिना भी हम शायद जीवित नहीं रह सकते, और वह है मिट्टी। हमारी आंत का स्वास्थ्य हमारे पाचन तंत्र में जीने वाले खरबों बैक्टीरिया पर निर्भर करता है। वे हमारे संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। वास्तव में, हम शायद उनके बिना जीवित नहीं रह सकते। वहीं जलवायु परिवर्तन और पोषक तत्त्वों की साइकिलिंग जैसी चीजों के लिए मिट्टी बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है लेकिन यह वास्तव में हमारी आंत की सेहत के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि मिट्टी में पैदा होने वाले पौधों से ही हमारे पेट के बैक्टीरिया को पसंदीदा भोजन मिलता है। उत्पादन नहीं कर पाएंगे।

सीधी-सी बात है मिट्टी नहीं तो पेड़-पौधे नहीं और पेड़-पौधे नहीं तो आंत के लिए पर्याप्त भोजन नहीं और नतीजा हमारी बुरी सेहत। आंत और हमारे मस्तिष्क के बीच यह दोतरफा संचार है। वास्तव में हमारी आंत काफी अनोखी है और यह हमारे मस्तिष्क के निर्देशों के बिना काम करती है, इसीलिए इसे दूसरा मस्तिष्क कहा जाता है। इसका संबंध एंटरिक नर्वस सिस्टम से भी है, जहाँ करोड़ों नसें वास्तव में पोषण ग्रहण करती हैं और आपस में संपर्क करती हैं और आंत से उसका काम करवाती हैं, यानी पाचन। पौधों से मिले भोजन को ज्यादा खाना न सिर्फ हमारी आंत के बैक्टीरिया के लिए, बल्कि हमारी मानसिक सेहत के लिए भी अच्छा है। इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि अगर हम अपनी आंत की सेहत को सुधारना चाहते हैं, तो हमें अपनी मिट्टी पर भी ध्यान देना चाहिए।

नब्बे के दशक या उसके पहले की पीढ़ी बगैर पूरे समय टीवी, मोबाइल के जमीन से ज्यादा जुड़ी थी। आज की ज्यादातर डिजिटल जेनरेशन को कभी-कभार ही मिट्टी से वास्ता पड़ता होगा। जबकि उनकी पिछली पीढ़ी बचपन में मिट्टी में ही खेलती थी। खेलकर जब घर लौटते थे, पूरा शरीर, कपड़े और यहाँ तक कि हमारे मुँह में भी मिट्टी, रेत और धूल भरी रहती थी। आजकल के पैरेंट्स अपने बच्चों को धूल लगने ही नहीं देते। यहाँ तक कि बाहर निकलते और घर लौटते ही साबुन और सैनिटाइजर से हाथ साफ करवाते हैं। लेकिन आपको जानकर आश्चर्य होगा कि हर वक्त सफाई से रखे जाने वाले बच्चे धूल, मिट्टी में लोटने वाले बच्चों की तुलना में कहीं ज्यादा बीमार पड़ते हैं।

वैज्ञानिक बताते हैं कि मिट्टी में पाये जाने वाले कीटाणु आपके नन्हे-मुन्ने के इम्यून सिस्टम के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के प्रोफेसर गिल्बर्ट बताते हैं, "पैरेंट्स अपने बच्चों को जरूरत से ज्यादा साफ-सफाई से पालने की कोशिश करते हैं। वे सोचते हैं कि ये जर्म्स बच्चों के लिए खतरनाक हैं जबकि सच्चाई इसके विपरीत होती है। ये कीटाणु बच्चों में बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ाते हैं जो जीवन भर उनके काम आती है।"

मिट्टी से जुड़ना यानी सहजता के पास रहना। जो वाइब्रेशन जमीन से मिलते हैं वे हमारी सकारात्मकता के साथ, बुद्धि, विवेक, धैर्य जो जीवन के आवश्यक तत्त्व हैं, उनके घनत्व को कई गुना कर देते हैं, इसलिए जमीन पर सोना, जमीन पर बैठकर खाना ज्यादा फायदेमंद होता है। अपने अंश के साथ रहना हमें उससे ही नहीं, सीधे ईश्वर से जुड़ने में भी मदद करता है।

गिरिडीह निवासी लेखक झारखंड सरकार में जिला सांख्यिकी पदाधिकारी के दायित्व निर्वहन के साथ ही साहित्य सृजन में संलग्न हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

"सुधार की शुभ शुरुआत का मुख्य बिंदु है अणुव्रत"

डॉ. मोनिका शर्मा

सादगी हो शादी समारोहों का शृंगार

सादगी से परिपूर्ण तथा दिखावे से दूर हों तो वैवाहिक आयोजनों की सहजता समग्र समाज को दिशा दिखाने वाली होती है। जमीनी सोच से जुड़े ऐसे आयोजन सगे-संबंधियों से लेकर अपरिचितों तक को सार्थक संदेश देने वाले अवसर बन जाते हैं। इसलिए आवश्यक है कि वैवाहिक आयोजनों को औपचारिकता और अपव्यय से बचाकर अपनेपन से सींचा जाये।

वैवाहिक आयोजन किसी भी समाज के सांस्कृतिक रंग और परम्परागत जीवनशैली की झांकी होते हैं। रिवाजों को सहेजने का माध्यम बनते हैं। सामाजिक मेलजोल और पारिवारिक जुड़ाव को पोषण देते हैं। हमारी संस्कृति में विवाह को सोलह संस्कारों में से एक माना गया है। तभी तो यह गठजोड़ आजीवन साथ बिताने वाला रिश्ता भर नहीं, आत्मिक संबंध भी कहा गया है। न केवल अलग-अलग पृष्ठभूमि और परिवारों में पले-बढ़े दो मन इस अटूट बंधन में बंधकर सदा के लिए एक हो जाते हैं बल्कि नये संबंध के साथ जुड़ने वाले दूसरे संबंधों को भी सम्मान और स्नेह से संभालने और सहेजने की सोच हमारी सामाजिक-पारिवारिक व्यवस्था का सम्बल रही है।

सादगी से परिपूर्ण तथा दिखावे से दूर हों तो वैवाहिक आयोजनों की सहजता समग्र समाज को दिशा दिखाने वाली होती है। जमीनी सोच से जुड़े ऐसे आयोजन सगे-संबंधियों से लेकर अपरिचितों तक को सार्थक संदेश देने वाले अवसर बन जाते हैं। बावजूद इसके राजनीति, सिनेमा और व्यवसाय जैसे लगभग सभी क्षेत्रों से जुड़े चर्चित चेहरों के साथ ही आम परिवारों में भी वैवाहिक समारोहों में बेवजह के खर्चे करना हमारे यहाँ आम बात है। मानवीय मोर्चे पर यह बेहद तकलीफदेह है कि धन का यह दिखावा समाज को आर्थिक असमानता और विकृत प्रपंचों की ओर ढकेलता है।

एक समय था जब शादी समारोह समाज को जोड़ने वाले परम्परागत आयोजन भर हुआ करते थे। परिजनों और सगे-संबंधियों से घिरे दूल्हा-दुल्हन और हँसते-खिलखिलाते परिजन। धीरे-धीरे रीति-रिवाज की जगह एक अजब-गजब धूम-धड़ाके और सहज जुड़ाव का स्थान दिखावटी-बनावटी रस्मों ने ले लिया। परिणामस्वरूप, रिश्तों में औपचारिकता और वैभव के प्रदर्शन को और उकसावा मिला। सगे-संबंधियों के मेलजोल को पोसने वाले आयोजन महँगी सजावटों और कृत्रिम बर्ताव तक सिमट गये। किसी क्षेत्र विशेष के चर्चित चेहरे ने विदेशी धरती पर भव्य आयोजन कर चर्चा में रहने का रास्ता चुना तो किसी ने देश में ही आर्थिक समृद्धि का जमकर दिखावा किया। यहाँ तक कि जन-प्रतिनिधियों के परिवार में होने वाले वैवाहिक समारोहों में भी पैसे को पानी की तरह बहाये जाने के वाकये सामने आये। कहना गलत नहीं होगा कि ऐसे समारोह समग्र समाज को मुँह चिढ़ाते हुए तो लगते ही हैं, दिशाहीन भी करते हैं तथा सामाजिक-पारिवारिक विखंडन से लेकर व्यक्तिगत जीवन को ऋण के बोझ तले दबाने वाले साबित होते हैं।

बिखरते सामाजिक मूल्यों और रिश्तों के इस परिवेश में आवश्यक है कि रीति-रिवाज और आपसी मेलजोल का पुराना भाव फिर लौटे। वैवाहिक आयोजनों में दिखावे की चकाचौंध के बजाय आपसी स्नेह और सामाजिक-पारिवारिक सहयोग का भाव पुनः स्थापित हो।

चिंतनीय है कि बीते कुछ बरसों में शादियों में अपव्यय को सामाजिक और आर्थिक प्रतिष्ठा से इस कदर जोड़ दिया गया है कि किफायती वैवाहिक समारोह आयोजित करने का विचार ही लोगों को कहीं पीछे छूट जाने की अनुभूति करवाता है। अनचीन्हा-सा सामाजिक मनोवैज्ञानिक दबाव समय के साथ इस मानसिकता को कम करने के बजाय और बढ़ावा ही दे रहा है। एक ओर चर्चित घरानों से लेकर आम भारतीय परिवारों तक में 'डेस्टिनेशन वेडिंग' का चलन बढ़ा है तो दूसरी ओर सज-धज के खर्चों की बढ़ोतरी विस्तार पाती दिखावे की सोच का उदाहरण बन रही है।

वैवाहिक आयोजनों से जुड़ी ऐसी बातें समारोह स्थल के चुनाव को लेकर व्यक्तिगत रुचि और सुविधा भर की लगती हैं, पर इनका प्रभाव समग्र सामाजिक व्यवस्था पर पड़ रहा है। एक दूजे की बराबरी करने का अनचाहा-सा दबाव हो या विशेष आयोजन कर सोशल मीडिया और समाचारों तक, हर ओर छा जाने की मनोवृत्ति। परिस्थितियाँ ऐसी बन गयी हैं कि आम परिवार भी अपनी हैसियत से कहीं ज्यादा धन शादी समारोहों पर लुटाने लगे हैं। भारत के हर वर्ग में जिस कदर शादी-ब्याह महँगे होते जा रहे हैं, दहेज का चलन कम होने बजाय बढ़ता जा रहा है। पीड़ादायी पक्ष यह भी है कि बढ़ती चकाचौंध में जुड़ते बंधन भावनाओं और भावी निबाह के मोर्चे पर बहुत पीछे छूट रहे हैं।

ऐसे में मनोवैज्ञानिक दबाव और सामाजिक दबदबे को पोसने का माध्यम बन चुके वैवाहिक समारोहों के बीच किसी आयोजन का परम्परागत रूप देखने को मिले तो इसे भी सुखद ही कहा जाएगा। बीते दिनों चर्चित अभिनेता रणदीप हुड्डा और लिन लैशराम की परम्परागत रीति-रिवाज से हुई शादी में अपनी जड़ों से जुड़े रहने और परम्पराओं को पोसने का भाव स्पष्ट नजर आया। चमक-दमक और दिखावे से परे मणिपुर की सांस्कृतिक परम्परा के रंग समेटे इस शादी की तस्वीरों में दिखते भाव-चाव आम लोगों को बहुत मोहक लगे और चर्चा का विषय बने। सामान्य तौर-तरीकों से हुआ यह आयोजन विवाह योग्य युवक-युवतियों और उनके परिजनों को एक सार्थक संदेश भी दे गया।

जड़ों की ओर वापसी की यह सोच सराहनीय और अनुकरणीय है, क्योंकि जाने-माने परिवारों की शादियों में किये जाने वाले अनुचित खर्च ने आम परिवारों की मुश्किलें काफी बढ़ा दी हैं। ऐसे आयोजनों के माध्यम से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समाज के लोगों में गैर-बराबरी और हीनता की सोच भी बढ़ी है। पहले से ही आर्थिक विषमता के हालात से जूझते हमारे देश में वैवाहिक इंतजामों के खर्चे आम परिवारों के लिए बड़ी परेशानी बन गये हैं।

बिखरते सामाजिक मूल्यों और रिश्तों के इस परिवेश में आवश्यक है कि रीति-रिवाज और आपसी मेलजोल का पुराना भाव फिर लौटे। वैवाहिक आयोजनों में दिखावे की चकाचौंध के बजाय आपसी स्नेह और सामाजिक-पारिवारिक सहयोग का भाव पुनः स्थापित हो। हमारे देश में शादी का मौसम पारिवारिक संबंधों के लिए संजीवनी बनकर आता है। देश-विदेश में बसे स्वजन-प्रियजन व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर इन आयोजनों में शामिल होते हैं। नयी पीढ़ी का अपने रिश्ते-नातों से परिचय होता है। वहीं घर-परिवार की बड़ी पीढ़ी के मन को यह जुड़ाव आश्वस्ति भरा सुख देता है। ऐसा उत्सवीय मेलजोल सांस्कृतिक रंगों को सहेजने का माध्यम बन जाता है। इसीलिए आवश्यक है कि आत्ममुग्धता और अकेलेपन को विस्तार देती संपन्नता की चमक-दमक के बजाय वैवाहिक आयोजनों को सहज सामाजिकता के भाव से जोड़ा जाये। औपचारिकता और अपव्यय से बचाकर अपनेपन से सींचा जाये।

मुम्बई में रहने वाली लेखिका ने अर्थशास्त्र एवं पत्रकारिता और जनसंचार में स्नातकोत्तर के साथ ही सामाजिक विज्ञापनों से जुड़े विषय पर शोधकार्य किया है। सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विषयों पर नियमित लेखन।

"अणुव्रत नैतिक एवं सांस्कृतिक उद्धार की दिशा में पहला कदम है"

प्रकाश तातेड़

संकल्पित बचपन नशामुक्त जीवन

बालकों को घर-परिवार व समाज में जैसा परिवेश मिलता है, उनका नैतिक व चारित्रिक विकास उसी के अनुरूप होता है। जिन घरों में सदाचार, शिष्टता व धार्मिक मूल्यों की बहुलता होती है, वहाँ बालक में वैसे ही संस्कार अंकुरित होते हैं। बालक अपने माता-पिता, शिक्षक व मित्रों की वाणी व आचरण से भी सीखता है और उसे अपनाने लगता है।

मानव जीवन को प्रायः तीन भागों में बाँटा जाता है - बाल्यकाल, युवावस्था एवं वृद्धावस्था। जन्म से 12 वर्ष की उम्र को बचपन की संज्ञा दी गयी है। इसे जीवन का स्वर्णकाल भी कहा जाता है। बाल्यावस्था में बालक गीली मिट्टी के समान होता है जिसे मनचाहे आकार में ढाला जा सकता है। यही कारण है कि मनोवैज्ञानिक संस्कार निर्माण की दृष्टि से बचपन को सबसे अधिक उपयुक्त समय मानते हैं। बालक इस अवधि में जो अच्छी आदतें सीख लेता है, वे जीवन भर उससे जुड़ी रहती हैं। संक्षेप में बचपन को व्यक्तित्व निर्माण की नींव कहा जा सकता है।

बालकों को घर-परिवार व समाज में जैसा परिवेश मिलता है, जैसी संगति मिलती है, उनका नैतिक व चारित्रिक विकास उसी के अनुरूप होता है। जिन घरों में सदाचार, शिष्टता व धार्मिक मूल्यों की बहुलता होती है, वहाँ बालक में वैसे ही संस्कार अंकुरित होते हैं। बालक अपने माता-पिता, शिक्षक व मित्रों की वाणी व आचरण से भी सीखता है और उसे जीवन में अपनाने लगता है।

आचार्य तुलसी द्वारा प्रतिपादित अणुव्रत आचार संहिता में हर वर्ग के लिए कुछ साधारण नियम, व्रत या संकल्प हैं जिन्हें व्यक्ति मन से स्वीकारे तो जीवन सुखमय बना रहता है। विद्यार्थी अणुव्रत में बालकों के लिए निम्नलिखित नियम हैं :-

- मैं परीक्षा में अवैध उपायों का सहारा नहीं लूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं अश्लील शब्दों का प्रयोग नहीं करूँगा, अश्लील साहित्य नहीं पढ़ूँगा तथा अश्लील चलचित्र नहीं देखूँगा।
- मैं मादक तथा नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं चुनाव के सम्बन्ध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं दहेज से अनुबंधित एवं प्रदर्शन से युक्त विवाह नहीं करूँगा और न भाग लूँगा।
- मैं बड़े वृक्ष नहीं काटूँगा और प्रदूषण नहीं फैलाऊँगा।

जीवन निर्माण की दृष्टि से ये सारे नियम आवश्यक हैं। फिर भी व्यक्तिगत स्वास्थ्य, पारिवारिक सद्भाव एवं सामाजिक सम्मान हेतु नशामुक्त जीवन अनिवार्य है। निर्मल पारिवारिक परिवेश में यदि बच्चे नशामुक्त जीवन का संकल्प धारण करें और उसे प्रयत्नपूर्वक निभाएँ तो बचपन का यह संकल्प-सोपान जीवन के शिखर पर आरोहण में अवश्य ही फलदायक सिद्ध होता है।

नशे के कारण जो भी हों, सभी इस बात पर एकमत हैं कि नशे से जीवन का नाश होता है। अतः हमें इस विकराल समस्या के निवारण हेतु व्यावहारिक उपायों को अपनाना चाहिए। अभिभावकों की सजगता व घरेलू मधुर वातावरण इसमें सहायक बन सकता है।

इस कथन की पुष्टि में मैं एक संस्मरण साझा करना चाहूँगा। जब मैं महाराणा हाई स्कूल राजनगर में कक्षा 8 का विद्यार्थी था, एक दिन प्रार्थना सभा में एक संत आये। उन्होंने सिगरेट-बीड़ी व शराब से होने वाले नुकसान पर प्रभावी प्रवचन दिया और अंत में कहा कि जो बालक इन नशीली चीजों का सेवन नहीं करने का प्रण करना चाहें, वे अपने स्थान पर खड़े हो जाएं। हम पास-पास बैठे मित्रों ने एक-दूसरे को आँखों के इशारे से कुछ पूछा और अगले कुछ ही पलों में हम चार-पाँच दोस्त एक साथ खड़े हो गये। हमने निर्धारित भाषा में संकल्प लिया। उस संकल्प का ही असर रहा कि हमने नशामुक्त जीवन जिया। हमारे सामने भी विषम परिस्थितियाँ आयीं, मगर सम्भवतः इस संकल्प से उत्पन्न मनोबल की वजह से ही हम नशे से दूर रह सके। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि संकल्प में प्रचुर शक्ति है। हम यदि बालकों को संकल्प धारण करने का अवसर प्रदान करें तो निश्चित ही उनका जीवन शुद्ध व सात्विक बन सकेगा।

आज संचार क्रान्ति के युग में बचपन फिर चौराहे पर खड़ा है। इंटरनेट के द्वारा नशा, फैशन व अश्लीलता सहज सुलभ हो गये हैं। वर्तमान के संक्रान्ति काल में संकल्प की शक्ति का फिर से जागरण हो तो बालकों का जीवन सुसभ्य, सफल एवं समृद्ध हो सकेगा। प्रारम्भ में किशोरों के मन में ड्रग्स, सिगरेट व अन्य नशीले पदार्थों के सेवन के प्रति एक जिज्ञासा व स्व-अनुभव लेने की भावना होती है। नशीली वस्तुओं की उपलब्धता व मित्रों द्वारा आग्रह होने पर प्रायः किशोर नशे की ओर उन्मुख हो जाते हैं। कभी-कभी अभिभावकों द्वारा उपेक्षा या अपमान, परीक्षा में असफलता या अन्य कोई दुःख-दर्द होने पर भी किशोर नशे में समाधान खोजने की असफल कोशिश करने लगते हैं। नशे के कारण जो भी हों, सभी इस बात पर एकमत हैं कि नशे से जीवन का नाश होता है। अतः हमें इस विकराल समस्या के निवारण हेतु व्यावहारिक उपायों को अपनाना चाहिए। अभिभावकों की सजगता व घरेलू मधुर वातावरण इसमें सहायक बन सकता है।

उदयपुर निवासी लेखक अणुव्रत बालोदय शिविर के निदेशक और 'बच्चों का देश' पत्रिका के सह संपादक हैं। विज्ञान व्याख्याता के पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद लेखन व सेवा कार्यों में संलग्न हैं।

लघुकथाएं

आत्मगौरव

देवेन्द्रराज सुथार, जालोर

कालू का मदिरापान करना और घर आकर पत्नी जानकी को पीटना अब आदत में शुमार हो चुका था। पिट-पिटकर जानकी की तो सूरत ही बिगड़ चुकी थी। एक गाल पर थप्पड़ की सूजन कम होती तो दूसरा गाल सूजने लग जाता। कालू के इस दुर्व्यवहार के किस्से गली-मोहल्ले में फैलने लगे थे।

एक दिन सामाजिक कार्यकर्ता ज्योति को इसका पता चला तो उसने अपनी नारीवादी बातों से जानकी के मन में ऐसा जोश भर दिया कि उसका आत्मगौरव जाग उठा। आज मदिरा के नशे में कालू ने जैसे ही जानकी पर हाथ उठाया तो उसने सहन करने के बजाय प्रत्युत्तर में कालू की पिटाई कर डाली। कालू का सारा नशा उतर गया और अगले दिन से ही उसका मदिरापान करना बंद हो गया।

पूर्णता

सुमन कुमार, पटना

"रोटियाँ कितनी गोल बनी हैं माँ! फूलकर पकने पर स्वाद का क्या कहना। वाह!" आठ साल का मोनू खाते हुए बोला।

"लेकिन जब मैं छोटी थी, तब रोटी गोल बिल्कुल नहीं बनती थी, तुम्हारी नानी ने सिखाया था। रोटी सेंकते वक्त तो हाथ भी जल जाते थे, पर धीरे-धीरे सीख गयी।"

"बिल्कुल चाँद जैसी गोल रोटियाँ...!" बेटे के मुँह से सुनकर माँ मुस्कुरा पड़ी।

"ईदगाह कहानी में हामिद अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदकर लाया था। मैं भी तुम्हारे लिए लाऊँगा माँ। तुम्हारा हाथ भी न जलेगा और रोटियों पर जले का दाग भी न दिखेगा।"

"जरूर लाना बेटा...पर रोटी पर दाग तो होते ही हैं, तभी तो वह अपने पूर्ण रूप में आती है। जैसे चंदा मामा अपने दागों के साथ भी सम्पूर्ण हैं!" कहकर माँ ने उसे पुचकार लिया।

डॉ. सी. जय शंकर बाबु

भारतीय भाषाओं के प्रयोग का सुयोग

मानवीय मूल्यों से नाता तोड़कर जिस नवसंस्कृति से हम इठला रहे हैं, वह हमारी अस्मिता को ही खत्म कर सकती है। हमें अपनी संस्कृति को बचाने के लिए सचेत होने की जरूरत है। भारतीय भाषाओं और बोलियों को बचाने व आगे बढ़ाने के लिए हमें ईमानदारी के साथ इनका प्रयोग जारी रखना चाहिए।

मजाक में हो या वैज्ञानिक दृष्टि से, यह कहा जाता है कि मानव की भी जानवरों की भाँति पूँछ थी, जिसका प्रयोग न करने से वह विलुप्त हो गयी। विलुप्त होती भाषाओं के मामले में तो यह निष्ठुर सत्य है कि प्रयोग से कतराने के कारण भाषाएँ मर रही हैं। हम यदि खयाल न रखें तो मातृभाषाएँ मृतभाषाएँ कहलाएंगी। वैसे जिराफ के संबंध में कहा जाता है कि आवश्यकता के हिसाब से ऊँची डालियों तक गर्दन उठाने की कोशिशों से उसकी गर्दन बढ़ गयी। इसी तरह हम अपनी भाषाओं को जितनी ऊँचाइयों तक पहुँचाने की कोशिश करते हैं, वे उतनी ही विकसित हो पाती हैं।

भाषाओं को लेकर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। हिंदी बहुप्रचलित तथा अधिसंख्य लोगों द्वारा बोली व समझी जाने वाली भाषा होने के नाते समूचे भारत में एक सशक्त संपर्क भाषा है। भारतीय भाषाओं में आपसी अनुवाद के लिए मध्यस्थ के रूप में अक्सर हिंदी अपनी भूमिका निभाती है। आजादी की लड़ाई के दिनों से लेकर आज तक वह आपस में जोड़ने वाली संपर्क भाषा की भूमिका अदा कर रही है।

हिंदी की शताधिक बोलियाँ भी हैं, जिनके बोलने वाले बड़े स्वाभिमान के साथ कहते हैं कि हिंदी उनकी भाषा है। बड़ी संख्या में हिंदीतर भाषी हिंदी समझते हैं। कई लोग पढ़ और लिख भी सकते हैं। कई लोग सभी प्रकार के व्यवहार हिंदी में कर पाते हैं, अतः वे हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में सुसमृद्ध भी करते हैं। ऐसे में हमें हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के उद्धार के लिए खुद काम करना चाहिए। इन भाषाओं को व्यवहार में अपनाने में ईमानदारी की जरूरत है। हम अंग्रेजीदां बनते जा रहे हैं। वास्तव में हमें किसी भाषा के साथ भेदभाव करने की आवश्यकता नहीं है। अंग्रेजी को भी जहाँ जरूरत हो, वहाँ अपना सकते हैं, सीख सकते हैं ताकि दुनिया के साथ व्यवहार में तथा दुनिया में भ्रमण के लिए एक विदेशी भाषा में हम निष्णात बने रहें।

भूमंडलीकरण की चमक-दमक के बीच भारतीयता के कई तत्त्व अपना अस्तित्व बहुत तेजी से खोते जा रहे हैं। इनमें संस्कृति व भाषाएँ भी शामिल हैं। भाषाएँ केवल संपर्क या संचार का माध्यम ही नहीं हैं, वे संस्कृति की अभिन्न अंग हैं। संस्कार, चेतना व आत्मीयता की अपार संपत्ति अपनी भाषा होती है। मातृभाषा शक्तिशाली अस्त्र है। इसके प्रयोग में भूमंडलीकरण कई मामलों में हमें निश्चेष्ट बनाता नजर आता है। इसके दुष्प्रभावों से बचने के उपाय हमें अवश्य करने चाहिए। मानवीय मूल्यों से नाता तोड़कर जिस नवसंस्कृति से हम इठला रहे हैं, वह हमारी अस्मिता को ही

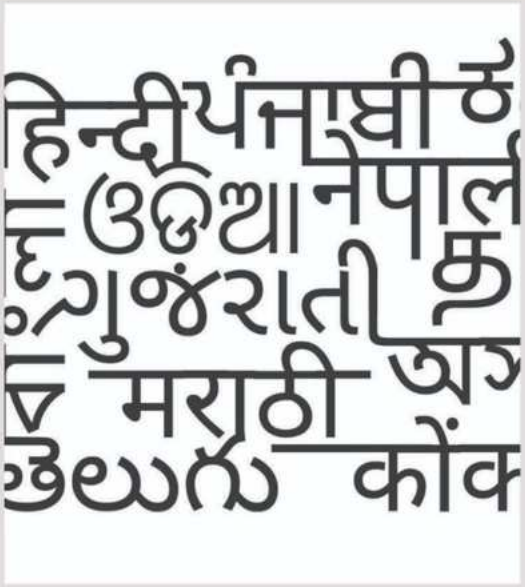

जब तक माध्यम के रूप में मातृभाषा की अवहेलना हम करते रहेंगे, तब तक विलुप्त होने वाली भाषाओं की संख्या बढ़ती ही रहेगी। इसके लिए हममें से हर कोई जिम्मदार है। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह भी है कि किसी भी भारतीय भाषा के माध्यम से पढ़ाई करने वाले छात्रों के हितों और रोजी-रोटी पाने के अवसरों में समानता सुनिश्चित होनी चाहिए।

खत्म कर सकती है। हमें अपनी संस्कृति को बचाने के लिए सचेत होने की जरूरत है। भारतीय भाषाओं और बोलियों को बचाने व आगे बढ़ाने के लिए हमें ईमानदारी के साथ इनका प्रयोग जारी रखना चाहिए।

आये दिन चंद भावुक भाषाप्रेमी यह माँग करते नजर आते हैं कि सरकार को चाहिए कि वह अमुक भाषा का उद्धार करे। किसी घोषणा से क्या फर्क पड़ने वाला है, यदि हम अपनी भाषाओं के प्रति ईमानदार नहीं हों। राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए बड़ी व्यवस्था है। इस व्यवस्था में चेतना की कमी, ईमानदारी की कमी, उत्साह की कमी देखी जा सकती है। सात दशक की अवधि कोई कम नहीं होती जिसमें संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद कोई भाषा कार्यालयों में अपने अस्तित्व के लिए तड़पती रह जाये।

भारत की मिली-जुली संस्कृति की अभिव्यक्ति की सशक्त भाषा के रूप में हिंदी के विकास को सुनिश्चित करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 351 में स्पष्ट निर्देश हैं। इसके बावजूद सारे प्रयास अपर्याप्त इसलिए साबित हो रहे हैं क्योंकि समाज में अंग्रेजीदां मानसिकता बढ़ती जा रही है और लोग हिंदी के किसी भी रूप में प्रयोग से ही हिचकिचाते हैं।

वर्तमान समय में कागजरहित कार्यालयों की संकल्पना के बीच ई-सेवाओं के रूप में जो भी सेवाएँ अंग्रेजी के माध्यम से हम देते हैं, वे सब प्रमुख भारतीय भाषाओं के माध्यम से उपलब्ध करायी जा सकती हैं, परंतु सर्वत्र ईमानदारी के अभाव में राजभाषा के रूप में अपने अस्तित्व को दर्शाने के लिए हिंदी की तड़प जारी है। अपनी भाषा की प्रयोगधर्मिता से हम राजभाषा हिंदी के साथ तमाम भारतीय राजभाषाओं, मातृभाषाओं का विकास सुनिश्चित कर सकते हैं।

भाषा-प्रयोग का बड़ा क्षेत्र समाज ही है। समाज में आपसी बातचीत के लिए भाषा का प्रयोग होता है। विचार-विमर्श, ज्ञान का आदान-प्रदान तथा शिक्षा के माध्यम के रूप में उसकी बहुत बड़ी भूमिका होती है। तमाम वैज्ञानिक कथनों के बावजूद हम बारम्बार मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने की व्यवस्था करने से चूकते जा रहे थे। शिक्षा के निजीकरण के परिणामस्वरूप बढ़ते व्यवसायीकरण से यह खाई और भी गहरी बन गयी है।

आखिरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं के उद्धार के लिए भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति के संवर्धन का दर्शन जुड़ गया है। सही मायने में ईमानदारी से भारतीय भाषाओं के माध्यम को प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक अपनाने के साथ भाषा शिक्षण को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। त्रिभाषा सूत्र को भी पूरी निष्ठा के साथ अपनाने की जरूरत है। एक क्षेत्रीय भाषा, हिंदी और एक अंतरराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी को आकर्षक व वैज्ञानिक ढंग से सिखाने की अपेक्षा है। शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को अपनाकर इन तीनों भाषाओं की सुदृढ़ नींव प्राथमिक स्तर से ही सुनिश्चित करने से निश्चय ही भाषाओं और विषयों के ज्ञान में छात्रों की प्रतिभा का निष्पादन देखना संभव है।

जब तक भाषा शिक्षण को उपेक्षा की दृष्टि से देखते रहेंगे और माध्यम के रूप में मातृभाषा की अवहेलना हम करते रहेंगे, तब तक विलुप्त होने वाली भाषाओं की संख्या बढ़ती ही रहेगी। इसके लिए हममें से हर कोई जिम्मदार है। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह भी है कि किसी भी भारतीय भाषा के माध्यम से पढ़ाई करने वाले छात्रों के हितों और रोजी-रोटी पाने के अवसरों में समानता सुनिश्चित होनी चाहिए। भाषाओं को लेकर संकुचित राजनीति जितनी जल्दी समाप्त होगी, हमारी अपनी भाषाओं का विकास उतना ही सुनिश्चित होगा। भाषा प्रयोक्ताओं तथा भाषा प्रेमियों के द्वारा भारतीय भाषाओं के निष्ठापूर्वक प्रयोग में ही इन भाषाओं का सुयोग है। आइए, हम संकल्प लें कि भारतीय भाषाओं को तहे दिल से अपनाएंगे और उनका प्रयोग करेंगे।

लेखक 'युग मानस' के संस्थापक संपादक और 'आंतर भारती' के प्रधान संपादक हैं। संप्रति पांडिच्चेरी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं।

डॉ. कृष्णा कुमारी

अशिक्षित जानकर न करें अवमानना

ज्ञान और शिक्षा दोनों अलग-अलग चीजें हैं। जो व्यक्ति शिक्षित है, आवश्यक नहीं कि वह ज्ञानी भी हो। इसी तरह अशिक्षित व्यक्ति भी अज्ञानी होगा, यह मान लेना भी अज्ञान का प्रतीक है। इसी आधार पर उनकी अवमानना तो नहीं की जानी चाहिए। निरक्षर होने मात्र से तो किसी का तिरस्कार, अवहेलना, उपेक्षा करना उचित नहीं ठहराया जा सकता।

अरे भाई साहब! पढ़े-लिखे होकर भी आप कतार तोड़ रहे हैं...कोई अनपढ़ ऐसा करे तो समझ में भी आता है...। इन भाई साहब के कहने का आशय शायद यही है कि कोई अनपढ़ व्यक्ति ऐसा करे तो चलता है, मगर...। अक्सर ऐसा देखने व सुनने में आता रहा है यानी जो पढ़े-लिखे नहीं होते वे जाहिल, गंवार होते हैं, तहजीब से कोसों दूर होते हैं। वे ऐसी हरकतें कर सकते हैं।

निस्संदेह शिक्षा-दीक्षा से जीवन को नयी दिशा, नये विचार, नयी दृष्टि, नये आयाम मिलते हैं। अच्छे-बुरे का अंतर समझ में आता है। पढ़ाई की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता, मगर इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि जो अनपढ़ हैं, किसी वजह से साक्षर नहीं हो पाये तो वे बेवकूफ हैं या समझदारी से उनका कोई वास्ता नहीं है। जी नहीं, समझदारी और बुद्धिमत्ता जन्म से मिलती है, ईश्वर प्रदत्त होती है जो उम्र के साथ-साथ बढ़ती है। अनुभव इसमें चार चाँद लगा देता है और शिक्षा सोने में सुहागे का काम करती है।

बहुत सारे ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व हैं जो कम पढ़े-लिखे हैं या निरक्षर हैं, बावजूद इसके उनकी उपलब्धियों का सारी दुनिया लोहा मानती है, उन्हें सलाम करती है। धीरूभाई अम्बानी अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे, मगर इतना बड़ा व्यावसायिक साम्राज्य खड़ा कर दिया। सचिन तेंदुलकर हाई स्कूल में फेल, मगर क्रिकेट और जिंदगी की पाठशाला में नंबर एक पर। महान वैज्ञानिक आइन्सटाइन से स्कूल में उनके शिक्षक ने तो यहाँ तक कह दिया था कि तुम पढ़ने के सिवाय सब कर सकते हो और यही हुआ। उनके आविष्कारों की सूची काफी लम्बी है। एडिसन की भी ऐसी ही कहानी है। ऐसे अनेकानेक महान व्यक्तित्व हैं। कई वैज्ञानिक हुए जो कम पढ़े हुए थे।

संत कबीर ने लिखा है - "मसि कागद छुयो नहीं, कलम गहि नहीं हाथ।" ...और कबीर पर न जाने कितने शोध हो चुके हैं। अतः कम पढ़े-लिखे लोगों को नजर अंदाज करना अनुचित है। उनका उपहास उड़ाना एकदम गलत है।

वैसे भी शिक्षा का अर्थ है सतत सीखते जाना। चाहे किताबों से या फिर अनुभवों से। संत कबीर ने भी कहा था - "अनभो साँचा।" अनुभव ही सब कुछ है। वही शिक्षक भी है और वही शिक्षा भी। स्कूली शिक्षा तो औपचारिक है। हाँ, इससे डिग्री व नौकरी मिल सकती है जो जीवनयापन का आधार है। वास्तविक पाठशाला तो अनुभव की ही मानी जाती है। यह सच्ची शिक्षा है और फिर समझदार या विवेकी होने का मापदंड केवल शिक्षा नहीं हो सकती।

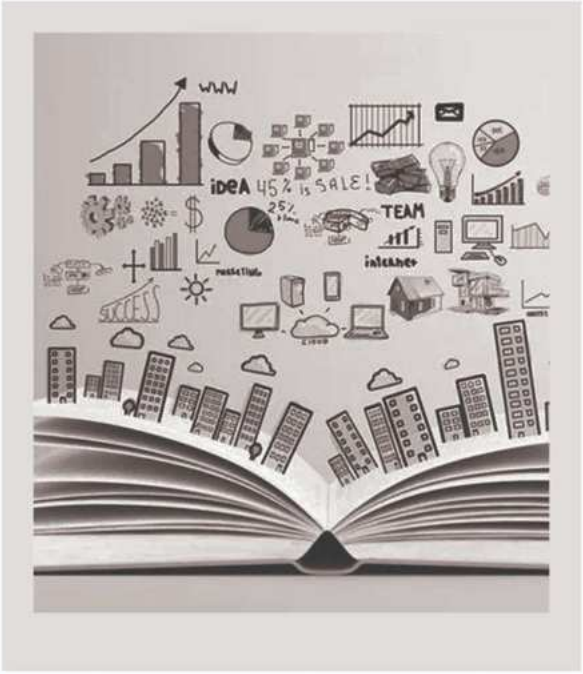

नहीं कर पाते, मगर ऐसे ही बच्चे बाद में बहुत अच्छे मैकेनिक बन जाते हैं, चित्रकार बन जाते हैं या अन्य किसी अन्य हुनर में कमाल कर जाते हैं और दुनिया देखती रह जाती है। इसका यह मतलब कदापि नहीं कि पढ़ाई-लिखाई का महत्व नहीं है। ज्ञान की महिमा अनंत है। ज्ञान से पवित्र कुछ भी नहीं है।

दरअसल ज्ञान और शिक्षा दोनों अलग-अलग चीजें हैं। जो व्यक्ति शिक्षित है, आवश्यक नहीं कि वह ज्ञानी भी हो। इसी तरह अशिक्षित व्यक्ति भी अज्ञानी होगा, यह मान लेना भी अज्ञान का प्रतीक है। इसी आधार पर उनकी अवमानना तो नहीं की जानी चाहिए। उनके सम्मान में कमी भी क्यों की जाये? निरक्षर होने मात्र से तो किसी का तिरस्कार, अवहेलना, उपेक्षा करना उचित नहीं ठहराया जा सकता और न ही इस आधार पर किसी का मजाक उड़ाया जाना चाहिए।

कोटा निवासी लेखिका राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापन के साथ ही लेखन से भी जुड़ी हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं में इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

हमारे यहाँ भक्ति परम्परा में श्रवण भक्ति को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। तनिक गौर करके देखिए, जन्म के डेढ़-दो साल तक बालक केवल सुनता है और वह सुन-सुनकर ही बोलना सीखता है। जैन धर्म में 'श्रवणोपासना' शब्द प्रचलित है यानी सुनना भी एक बहुत बड़ी उपासना है, साधना है। श्रवण उपासना से मोक्ष तक प्राप्त किया जा सकता है। सुनकर भी बहुत बड़ा ज्ञानी बना जा सकता है। अभिमन्यु ने माँ के गर्भ में ही चक्रव्यूह के बारे में बहुत कुछ जान लिया था। इस वजह से अभिमन्यु नहीं सुन पाये और...।

अमूमन यह भी देखने में आता है कि कितने ही पढ़े-लिखे लोग भी बेवकूफियां करते हैं, हीन भावना से ग्रसित होते हैं, गलतियां करते हुए भी देखे जाते हैं और ज्ञान के अहंकार से बोझिल भी, अनपढ़ लोगों को अपमानित करने में भी पीछे नहीं रहते। तरस आता है ऐसे लोगों पर। अक्सर पढ़े-लिखे लोग बेकार की बातों पर भी बहुत बहस करते हैं, समय जाया करते हैं, कुतर्क भी करते हैं, दिल की नहीं सुनकर दिमाग की ही बात मानते हैं, जबकि बिना पढ़े-लिखे या कम पढ़े-लिखे लोग अधिक सरल व भोले होते हैं। वे दिल की सुनते हैं, प्यार भी बहुत करते हैं। जीवन की पथरीली पगडंडियों पर नंगें पाँवों चलते-चलते, ठोकरें खाते-खाते इतने कड़वे-मीठे अनुभवों से गुजरते हैं कि बड़े-बड़े डिग्रीधारी उनके समक्ष पानी भरते दिखायी देते हैं। ऐसे व्यक्तियों को कम करके नहीं आंकना चाहिए जो किसी परिस्थितिवश पढ़-लिख नहीं पाये हों, मगर दूसरे क्षेत्रों में बड़े-बड़े काम करके नाम कमा लेते हैं।

यह कड़वा सच है कि हर बालक नहीं पढ़ सकता। कुछ बच्चे ऐसे मिल जाएंगे जो लाख प्रयासों के बाद भी शिक्षा ग्रहण

...प्यार के शामियाने बचा

■ जय चक्रवर्ती - रायबरेली ■

थोड़े दुःख, थोड़े सुख, कुछ फसाने बचा,
ज़िन्दा रहने के सारे बहाने बचा।

चार पल बैठकर कह सकें, सुन सकें,
दोस्ती के लिए कुछ ठिकाने बचा।

रह सकें कुछ परिन्दे भी छत पर कभी,
थोड़ा पानी बचा, थोड़े दाने बचा।

एक पीढ़ी खड़ी हाथ बाँधे हुए,
काम-धंधे बचा, कारखाने बचा।

ज़िन्दगी के सफ़र में कड़ी धूप है,
प्रीत के, प्यार के शामियाने बचा।

■ डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव, ग्वालियर ■

आत्मसम्मान का रखें ध्यान

हमें हर व्यक्ति के आत्मसम्मान का ध्यान रखना चाहिए। हमारी मधुर वाणी हमारे ढेर सारे कार्य पूर्ण करवा सकती है और कठोर वाणी के कारण ही कई कार्य बिगड़ सकते हैं, रुक सकते हैं। इसलिए हमेशा विवेकपूर्ण व्यवहार करें। खुशियां चाहते हैं तो खुशियां बांटना भी सीखें, अच्छा सुनना चाहते हैं तो अच्छा बोलिए भी।

कल बीच बाजार में एक प्रोफेसर साहब ऑटो वाले से किराये को लेकर भिड़ गये। ऑटो वाला 30 रुपये माँग रहा था, जबकि प्रोफेसर साहब उसे 25 रुपये दे रहे थे। लगभग पंद्रह मिनट तक दोनों के बीच काफी बहस होती रही। बाद में कुछ लोगों के समझाने पर प्रोफेसर साहब ने ऑटो वाले को तीस रुपये दे दिये। इस बीच सड़क पर यों ही व्यर्थ तमाशा देखते रहे लोग। कुछ ने प्रोफेसर को भला-बुरा भी कहा।

कई बार लोग अपने आत्मसम्मान की जरा भी परवाह नहीं करते। कहीं भी, किसी से भी लड़ने-झगड़ने लगते हैं। जबकि व्यक्ति अपने जीवन-मूल्यों का ध्यान रखते हुए कार्य करे तो कभी किसी से झगड़ा न हो। इससे जहाँ व्यक्ति का स्वयं का आत्मसम्मान बरकरार रहेगा, वहीं दूसरे लोगों को भी तमाशबीन बनने का मौका नहीं मिलेगा।

कुछ लोगों की नाक पर गुस्सा और मस्तक पर अभिमान की चादर चढ़ी रहती है। उन्हें अपने सामने वाला हर व्यक्ति निरर्थक, कमजोर, असहाय, निर्बल दिखायी देता है। ऐसे लोग चाहे जब छोटी-मोटी बातों को लेकर अपने रिश्तेदारों, मित्रों और पड़ोसियों से झगड़ा-फसाद कर लेते हैं। ऊट-पटांग शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जो शोभनीय नहीं होते। यह सब देख-सुनकर आसपास के लोग ऐसे व्यक्ति को असभ्य और अव्यावहारिक तक कहने लगते हैं, भले ही वह व्यक्ति कितना भी शिक्षित क्यों न हो।

कोई चाहे किसी पद पर हो या न हो, हर व्यक्ति का एक आत्मसम्मान होता है। हमें हर व्यक्ति के आत्मसम्मान का ध्यान रखना चाहिए। हमारी मधुर वाणी हमारे ढेर सारे कार्य पूर्ण करवा सकती है और कठोर वाणी के कारण ही कई कार्य बिगड़ सकते हैं, रुक सकते हैं। इसलिए हमेशा विवेकपूर्ण व्यवहार करें। छोटे बालक को भी सम्मानपूर्वक 'आप' कहकर सम्बोधित करें। उससे कुछ कहना चाहते हैं तो स्नेह से कहें। बेमतलब डांटे-डपटें नहीं, उसका भी एक आत्मसम्मान है। वह इस बात पर गौर करता है कि मम्मी-पापा या बड़ों ने मुझसे कैसा व्यवहार किया। जिन बच्चों को हमेशा डांटा जाता है, वे अंदर से दब्बू और कुंठित हो जाते हैं, उनका बुद्धि-विवेक सुचारु रूप से काम नहीं करता।

इसलिए हमेशा ध्यान रखें कि आपके सामने जो कोई भी है, उसके आत्मसम्मान को कभी ठेस न पहुँचे। रिश्तेदारों और अन्य आत्मीय जनों से भी सामंजस्य बनाकर रखें। छोटी-छोटी गलतियों में उलझ कर अपने वर्तमान को बर्बाद न करें। खुशियां चाहते हैं तो खुशियां बांटना भी सीखें, अच्छा सुनना चाहते हैं तो अच्छा बोलिए भी। ■

पारसमल चण्डालिया, ब्यावर

गुरु आज्ञा पालन से ही होगा कल्याण

केवल गुरु-भक्त कहलाने से हमारे जीवन का विकास नहीं हो सकता, गुरुदेव की आज्ञा का पालन करने से ही हमारा कल्याण होगा। हम अपने जीवन का मार्गदर्शक सदैव गुरु को ही बनाएं क्योंकि गुरु के मार्गदर्शन से नन्हा-सा दीपक भी सूर्य की किरणों के समान रोशनी देता है, अतः गुरु को मानने के साथ ही गुरु की भी मानें।

हम मानवीय जीवन की उन्नति को गुरु के बिना नहीं समझ सकते। जीवन में अर्थ क्या है? अनर्थ क्या है? यह बोध गुरु से प्राप्त ज्ञान के बिना संभव नहीं है। गुरु की सजगता, सतर्कता, आत्मीयता, सद्भाव एवं प्रेरणा ही साधना के दुर्गम पथ को सुगम बनाती है। गुरुजनों की नियमित निरन्तर सद्प्रेरणा तथा विवेकपूर्ण आचरण एवं व्यवहार ही शिष्य को अनुकरण करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और वह सतत जागृत और लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है।

'गुरु' शब्द का सामान्य अर्थ होता है भारी अर्थात् जो अज्ञान रूपी अंधकार मिटाने की जिम्मेदारी के भार से युक्त हो। जो शिष्य के अज्ञान रूपी अंधकार को मिटा दे। जो स्वयं यथार्थ ज्ञान से प्रकाशमान हो, वही दूसरों को प्रकाश देकर उसके अज्ञान के तिमिर को हटा सकता है। जिसमें ज्ञान का प्रकाश नहीं है, जो स्वयं काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर आदि दुर्गुणों का शिकार बना हुआ है, वह दूसरों के अज्ञान, मोह आदि को कैसे मिटा सकता है? जैसे प्रदीप स्व-पर प्रकाशक होता है, वैसे ही गुरु भी स्व-पर प्रकाशक होते हैं। गुरु स्वयं ज्ञान और चरित्र से ज्योतिमान होते हैं तथा वे अन्य को भी ज्ञान और चरित्र की ज्योति प्रदान करते हैं। गुरु वही श्रेष्ठ होता है जिसकी प्रेरणा से किसी का चरित्र संवर जाये।

जैसे मूर्तिकार अपनी छेनी एवं हथौड़े से टेढ़े-मेढ़े, खुरदुरे पत्थर को काटकर सुन्दर मूर्ति का रूप प्रदान करते हैं और वह पूजनीय बन जाती है, वैसे ही गुरु असंस्कृत, अनगढ़, अप्रशिक्षित शिष्य को अपनी शिक्षा, वाणी और मन से गढ़कर सुन्दर, सुसंस्कृत, प्रशिक्षित जीवन का रूप दे देते हैं। इसीलिए गुरु को शिष्य के जीवन का सुधारक, निर्माणकर्ता एवं परम उपकारी बताया गया है।

कहा भी गया है- 'सुसाहुणो गुरुणो' सुसाधु-प्रभु की आज्ञानुसार संयम पालन करने वाले साधु-साध्वी हमारे गुरु हैं, जो स्वयं तिरते हैं और अन्य प्राणियों को संसार सागर से तिरने का मार्ग बताते हैं। ऐसे सुसाधु संसार में दुर्लभ हैं। उनके शुभ दर्शनों को प्राप्त करने वाले नेत्र धन्य हैं, उनके गुणगान में निरत रहने वाली जिह्वा भी धन्य है, उनके गुणों को श्रवण करने वाले कान भी धन्य हैं, उनके स्मरण में सतत लगा रहने वाला चित्त भी धन्य है। उनके पवित्र चरणों को स्पर्श करने का सौभाग्य जिस ललाट को मिला है, वह ललाट भी धन्य है और उस विनत महापुरुष को भक्ति से वंदन करने वाला यह समूचा विश्व धन्यता का अनुभव करता है।

केवल गुरु-भक्त कहलाने से हमारे जीवन का विकास नहीं हो सकता, गुरु की आज्ञा का पालन करने से ही हमारा कल्याण होगा। हम अपने जीवन का मार्गदर्शक सदैव गुरु को ही बनाएं क्योंकि गुरु के मार्गदर्शन से नन्हा-सा दीपक भी सूर्य की किरणों के समान रोशनी देता है, अतः गुरु को मानने के साथ ही गुरु की भी मानें। जो गुरु की आज्ञानुसार निर्देशानुसार अपने जीवन को बनाते हैं, वे ही इहलोक एवं परलोक में सुखी होते हैं।

प्यार की डोर

■ कविता विकास ■

जब तक मैं उनके आस-पास थी, मुझमें वे माँ का बिम्ब देखकर खुद को समझाते रहे हों, पर अब अपनी पीड़ा को रोक पाना उनके लिए संभव नहीं था। उनके संभलते ही जल्द मिलने का वादा करके मैं कार में बैठ गयी। मन में शांति थी। आज माँ की आत्मा को भी शांति मिली होगी। प्यार की डोर नाजुक ही सही, एक-दूजे को बाँधने की क्षमता रखती है।

आज ये पाँचवीं मर्तबा है, जब माँ ने फोन नहीं उठाया। ऐसे तो हर दिन एक तय समय पर माँ का फोन आता था। जिस दिन मैं नहीं उठाती, वे दूसरे दिन उलाहना देतीं, "चाहे जितना भी व्यस्त रहो, ढाई बजे दिन का समय मेरे लिए रखा करो।" उन्हें पता था कि उस समय तक लंच वगैरह निबटा कर मैं आराम कर रही होती थी। अब थोड़ा डर भी लग रहा था कि पंद्रह दिन होने को आये, न इधर से कोई बात, न उधर से कोई बात हो रही है। पापा को फोन लगाया लेकिन स्ट्रोक के बाद वे ज्यादा बोलते नहीं थे और लड़खड़ाती बोली में जो भी बोलते, वह समझ में भी नहीं आता। जब महरी को फोन लगाया जो वर्षों से वहाँ काम कर रही थी, तो उसने कहा, "हाँ, मोबाइल की घंटी तो बजती है और मोबाइल माँ के हाथों में ही रहता है, मगर पता नहीं, वे क्यों नहीं बात करती हैं?" मुझे कुछ अपशकुन की आशंका हुई तो दो-तीन दिन के लिए माँ के पास चली गयी।

बच्चों के आने से बेहद खुशी के भाव से सराबोर रहने वाली माँ ने ऐसे स्वागत किया जैसे मेरे आने-न आने से कोई फर्क ही नहीं पड़ा हो उन्हें। घर में केवल माँ-पापा थे। भाई-भाभी तो वर्षों से विदेश में बस गये थे। बीच-बीच में आते भी थे तो भाभी के आत्मकेंद्रित और रुखे व्यवहार के कारण कुछेक दिन में ही माँ-पापा का उल्लास खोने लग जाता था। यह तो उनके पोते बंटू का मोह था, जो उन्हें उनके आने का इंतजार करवाता था। साथ में प्यारी-सी गुड़िया जिसका जन्म दुबई में ही हुआ था। पिछले साल बंटू का तीसरा जन्मदिन यहीं मनाया गया था। उसका भी बहुत मन लगता दादा-दादी के साथ। पापा एक कुर्सी पर बैठे रहते, उनकी देख-रेख के लिए एक अटेंडेंट था जो उनके नित्य कर्म करवा कर, नहला-धुला कर कपड़े बदल देता। फिर माँ अपने हाथों से बना नाश्ता उन्हें करातीं। जब माँ दूसरे कामों में व्यस्त होतीं, तब बंटू ही पापा के साथ रहता, उनके छोटे-मोटे काम कर देता, मसलन, टीवी ऑन कर देना, पेपर, चश्मा आदि ला देना आदि। पापा अपने काँपते हाथों से उसे लेकर गोद में बैठा लेते। जब भाभी उसे खींचकर उतार लेतीं और अपने साथ ले जाने लगतीं, तो वह बड़ी कातर निगाहों से पापा को देखता।

माँ के बगल में सोने का सुख आज भी वैसा ही है, जैसा बचपन में था, लेकिन अब माँ की यह चुप्पी बहुत खल रही है। इत्मीनान से सो रही माँ को देखकर खटका हो रहा था। वह पापा का साया थीं। डायबिटीज और स्ट्रोक के बाद भी पिछले बाईस साल से पापा जीवित हैं तो सिर्फ माँ की कुशल देख-रेख की बदौलत ही। मुझे याद है, हमारे छुटपन में पापा कहते थे, "घर की रानी है तुम्हारी माँ, उनके आदेश के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता।" लेकिन माँ, पारम्परिक, सरल और घरेलू ही रहीं, भले ही अदृश्य रूप से पूरे घर को कमांड करती रहीं। तीज-त्योहारों में पापा के पैर छूतीं। एक उम्र के बाद तो उन दोनों में हमें भगवान और भक्त का रिश्ता दिखने लगा था। भाई के प्रति पापा की चिंता देखकर उन्हें समझातीं, "पढ़ा-लिखा दिया, अच्छे संस्कार दिये, फिर भी समझ नहीं है तो आप क्या कर लीजिएगा? खुश रहिए। मैं आपका पूरा खयाल रखूँगी।"

मशीन की तरह चलती रहने वाली माँ को ऐसी कमजोरी महसूस होने लगी कि गुलाब-सी खिली रहने वाली माँ महीने भर में कुम्हला गयीं। बोन कैंसर का चौथा स्टेज...। परिवार पर मानो वज्रपात हो गया हो। दवा के बल पर जितने दिन हो सकता था, चलती रहीं। अपने लिए नहीं, अब वे पापा के लिए जी रही थीं। पूरे घर को अपनी सकारात्मकता से ऊर्जस्वित करने वाली माँ अकेले में रोने लगतीं। पापा भी रोते, पर माँ के सामने हिम्मती बनने का नाटक करते।

अभी मैं इन खयालों से गुजर रही थी कि माँ के बड़बड़ाने की आवाज सुनी, "हे ईश्वर! मेरे देवता को मुझसे पहले उठा ले। मेरे बाद उनको कौन देखेगा?" बस, माँ की इस बड़बड़ाहट ने उनकी उदासीनता के राज खोल दिये। सरकारी नौकरी में उच्च पद से सेवानिवृत्त पापा आराम पसंद जिंदगी जीते थे। वे बहू के साथ रहना नहीं चाहेंगे। महरी, महरी ही होती है। अपने जीवन की अनिश्चितता से ज्यादा पापा की चिंता ने उन्हें मौन कर दिया था। ऐसा लगता था कि हम सब से वे मोह-माया त्याग रही हों। सब कुछ देख-समझ कर, माँ-पापा को समझा कर मैं अपने शहर लौट आयी।

जिंदगी अपनी पटरी पर लौटती, उसके पहले ही माँ के गुजर जाने की मनहूस खबर आ गयी। रात डेढ़ बजे ही मायके जाने को निकल पड़ी। अगल-बगल के रिश्तेदार पहले ही वहाँ पहुँच गये थे, पापा ने खुद ही उन्हें खबर दी थी। बेहद ही दर्द भरा क्षण था वह। माँ की बात भगवान ने नहीं मानी। घाट ले जाने से पहले अंतिम दर्शन के लिए पापा को माँ के सामने लाया गया, पापा की आँखों में एक बूँद भी पानी नहीं था, कठोर पत्थर-सी आँखें, भावशून्य। रा...कहते-कहते मुँह खुला रह गया, आगे बोलती बंद। लोग पापा को धीरज बँधाने लगे, उन्हें रूलाने के जतन करने लगे, लेकिन सब व्यर्थ। सदमे का चरम उत्कर्ष था यह, लेकिन पापा ने माँ को हाथ उठाकर विदा किया। भाई के घाट जाते ही मैंने पापा को अस्पताल में भर्ती करवा दिया ताकि डॉक्टर की निगरानी में किसी प्रकार का डर न रहे।

स्थिति नॉर्मल होने तक मुझे और भाभी को वहीं रहना था। तेरहवीं के बाद मेरे पति भी अपने शहर चले गये और भैया भी दुबई लौट गये। भाभी पापा के जिगरी दोस्त की बेटी थीं। माँ की मृत्यु की खबर सुनकर उनके मम्मी-पापा भी आ गये थे और पूरे घर को अभिभावक की तरह सम्भाल लिया था। वे पापा की बहुत सेवा करते। अस्पताल से घर लाने पर भी उनके साथ बने रहते। भाभी को इतने वर्षों में पहली बार देखा, पापा का हाथ सहलातीं, बातें करतीं और बंटू को भी उनके साथ रहने को कहतीं। पापा बस इशारे से बात करते, जाने किन आत्मीय क्षणों में माँ ने उन्हें हिदायत दी थी कि उन्हें उदास नहीं रहना है। शायद इसीलिए पापा ने सारे गम को पी लिया था। बाहर से पर्वत-से दिखने वाले पापा के अंदर कितनी नदियाँ जज्ब थीं, केवल मैं जानती थी। जाने कब एक कमजोर सतह पाकर वे बाहर आ जाएं, जिसका हम सबको इंतजार था। डॉक्टर ने भी कहा था कि वे जी भर कर रो लेते तो कोई डर नहीं था।

समय बीतता जा रहा था। घर में आये हुए मेहमान चले गये थे। हालाँकि चाचा-मौसी आदि अनेक रिश्तेदार इसी शहर में रहते थे। माँ की तरह हम सब पापा को समय से नाश्ता-पानी, जूस आदि देते। माँ के रहते हुए खाने-पीने में अक्सर ना-नुकर करने वाले पापा बिना कुछ बोले चुपचाप खा लेते। मानो बस पेट भरना ध्येय हो, स्वाद से परे। इस बीच बंटू को यहाँ बड़े घर, लॉन आदि की सुविधा बहुत भा रही थी। वह अक्सर अपनी मम्मी से कहता, "मैं यहीं रहूँगा, यहीं पढ़ूँगा, पापा के पास छोटे-छोटे कमरों वाले मकान में नहीं रहना।" बच्ची भी चलना सीख रही थी। एक दिन मैंने मौका देखकर भाभी से कहा, "यहीं रह जाओ आप, बंटू का दाखिला करवा देना यहीं के स्कूल में, भाई तो आ ही जाते हैं बीच-बीच में। कहने को तो भाई दुबई में था, लेकिन वहाँ सीमित आमदनी में इतनी सुविधाएँ कहाँ संभव थीं? ऐसे में भाभी ने भी बच्ची के कुछ बड़े होने तक यहीं रहने का मन बना लिया। उनके मम्मी-पापा भी तो इसी शहर में थे, जहाँ वह आती-जाती रहती थीं।

हफ्ते भर बाद मेरे लौटने का टिकट हो गया था। बारिश का मौसम था। सवा साल की बच्ची बरामदे में खेल रही थी। बादल गरज रहे थे, बीच-बीच में बिजली भी कड़क रही थी। पापा ने इशारे से उसे अपने पास बुला लिया। वह भी कूदती-फाँदती आकर पापा की गोद में समा गयी। तभी उसे अपनी जूती दिखायी दी जो भीग रही थी। वह झट पापा की गोद से उतरी और जूती लाने के लिए नीचे जाने लगी। बारिश तो हो ही रही थी, अचानक इतनी जोरदार बिजली कड़की कि बच्ची का संतुलन बिगड़ गया और वह बरामदे की सीढ़ी से नीचे गिर पड़ी। पापा भी बिजली की कड़क से असहज हो रहे थे। बच्ची को गिरते देख उनके मुँह से एक दर्दनाक चीख निकल पड़ी," नी...। अरे देखो...।" भाभी बच्ची की ओर दौड़ी और जेतु जो पापा का अटेंडेंट था, पापा की ओर दौड़ पड़ा। मिट्टी गीली होने के कारण तीन-चार सीढ़ियों से फिसलने के बाद भी बच्ची को ज्यादा चोट नहीं लगी थी। डर के मारे वह ज्यादा रो रही थी। छह महीने पहले पापा के मुँह से निकला माँ का अधूरा नाम आज एक प्यार के रिश्ते ने जोड़कर पूरा कर दिया था, मानो इतने महीने से वे

अपनी रानी को पुकारने की असफल कोशिश कर रहे हों। पोती के प्यार ने उनकी वाणी लौटा दी थी। "चुप निन्नी, चुप हो जा गुड़िया।" बोलते हुए बच्ची को उन्होंने अपने सीने से लगा लिया। इतने दिनों बाद पापा को बोलते देखकर हम सब खुशी से रो पड़े। रिश्तेदारों को भी यह खबर दे दी गयी।

मेरे लौटने के चंद घंटे पहले पापा ने माँ की अलमारी खुलवा कर उनके कुछ गहने मुझे दिये और अपनी टूटी-फूटी वाणी में मुझे खुश रहने का आशीर्वाद भी। माँ के बिना पापा को छोड़कर आने में मुझे कहीं से संतुष्टि नहीं मिल रही थी। मैं पापा के सीने से लगकर रो पड़ी और एक आश्चर्यमिश्रित सफलता फिर मिली, जब पापा भी मेरी जुदाई में वैसे ही बिलखने लगे जैसे शादी के बाद मेरी विदाई में रो-रोकर बार-बार बेहोश हो रहे थे। भाभी, बंटू, चाची, जेतु और चाचा ने उन्हें पहले रोने दिया क्योंकि यह मेरी जुदाई से ज्यादा माँ के बिछोह के आँसू थे जिन्हें निकलना जरूरी था।

मैंने माँ का ही रूप लिया था, शायद इसलिए जब तक मैं उनके आस-पास थी, मुझमें वे माँ का बिम्ब देखकर खुद को समझाते रहे हों, पर अब अपनी पीड़ा को रोक पाना उनके लिए संभव नहीं था। उनके संभलते ही मैंने उनके हाथों से अपना हाथ छुड़ाया और जल्द मिलने का वादा करके कार में बैठ गयी। मन में शांति थी। आज माँ की आत्मा को भी शांति मिली होगी। प्यार की डोर नाजुक ही सही, एक-दूजे को बाँधने की क्षमता रखती है।

धनबाद में रहने वाली लेखिका शिक्षाविद् तथा सामाजिक कार्यकर्ता हैं। समाचार पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं छपती रहती हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं में इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

लघुकथा

संवेदना

■ अशोक 'अंजुम' - अलीगढ़ ■

सुबह-सुबह व्हाट्सएप के एक ग्रुप पर एक मैसेज देखा-

"किसी को तुरंत फलां ग्रुप का खून चाहिए। हालत बहुत खराब है। दिये गये मोबाइल नम्बर पर तुरंत सम्पर्क करें!"

पहले ने पढ़ा और एक अन्य ग्रुप पर जाकर नये-नये जोक्स का आनंद लेने लगा।

दूसरे ने देखा और अपने मित्रों को फूलों वाले 'गुड मॉर्निंग' के मैसेज फॉरवर्ड करने के लिए आगे बढ़ गया।

तीसरे ने देखा... चौथे ने देखा... पाँचवें ने देखा...

दो घंटे बाद उसी ग्रुप पर दूसरा मैसेज था-

"अपेक्षित ग्रुप के खून की उपलब्धता न होने के कारण अभी-अभी कुछ समय पहले तड़पते-तड़पते घायल युवक की मौत हो गयी।"

जय जय ज्योतिचरण जय जय महाश्रमण

ज्वेलर्स शॉप इंश्योरेंस

लाईफ इंश्योरेंस

कैशलेस मेडीक्लेम

हमारे विशेषज्ञों द्वारा
अपनी पुरानी ज्वैलर्स ब्लॉक पॉलिसी
या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और
अनुकूल नियमों और शर्तों के साथ
मुफ्त कोटेशन प्राप्त करें ।

नो रुम कैटगरी वाली
कैशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें
और इसे केवल 2600/- की
मामूली राशि से सुपर टॉप अप
पॉलिसी के साथ जोड़ें

इंश्योरेंस टिप्स

अपने पुराने जीवन बीमा पॉलिसी
नंबर के साथ शेयर करें,
हम एक परिवार पोर्टफोलियों प्रदान करेंगे
और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना
की सलाह देंगे ।

यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके
मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है
और आपको किसी सहायता या सलाह
की आवश्यकता होती है, तो हम
मदद के लिए तैयार है ।

Legacy of 39 Years

25000 HAPPY CUSTOMERS INDIA & ABROAD

11000 Claims Solved

300 National & International Awards

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए है जिसमे पॉलीसी है
ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी.

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !

हम देश विदेश में सभी ग्राहको को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते है.

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

Contact Details :
A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th Floor, Dr. A.Merchant Road Kabutar Khana, Near Kalbadevi,
Marine Lines (East) Mumbai- 400002 • Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com | Inter Com : 5050
LIC Department : 7045850013 | 7045850014 • Jewellers Department : 7045850015 | 9167860661 | 7045850013
Mediclaim Department : 7045850016 | 7047850017 | 9167860665 | 7045850013 • Motor Department : 9167860661
Claim Support Team : 7045850012 | 9167860663 • Landline : 022 - 46090022 | 46090023 | 46090024 | 40062222

परिचर्चा

"भारत का लोकतंत्र : कितना मजबूत, कितना कमजोर"

दिसम्बर अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

हर नागरिक को मिले नैतिकता की सीख

भारत का लोकतंत्र एक ऐसा स्वर यंत्र है जिसके सुर पर्याप्त सुरीले नहीं हैं। आजादी के समय ही युगद्रष्टा संत आचार्य तुलसी ने गहन चिंतन-मनन के बाद यह अनुभव किया कि अंग्रेजों की दासता से तो देश मुक्त हो गया, किंतु यहाँ का नागरिक जब तक हिंसा, भय व आतंक, धार्मिक कट्टरता, साम्प्रदायिक विद्वेष, जातिवाद के जहर व मानसिक दासता से मुक्त नहीं होगा, तब तक सच्चे अर्थों में भारतीय लोकतंत्र की स्थापना संभव नहीं है। इसे देखते हुए उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। आम नागरिक से लेकर राजनेता तक यदि इसके प्रसार में पूरे मनोयोग से संलग्न होते तो लोकतंत्र का स्वरूप आज इतना बेसुरा नहीं होता।

आज चुनाव के दौरान उम्मीदवार येन-केन-प्रकारेण मत प्राप्त करने का प्रयत्न करता है जिससे मतदाता स्वार्थान्धता के वशीभूत होकर प्रलोभन का शिकार हो जाता है। जातिवाद व मुफ्त की रेवड़ी से चुनाव के प्रभावित होने की घटनाएं प्रायः देखी और सुनी जाती हैं। कुल मिलाकर इलेक्शन तो हो जाता है, पर सही सलेक्शन नहीं हो पाता।

एक उक्ति है - जहाँ कहीं भी लोकतंत्र है, शिक्षा उसका मूलमंत्र है। स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही यदि हर नागरिक को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं राष्ट्र की रक्षा से भास्वित किया जाता तो बाकी विकास स्वतः हो जाते और लोकतंत्र का स्वर यंत्र मधुर, एकलय एवं समरस बन सकता था। ऐसे में भारतीय लोकतंत्र की मजबूती के लिए हर एक नागरिक को सही शिक्षा, भारतीय सभ्यता व संस्कृति, राष्ट्रीय हित चिंतन, सांप्रदायिक सद्भाव, नैतिकता एवं व्यसनमुक्ति के भावों से सिंचित किया जाना आवश्यक है।

-अणुव्रत सेवी धर्मचंद जैन अनजाना, थामला

कर्त्तव्यनिष्ठा से ही बनेगी बात

भारतीय संविधान नागरिकों को गुप्त मतदान से जनप्रतिनिधि चुनने का अधिकार देता है। संसद में सभी सांसद बहुमत से देश के विकास के लिए कार्य करते हैं। मगर अफसोस, कुछ नागरिक आम चुनाव के वक्त रुपये व मांस-मदिरा के प्रलोभन में आकर बिना विचारे ऐसे गलत व्यक्ति को सांसद चुन लेते हैं जो अपने क्षेत्र और देश के विकास के बजाय स्वयं के विकास पर ध्यान देते हैं, जिससे लोकतंत्र कमजोर होता है। प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह संविधान का पालन करे और संविधान के आदर्शों, संस्थानों, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे। भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे। अपने संवैधानिक कर्त्तव्यों के पालन के साथ ही प्राकृतिक पर्यावरण – वन, झीलों, नदियों, वन्य जीवों की रक्षा करे एवं सभी धर्मों का आदर व सम्मान करे, तभी हमारा लोकतंत्र मजबूत हो सकता है।

-कन्हैयालाल परिहार, पाली

शिक्षा, समझदारी और सामाजिक समरसता जरूरी

हमारे लोकतंत्र की मजबूती का एक महत्वपूर्ण पहलू है विभिन्न विचारधाराओं को समाहित करने की क्षमता, मगर जातिवाद, लिंग भेद और अन्य विभेद लोकतंत्र को कमजोर बना रहे हैं। नागरिकों की जिम्मेदारी है लोकतंत्र की रक्षा करना। सकारात्मक परिवर्तन के लिए सामूहिक सहमति बनाये रखना और यथोचित निर्णय लेना। शिक्षा, समझदारी और सामाजिक समरसता के माध्यम से हम सभी एक मजबूत लोकतंत्र की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। लोकतंत्र के महापर्व के मौके पर हमें समस्याओं को समझने और सुलझाने का संकल्प लेना चाहिए ताकि हम अपने देश को एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र बनाने की दिशा में आगे बढ़ सकें।

-संगीता बैद, गुवाहाटी

दुर्बल पक्षों का निवारण किया जाये

भारत का लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है। हमारे लोकतंत्र की नींव स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व जैसे आदर्शों पर टिकी है। इसमें धर्मनिरपेक्षता, लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा, आर्थिक विषमता का निवारण सर्वधर्मसमभाव जैसी विशेषताएं हैं। वहीं भूख, गरीबी, कुपोषण, बेरोजगारी, किसानों द्वारा आत्महत्या की घटनाएं, बिगड़ती कानून-व्यवस्था, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध और यौन हिंसा, महँगाई एवं भ्रष्टाचार जैसी

समस्याएं लोकतंत्र की असफलताओं को रेखांकित करती हैं। सांप्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद और भाषावाद के ज्वलंत मुद्दे लोकतंत्र के लिए कलंक हैं। पिछले कुछ वर्षों में संसद की गरिमा का जिस प्रकार से ह्रास हुआ है, उससे भी लोकतंत्र का अवमूल्यन हुआ है। कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी और राजनीतिज्ञ राष्ट्र विरोधी गतिविधियों और विध्वंसक बयानों से बाज नहीं आ रहे। विभिन्न रिपोर्टों से पता चलता है कि अनेक धनबली और बाहुबली राजनेता गुंडागर्दी, अवैध धनार्जन, हत्या, बलात्कार, भ्रष्टाचार जैसे गंभीर मामलों में लिप्त रद हैं। अतः लोकतंत्र को प्रभावी और गरिमापूर्ण बनाने के लिए इसके दुर्बल पक्षों को दूर किया जाना चाहिए। सामान्यजन की समस्याओं का समाधान करके, लोकतंत्र में आर्थिक और सामाजिक न्याय की पुनर्स्थापना की जानी चाहिए।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

निर्भीक होकर निष्पक्षता से करें मतदान

लोकसभा चुनाव आने पर हर बार यह सवाल हमें झकझोर देता है कि हमारा लोकतंत्र मजबूत है या कमजोर। सभी मतदाताओं को दृढ़ संकल्प लेकर यह पहल करनी होगी कि वह वोट निष्पक्ष तरीके से दे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करे। वे उन्हें दिशा दे सकते हैं, उन्हें सही रास्ता दिखा सकते हैं कि पूरी निष्पक्षता के साथ, निर्भीक होकर वे अपने मताधिकार का इस्तेमाल करें ताकि हमारा लोकतंत्र और ज्यादा मजबूत होकर निखरे।

-राजकुमार निजात, सिरसा

चरित्रवान, गुणी तथा राष्ट्रसेवी का चयन हो

हमारा लोकतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा व मजबूत लोकतंत्र है, परंतु हमारे देश में अधिकतर कानून अंग्रेजों के जमाने के हैं जो इसकी बहुत बड़ी कमजोरी हैं। यद्यपि इन कानूनों को बदलने का कार्य आरंभ हो चुका है, पर देखना यह है कि हम इस पर कितने खरे उतरते हैं। यदि ईमानदार, चरित्रवान व सेवाभावी व्यक्ति को चुनकर हम संसद में भेजते हैं तो उनके कृत्यों से निश्चय ही देश मजबूत होगा। चुनाव के दौरान दिया जाने वाला प्रलोभन साधारण लोगों को उनके मत के दुरुपयोग का कारण बनता है। फलस्वरूप छली, प्रपंची, कपटी तथा धूर्त व्यक्ति लोकतंत्र के मंदिर में पहुँच जाता है और जनहित के बजाय अपने स्वार्थ के लिए कार्य करता है। कई ऐसे लोग भी चुनाव जीत जाते हैं जिन पर दर्जनों आपराधिक या अन्य मामले चल रहे होते हैं। एक प्रबुद्ध नागरिक होने के नाते हमें चाहिए कि चरित्रवान, गुणी, लोकसेवी तथा राष्ट्रसेवी व्यक्ति को वोट देकर उसे जितवाएं। तभी हमारा लोकतंत्र और भी अधिक सुदृढ़ हो सकेगा।

-हरदेव सिंह धीमान, शिमला

सतत संवाद और प्रतिबद्धता आवश्यक

पिछले कुछ वर्षों में भारत ने चुनावों के माध्यम से सत्ता के कई शांतिपूर्ण परिवर्तन देखे हैं। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में यह स्थिरता आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए अनुकूल माहौल को बढ़ावा देने, संवैधानिक तरीकों के माध्यम से स्थिरता और शासन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। भारतीय न्यायपालिका लोकतंत्र के लिए एक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करती है, मौलिक अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करती है और सत्ता के संभावित दुरुपयोग पर रोक लगाती है।

हालाँकि भारत को चुनावी कदाचार से संबंधित चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। इनमें वोट की खरीद-फरोख्त, हेरफेर और राजनीति में धन का प्रभाव शामिल हैं। ये मुद्दे चुनावों की पवित्रता को कमजोर करते हैं और लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

लोकतंत्र की नींव को मजबूत करने के लिए इन कमजोरियों को दूर करने के लिए एक ठोस प्रयास की आवश्यकता है, ताकि लोकतांत्रिक सिद्धांत फलते-फूलते और विकसित होते रहें। जैसे-जैसे राष्ट्र आगे बढ़ता है, लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति सतत संवाद और प्रतिबद्धता अधिक समावेशी और लचीले भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण होगी।

-श्रुति पाण्डेय, जयपुर

आगामी अंक का विषय

परिचर्चा

राजनीति और धर्म का गठजोड़ : कितना उचित, कितना अनुचित?

राजनीति और धर्म के मध्य सम्बन्ध सदियों से चिन्तन व चर्चा का विषय रहा है। राजनीति पर धर्म का अंकुश कितना आवश्यक? धर्म आधारित राजनीति में जनता का कितना हित? धर्म में राजनीति का प्रवेश कितना स्वीकार्य? धर्म व्यक्तिगत विषय है या सामाजिक, राजनैतिक? राजनैतिक लाभ-अलाभ के लिए धर्म का उपयोग कितना सही? देश की राजनीति और इसके माध्यम से हमारे भविष्य को प्रभावित करने वाले इन ज्वलंत प्रश्नों पर निष्पक्ष व गम्भीर विचाराभिव्यक्ति हमारी आपसी समझ को निश्चय ही समृद्ध करेगी।

'अणुव्रत' पत्रिका के **मई 2024 अंक** में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्दों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार हमें अधिकतम **200 शब्दों में 31 मार्च 2024 तक** 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

अणुव्रत समाचार

अणुव्रत गीत महासंगान का विराट आयोजन

अणुव्रत अनुशास्ता के श्रीमुख से गुंजित हुआ अणुव्रत गीत

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रणीत अणुव्रत आन्दोलन अपने 75वें वर्ष में चल रहा है। वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने इस वर्ष को अणुव्रत का अमृत महोत्सव वर्ष घोषित कर रखा है तथा उनकी अणुव्रत यात्रा भी चल रही है। अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष में 18 जनवरी 2024 को अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में देश-विदेश में अणुव्रत गीत महासंगान का विराट आयोजन किया गया जिसमें लाखों लोगों ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की मंगल सन्निधि में 'अणुव्रत गीत महासंगान' के मुख्य कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। रेमण्ड मिल कम्पाउण्ड के निलगिरि उद्यान में बना प्रवचन पण्डाल 18 जनवरी को ठाणे महानगरपालिका माध्यमिक स्कूल-किशननगर, उथळ्सर, बाळकुम, सावरकरनगर, ढोकाळी, मानपाड़ा, यऊर, टेंभिनाका, ज्ञानसाधना, वर्तकनगर, पातलीपाड़ा, एन.के.टी. यूनियर कॉलेज, ज्ञानसाधना कॉलेज, मॉडर्न इंग्लिश स्कूल, संकल्प स्कूल, ज्ञानोदय स्कूल व श्रीमती सुलोचनादेवी सिंघानिया स्कूल के विद्यार्थियों की विराट उपस्थिति से छोटा पड़ने लगा तो विद्यार्थियों के लिए प्रवचन पण्डाल के पास स्थित दो अन्य उद्यानों में भी व्यवस्थाएं करनी पड़ीं। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के साथ महाराष्ट्र के शिक्षामंत्री दीपक केसरकर सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों, श्रद्धालुओं व 17 विद्यालयों से आये करीब छह हजार बच्चों ने एक साथ अणुव्रत गीत का महासंगान किया तो एक नवीन कीर्तिमान स्थापित हो गया।

इस अवसर पर आचार्य श्री ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि धर्म को उत्कृष्ट बताया गया है। अहिंसा, संयम और तप मंगल धर्म हैं। यदि सभी लोग साधुत्व की साधना न भी कर सकें तो अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को स्वीकार कर अपने गृहस्थ जीवन को भी धर्म से भावित बना सकते हैं। परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया जो आज भी निरंतर गतिमान है। आचार्य प्रवर ने कहा, आज का मूल कार्यक्रम अणुव्रत गीत का संगान है। मैं खड़ा होकर इस गीत को गाना चाहता हूँ। ऐसा कहते हुए आचार्यश्री पट्ट से नीचे उतरे तो उपस्थित श्रद्धालु, विद्यार्थी व गणमान्य व्यक्ति भी खड़े हो गये और फिर आचार्यश्री के संग आरम्भ हुआ अणुव्रत गीत का महासंगान। इस दौरान अणुव्रत गीत में निहित संदेशों से पूरा वातावरण गुंजायमान हो गया। अणुव्रत गीत के महासंगान के उपरान्त आचार्यश्री ने अणुव्रत उद्घोष का उच्चारण भी करवाया।

आचार्यश्री के आह्वान पर उपस्थित विद्यार्थियों ने सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति के संकल्पों को स्वीकार किया। आचार्यश्री ने कहा कि जीवन में ज्ञान का परम महत्व है। ज्ञान जीवन को

प्रकाशित करने वाला है। शिक्षा का पहला कार्य लर्निंग और फिर अर्निंग हो, किन्तु इसके साथ-साथ अच्छे संस्कार भी जीवन में आएं तो जीवन का सम्पूर्ण विकास हो सकता है। अणुव्रत गीत में कितनी-कितनी प्रेरणाएं समाहित हैं। शिक्षक, विद्यार्थी, व्यापारी आदि सभी प्रभुमय बनें, अहिंसा कायरतापूर्ण नहीं, अहिंसा बलवती हो। मानवीय आचार संहिता से पूरा विश्व अच्छा बने, इसके लिए प्रयास करना चाहिए। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा, मुख्यमुनिश्री महावीरकुमार व साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा ने भी जनता को उद्‌बोधित किया। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार ने भी विचार व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि महाराष्ट्र के शिक्षामंत्री दीपक केसरकर ने कहा कि परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण के दर्शन कर हमारा जीवन धन्य हो गया। आप जो विचार समाज तक पहुँचा रहे हैं, वे विचार समाज में शांति स्थापित करने वाले हैं। आप विराट पदयात्रा करते हुए यहाँ पधारे हैं, मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। आपके शांति के संदेश से पूरे विश्व में शांति स्थापित हो, ऐसी कामना करता हूँ। महाराष्ट्र सरकार की मित्रा योजना के उपाध्यक्ष अजय अशर ने कहा कि मैं ठाणे की धरती पर राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाश्रमणजी का हार्दिक स्वागत करता हूँ।

इससे पहले अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अतिथियों का स्वागत करने के साथ ही कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि अणुव्रत आंदोलन के 75वें वर्ष में अणुव्रत गीत के माध्यम से अणुव्रत दर्शन को पूरे देश सहित विश्व भर में प्रसारित करने के उद्देश्य से अणुव्रत गीत महासंगान की कार्ययोजना तैयार की, तो आचार्य प्रवर ने सहज भाव से इसकी स्वीकृति दे दी। उनके आशीर्वाद का ही प्रतिफल है कि आज यह कार्यक्रम इतने वृहद् स्तर पर आयोजित किया जा रहा है।

अणुविभा अध्यक्ष ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराष्ट्र के शिक्षामंत्री दीपक केसरकर से महाराष्ट्र के विद्यालयों में जीवन विज्ञान का पाठ्यक्रम लागू करने का आग्रह किया।कार्यक्रम में अणुव्रत दर्शन पर आधारित एक डाक्यूमेंट्री भी दिखायी गयी। कार्यक्रम के संयोजक महेन्द्र वागरेचा, महाराष्ट्र मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष व पूर्व न्यायाधीश के. के. तातेड़, अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा व तेरापंथी सभा ठाणे के उपाध्यक्ष पवन ओस्तवाल ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने किया। कार्यक्रम में निरंजन डावखरे, प्रताप सरनाइक, संजय केलकर, विनोद कोठारी, सभाध्यक्ष रमेश सोनी, नरेश सोनी, मंत्री नरेश बाफना आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में अणुविभा के सहमंत्री मनोज सिंघवी, अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष रोशन मेहता, मंत्री राजेश चौधरी, महावीर बड़ाला, रतन कच्छारा, ममता श्रीश्रीमाल, विमला हिरण एवं सभाध्यक्ष रमेश सोनी आदि का सहयोग मिला।

लाखों लोगों ने गाया अणुव्रत गीत

स्कूलों-कॉलेजों, कारागारों, कार्यालयों तथा सभा भवनों में रही 'संयममय जीवन हो' की गूँज

- विश्व की अधिकांश समस्याओं का कारण असंयम है। अणुव्रत गीत हमें संयममय जीवन की ओर प्रशस्त करता है। नैतिक एवं चारित्रिक मूल्य ही किसी समाज एवं देश को महान बनाते हैं। इन मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए अणुव्रत गीत उत्तम प्रेरणा का अमोघ साधन है। जब तक व्यक्ति स्वयं अनुशासित नहीं बनता, तब तक विश्व को सुंदर बनाने की परिकल्पना करना निरर्थक है। अणुव्रत गीत के माध्यम से अखिल विश्व में निवास करने वाले व्यक्तियों के मध्य मैत्री भाव बढ़ाने पर बल दिया गया है। इस प्रकार आचार्य तुलसी कृत अणुव्रत गीत में अणुव्रत के मानवतावादी दर्शन का बेहतरीन दिग्दर्शन है।

- अणुव्रत अमृत महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर इंसानियत का पैगाम देने वाले और नवयुग का आह्वान करने वाले इस लोकप्रिय गीत के वृहद् स्तर पर सामूहिक संगान एवं सामूहिक संकल्प ग्रहण का लक्ष्य 18 जनवरी 2024 को अणुव्रत गीत महासंगान के रूप में सफलतापूर्वक साकार हुआ है। महासंगान के माध्यम से इस प्रेरणास्पद गीत के सकारात्मक स्पंदन जन-जन की व्यक्तिगत और सामाजिक चेतना को झंकृत करने और एक अहिंसक व शांतिप्रिय समाज के निर्माण में निश्चय ही योगभूत बने हैं, यह विश्वास सहज ही किया जा सकता है।

- अणुव्रत गीत महासंगान की सफलता में देशभर में अणुव्रत कार्यकर्ताओं का समर्पित श्रम मुखरित हुआ। अणुव्रत गीत के माध्यम से प्रत्येक कार्यकर्ता के मन में अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी के प्रति श्रद्धा के गहरे भाव जुड़े हैं। अणुव्रत आंदोलन के 75वें वर्ष में कृतज्ञ कार्यकर्ताओं की अपने आध्यात्मिक गुरु के प्रति यह एक हार्दिक व रचनात्मक श्रद्धांजलि का ही रूप था।

- केंद्रीय स्तर पर अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन, प्रभारी उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा के साथ-साथ अणुविभा के समस्त पदाधिकारी व कार्यसमिति सदस्य इस महा-अभियान को सफल बनाने में जुटे थे। सभी संगठन मंत्रियों - उत्तरांचल से डॉ. कुसुम लुनिया, पश्चिमांचल से पायल चौरड़िया, पूर्वांचल से भरत चौरड़िया, मध्यांचल से साधना कोठारी व दक्षिणांचल से राजेश चावत व समस्त राज्य प्रभारियों ने नियमित सम्पर्क साध कर और जूम बैठकें आयोजित कर स्थानीय स्तर पर अणुव्रत समितियों व अणुव्रत मंचों के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम किया।

- सूरत में कार्यरत समन्वय कक्ष ने इस सम्पूर्ण अभियान में अहम भूमिका निभायी। अणुविभा उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा, मंत्री संजय बोथरा, संयोजक दिलीप सेठिया के साथ लगभग 50 कार्यकर्ताओं की टीम लगभग एक माह से सक्रिय थी। मुकेश बोथरा, मंदीप बैद, रोहित दुधेड़िया, रोहित भंसाली, दीपक मालू एवं पीयूष दुगड़ के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन्होंने अणुव्रत गीत महासंगान कंट्रोल रूम में सक्रियता से योगदान दिया। यहाँ से सभी स्थानों पर अणुविभा द्वारा तैयार किये गये अणुव्रत गीत महासंगान के ब्रोशर, पोस्टर, स्टिकर, अणुव्रत गीत व संकल्प पत्र, आई-सपोर्ट फॉर्म, आयोजन प्रमाण-पत्र तथा साहित्य कोरियर द्वारा प्रेषित किये गये।

- अणुव्रत गीत का 13 भाषाओं में लिप्यांतरण करवा कर उपलब्ध कराया गया ताकि गैर-हिन्दीभाषी क्षेत्रों में भी इसे सहजता के साथ गाया जा सके। अणुव्रत गीत की धुन के साथ-साथ इसके बोलों को दिखाते हुए वीडियो बनाया गया जिसे अनेक आयोजन स्थलों पर स्क्रीन लगा कर दिखाया गया। अणुव्रत गीत के भावार्थ को व्याख्यायित करने वाली 6.15 मिनट की डॉक्यूमेंट्री जन-जन को अणुव्रत के दर्शन से परिचित कराने में प्रभावी बनी। डॉक्यूमेंट्री निर्माण में मुंबई के ललित छाजेड़ का सहयोग प्राप्त हुआ।

- अणुव्रत गीत महासंगान की आयोजना में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का सहयोगी संस्था के रूप में जुड़ना एक विशिष्ट उपलब्धि रही। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री अमित नाहटा ने जिस उत्साह और आत्मीयता के साथ इस अभियान में अपना सहयोग प्रदान किया, वह निश्चय ही प्रशंसनीय है। उन्होंने अपने स्तर पर कुलदीप कोठारी को संयोजकीय दायित्व प्रदान कर इस जुड़ाव को सहज बना दिया, जिन्होंने बैठकों में सहभागिता के साथ ही परिषदों से व्यक्तिशः संपर्क कर इस अभियान को गति प्रदान की। इसके परिणामस्वरूप देशभर में फैली 300 से अधिक परिषदों के कार्यकर्ताओं ने इस अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लिया। जिन क्षेत्रों में

अणुव्रत का संगठन नहीं है, वहाँ परिषदों ने अपने स्तर पर अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन किया। युवा शक्ति ने इस अभियान से जुड़कर अणुव्रत के संदेश को व्यापक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

- अणुव्रत गीत महासंगान के कार्यक्रम को लेकर अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने एक व्यापक अभियान चलाकर राजनेताओं, प्रशासनिक अधिकारियों, साहित्यकारों व कलाकारों, आध्यात्मिक गुरुओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं से संपर्क किया। इनसे प्राप्त भावपूर्ण समर्थन कार्यकर्ताओं के उत्साह को बढ़ाने वाला था। अनेक विशिष्ट जनों ने अणुव्रत गीत महासंगान को लिखित में अपना समर्थन दिया और वीडियो बाइट्स के माध्यम से आमजन को इस अभियान से जुड़ने का संदेश दिया।
- अनेक स्थानों पर जिला अधिकारियों, शिक्षा अधिकारियों व जेल प्रशासकों ने अपने कार्यक्षेत्र में आने वाले संस्थानों में अणुव्रत गीत गाने का लिखित निर्देश जारी किया।
- अणुव्रत गीत महासंगान में विद्यालयी बच्चों की बहुत बड़ी संख्या में सहभागिता एक उज्ज्वल भविष्य का दिशासूचक बनकर सामने आयी। देशभर में विद्या भारती के लगभग 25 हजार विद्यालयों के लाखों विद्यार्थियों ने 18 जनवरी को अणुव्रत गीत का संगान किया। राष्ट्रीय स्तर पर विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के महामंत्री अवनीश भटनागर ने अपने पत्र में यह निर्देश भी जारी किया कि न सिर्फ अणुव्रत गीत को गाया जाये, वरन बच्चे इस गीत को कंठस्थ करें ताकि गीत में निहित भावों को वे आत्मसात कर सकें।
- एक ओर जहाँ अणुव्रत अनुशास्ता ने स्वयं अपने श्रीमुख से अणुव्रत गीत का संगान किया, वहीं देशभर में प्रवासित साधु-साध्वी व समणीवृंद ने उपस्थित श्रद्धालुओं के मध्य गीत का संगान कर अणुव्रत के संदेश को मुखरित किया।
- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम ने भी अनेक स्थानों पर अणुव्रत गीत महासंगान के अभियान में सहभागिता की। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने उस दिन अपने परिवार में आयोजित वैवाहिक समारोह में उपस्थित अतिथियों के साथ अणुव्रत गीत का सामूहिक संगान किया। अन्य कई स्थानों पर भी वैवाहिक समारोहों में अणुव्रत गीत का संगान किया गया।
- स्थानीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों की रिपोर्टिंग हेतु एक ऑनलाइन फॉर्म उपलब्ध कराया गया था। समाचार लिखे जाने तक 3083 स्थानों से कार्यक्रम आयोजित किये जाने की सूचना प्राप्त हो चुकी थी। अन्य काफी स्थानों से अभी जानकारी प्राप्त की जानी है।

गणमान्य व्यक्तियों का समर्थन

- **अर्जुनराम मेघवाल,** केन्द्रीय कानून एवं न्याय मंत्री
- **डॉ. हिमंता बिस्वा शर्मा,** मुख्यमंत्री, असम
- **मनोहर लाल खट्टर,** मुख्यमंत्री, हरियाणा
- **नीतीश कुमार,** मुख्यमंत्री, बिहार
- **भूपेन्द्र पटेल,** मुख्यमंत्री, गुजरात
- **देवेंद्र फडणवीस,** उप मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र
- **मंगल प्रभात लोढा,** कौशल्य व रोजगार मंत्री, महाराष्ट्र
- **निरंजन वसंत डावखरे,** विधानसभा सदस्य, महाराष्ट्र
- **डॉ. कमल गुप्ता,** शहरी निकाय मंत्री, हरियाणा
- **सुदीप बंदोपाध्याय,** संसद सदस्य (लोकसभा)
- **शंकर लालवानी,** संसद सदस्य (लोकसभा)
- **सुशील कुमार गुप्ता,** संसद सदस्य (राज्यसभा)
- **कैलाश विजयवर्गीय,** संसदीय कार्यमंत्री, मध्य प्रदेश
- **कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़,** उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री, राजस्थान
- **घनश्याम चन्द्रवंशी,** विधायक, कालापीपल, म.प्र.
- **डॉ. शैली ओबरॉय,** महापौर, दिल्ली
- **डॉ. रेणु जैन,** कुलपति, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
- **डॉ. प्रकाश आमटे,** मैगसेसे अवार्ड विजेता
- **डॉ. सईद अहमद इकबाल,** चांसलर, मणिपाल यूनिवर्सिटी
- **रमेश कुमार शर्मा,** बॉम्बे हाईकोर्ट
- **सत्य नारायण चौधरी,** जॉइंट कमिश्नर, मुम्बई पुलिस
- **डॉ. अनिल अग्रवाल,** प्रांत प्रमुख, आर.एस.एस. दिल्ली
- **भारत भूषण,** कार्यवाहक महामंत्री, आर.एस.एस. दिल्ली
- **कपिल खन्ना,** अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्, दिल्ली
- **कुणाल गौर,** कमर्शियल हेड, वायकॉम 18, कलर्स टी.वी. चैनल

झलकियां
अणुव्रत गीत महासंगान

- अध्यक्ष अविनाश नाहर, मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, न्यासी सुमतिचंद गोठी, महामंत्री भीखम सुराणा, उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, सहमंत्री मनोज सिंघवी सहित अणुविभा की केंद्रीय टीम ने अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में ठाणे में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में शिरकत की।
- अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन, अणुविभा न्यासी अशोक डूंगरवाल, सहमंत्री जगजीवन चोरड़िया व विकास परिषद् सदस्य पदमचंद पटावरी अणुविभा मुख्यालय राजसमंद में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।
- सूरत स्थित कंट्रोल रूम से अणुविभा के उपाध्यक्ष राजेश सुराणा एवं कंट्रोल रूम के सदस्यों की उपस्थिति में अणुव्रत गीत महासंगान का हुआ शंखनाद।
- नवसारी, गुजरात की लाजपोर जेल में 3000 कैदियों ने किया अणुव्रत गीत का संगान।
- सूरत में लगभग 5101 होमगार्ड्स ने गाया अणुव्रत गीत।
- सूरत के अणुव्रत द्वार पर अणुव्रत समिति सूरत एवं तेयुप सूरत द्वारा संयुक्त रूप से अणुव्रत गीत का संगान।
- दिल्ली के लगभग 300 विद्यालयों व दिल्ली विधानसभा में अणुव्रत गीत का संगान।
- संसद परिसर व ऐतिहासिक विजय चौक पर केन्द्रीय कानून व न्याय तथा संस्कृति मंत्री, संसदीय कार्य मंत्री एवं अणुव्रत संसदीय मंच के संयोजक अर्जुनराम मेघवाल की उपस्थिति में अणुव्रत गीत महासंगान।
- चिकमंगलूर (कर्नाटक) में ट्रेन में हुआ अणुव्रत गीत का संगान।
- युक्ति संस्थान महिला मदरसा चूरू में करीब 120 मुस्लिम महिलाओं ने एक साथ किया अणुव्रत गीत महासंगान।
- चूरू के जाकिर हुसैन शिक्षण संस्थान स्कूल के 1000 से अधिक मुस्लिम बच्चों ने कड़ाके की सर्दी में गाया अणुव्रत गीत।
- रामसरा बाईपास के निकट रेगिस्तान में बैंड-बाजा, ऊंटों व घोड़ों के साथ अणुव्रत गीत महासंगान।
- देश के विभिन्न स्कूलों के साथ ही पड़ोसी देश नेपाल के अनेक स्कूलों में अणुव्रत गीत के निरंतर गायन की घोषणा।
- विभिन्न धर्म, जाति, सम्प्रदायों ने अणुव्रत गीत गाकर एकजुटता का संदेश दिया।
- सिंगापुर में भी हुआ अणुव्रत गीत का महासंगान।
- प्रेक्षा इंटरनेशनल के प्रशिक्षक सोकोमोतो ने अणुव्रत गीत का किया भावभरा संगान।

अणुव्रत गीत संगान के लिए जारी हुए प्रशासनिक आदेश

- महानिदेशालय, कारागार राजस्थान ने प्रदेश की सभी जेलों में अणुव्रत गीत महासंगान के लिए जारी किया आदेश।
- गुजरात की सभी जेलों में अणुव्रत गीत संगान के लिए जारी किया गया आदेश।
- वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय ने दक्षिण गुजरात के सभी कॉलेजों में अणुव्रत गीत संगान के लिए जारी किया परिपत्र।
- उदयपुर के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ने उदयपुर और सलूंबर के लगभग 5000 राजकीय विद्यालयों में अणुव्रत गीत संगान के लिए जारी किया आदेश।
- भीलवाड़ा के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ने जिले के सभी राजकीय विद्यालयों में अणुव्रत गीत संगान के दिये आदेश।
- श्रीगंगानगर के जिला शिक्षा अधिकारी ने जिले के सभी राजकीय विद्यालयों में अणुव्रत गीत संगान के लिए जारी किया आदेश।
- चूरू के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ने जिले के लगभग 3000 राजकीय विद्यालयों में अणुव्रत गीत संगान के लिए जारी किया आदेश।
- बीकानेर के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ने जिले के सभी राजकीय विद्यालयों में अणुव्रत गीत संगान के दिये आदेश।
- हनुमानगढ़ के मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ने जिले के सभी राजकीय विद्यालयों में अणुव्रत गीत संगान के जारी किये आदेश।
- जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय की ओर से गाजियाबाद जिले के 446 राजकीय विद्यालयों में अणुव्रत गीत गायन के लिए जारी किया लिखित आदेश।
- गुजरात की स्वयं निर्भर शाला के संचालन मंडल ने 16000 विद्यालयों में अणुव्रत गीत संगान के दिये आदेश।

चित्रदीर्घा

चित्रदीर्घा

बेसिक शिक्षा विभाग
ROCK FLORET
जिला कारागृह चूरू
DISTRICT JAIL CHURU
CHIKMAGALUR

चित्रदीर्घा

चित्रदीर्घा

अणुव्रत आंदोलन से छात्रों में नैतिकता का विकास

अणुव्रत गान महासंगान के स्टीकर का विमोचन

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बाड़मेर. अणुव्रत गीत महासंगन के स्टीकर का विमोचन अणुव्रत समिति की ओर से स्थानीय एमबीसी राउमावि गांधीचौक में किया गया। ... से आचार्य तुलसी का 1949 में प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन 75 वर्ष की गौरवशाली यात्रा पूर्ण कर रहा है जिस पर अणुव्रत अमृत महोत्सव संपूर्ण भारतवर्ष में मनाया जा रहा है। 18 जनवरी को विश्व में अणुव्रत गीत महासंगम का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

अणुव्रत समिति के मंत्री गौतम बोथरा ने कहा कि आज भारत ही ... यह आत्म अनुशासन और सह अस्तित्व की भावना के आधार पर ही संभव है। प्रधानाचार्य खेमचंद खत्री ने अणुव्रत आंदोलन को छात्रों के नैतिक विकास में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। अणुव्रत समिति के सदस्य अमृतलाल जैन, रूपचंद जैन, उप प्राचार्य बाबूलाल खत्री, मनीष जैन, प्रकाश गौड़, रामलाल बेनीवाल, अरविंद राठी, अनीस ...

बाजार
दैनिक नवज्योति
dainiknavjyoti.com

लोकतेज

अणुव्रत गीत महासंगान : इंसानियत के पैगाम का महाअभियान

18 जनवरी को एक करोड़ लोग गायेंगे अणुव्रत गीत, लेंगे अणुव्रत संकल्प

नैतिकता की सुरसरिता में जन जन मन पावन हो

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी कल ठाणे में देगी मानवता का संदेश

ગુજરાત ગાર્ડિયન

એક વિશ્વ, એક માનવ ધર્મના સંદેશ સાથે કાલે એક કરોડ લોકોનું અણુવ્રત ગીત મહાસંગાન

સુરત, તા.૧૬

એક વિશ્વ અને એક માનવ ધર્મનાં ઉદઘોષનાં સંદેશ સાથે આગામી 18 જાન્યુઆરીનાં રોજ સુરત, ગુજરાત સહિત સમગ્ર દેશનાં 1 કરોડ કરતા વધારે લોકો અણુવ્રત ગીતનું મહાસંગાન કરી અનોખો રેકોર્ડ નોંધાવશે.

આ અંગે માહિતી આપતા અણુવ્રત ...

અણુવ્રત વિશ્વ ભારતી સોસાયટીના નેજા હેઠળ સુરત સહિત ગુજરાત અને ભારતભરમાં અણુવ્રત ગીત મહાસંગાન કરીને અનોખો રેકોર્ડ નોંધાવાશે

... રહ્યા છે. વધુમાં અણુવ્રત વિશ્વ ભારતી સોસાયટીનાં અવિનાશ નાહરે જણાવ્યું કે 20મી સદીના મહાન સંત આચાર્ય ... ઉજવી રહી છે. આ 75 ગૌરવશાળી વર્ષોમાં, અણુવ્રતના સાર્વત્રિક દર્શને દરેક જાતિ, વર્ગ, ધર્મ અને ...

अणुव्रत गीत महासंगान का कार्यक्रम विद्यालयों में अयोजित

ई माधोपुर 20-01-2024

र के विभिन्न विद्यालयों में एक साथ गाया अणुव्रत गीत

अणुव्रत समिति एवं तेरापंथ युवक परिषद सवाई माधोपुर के तत्वावधान में अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष "अणुव्रत अमृत महोत्सव" के अंतर्गत अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन सवाई माधोपुर क्षेत्र में स्थित निजी एवं सरकारी विद्यालयों सहित सामाजिक संस्थाओं में किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ समाज की विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने पूर्व निर्धारित आयोजन स्थलों पर उपस्थित होकर जैनाचार्य तुलसी द्वारा उद्घोषित अणुव्रत आंदोलन के नैतिक नियमों से अवगत कराया तथा सुमधुर अणुव्रत गीत का सामूहिक संगान करवाया। इस आयोजन में सवाई माधोपुर के दस हजार से अधिक विद्यार्थियों व नैतिकता को समर्पित पुरुष-महिलाओं ने भाग लिया। ...योजन को लेकर अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम संयोजक नरेन्द्र जैन व अणुव्रत समिति अध्यक्ष ... जैन ने बताया कि मुख्य कार्यक्रम अणुव्रत भवन आदर्श नगर में ... जैन, ... जैन, अंकिता जैन, समीक्षा जैन, शगुन जैन, छवि जैन ने अणुव्रत गीत द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अजय जैन, मंत्री योगेश जैन, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष अनिता जैन, तेरापंथ कन्या मंडल प्रभारी मोना जैन, तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व मंत्री रश्मि जैन, अशोक जैन, ... जैन सूरवाल, पुलकित जैन, रिंकू जैन, देवेश जैन, श्रेयांश जैन, पवन जैन, दिनेश जैन, मनीष आदि ने उपस्थित रहकर अपनी भागीदारी निभाई। अणुव्रत समिति क्षेत्र सवाई माधोपुर ने सफल आयोजन के लिए शिक्षण संस्थाओं, कार्यकर्ताओं सहित प्रशासन का आभार जताया है।

ही आवाज
website: https://vidrohiawaz.in
समाचार पत्र (साप्ताहिक)

गीत महासंगान कार्यक्रम ल रहा है अपूर्व प्रतिसाद

करोड़ों लोग संगान

अणुव्रत विश्व भारती द्वारा नैतिकता को गति देने का एवं मानवीय मूल्यों को सुप्रतिष्ठित करने का सन्निष्ठ प्रयास

दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश सहित देश के अनेक राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री, सांसद, विधानसभा सदस्य सहित अनेक नेताओं, अभिनेताओं, सामाजिक संस्थाओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा अणव्रत गीत महासंगान के ...

www.eyemantra.com
चिकित्सकीय परामर्शानुसार

गुरुवार को जयपुर में होगा 50 से अधिक जगहों पर कार्यक्रम

महासंगान के जरिए स्वस्थ समाज निर्मा

जयपुर @ पत्रिका. जन-जन को मानवता का संदेश देने के उद्देश्य से गुरुवार को जयपुर सहित देशभर में अणुव्रत गीत 'नैतिकता की सुरसरिता में जन-जन मन पावन हो, संयममय जीवन हो' का देश-विदेश में एक करोड़ लोगों की इसमें सहभागिता की सम्भावना है। मुख्य कार्यक्रम अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में ठाणे मुंबई में आयोजित होगा। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) की ओर से कार्यक्रम की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। गौरतलब है कि आचार्य महाश्रमण इन्हीं तीन उद्देश्यों को लेकर अणुव्रत ...

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने बताया कि वर्ष 1949 में 20वीं सदी के महान संत आचार्य तुलसी की ओर से प्रवर्तित यह आंदोलन इस वर्ष अपना अमृत महोत्सव मना रहा है। इन 75 गौरवशाली वर्षों में अणुव्रत के इस सार्वजनिक दर्शन ने हर जाति, वर्ग, धर्म और वर्ण के लाखों-लाखों लोगों के जीवन को अभिप्रेरित ...

यहां-य

अणुव्रत स... अध्यक्ष वि... जयश्री सि... जयपुर में ... पर अलग-... कार्यक्रम ह... सुबोध कॉ... पर सुबह ...

गरिक नैतिक, सादगी, चरित्र निर्माण का बने आधार

अणुव्रत गीत महासंगान कार्यक्रम का अ

भारत टाइम्स

...नगर। अणुव्रत आंदोलन के ...शाली 75 वर्ष के पूर्ण होने के ... में मनाए जा रहे अणुव्रत ... महोत्सव के तहत गुरुवार को ...व्रत गीत महासंगान का आयोजन ... गया। स्थानीय अणुव्रत समिति ...ध्यक्ष राजेंद्र पोकरना ने बताया ...न-जन में नैतिकता के संदेश मुखरित करने के उद्देश्य से ...व्रत विश्व भारती सोसायटी के ...नुसार मंगलवार को कस्बे के श्रमण वर्धमान राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों ने आचार्य तुलसी द्वारा रचित एवं संगायित अणुव्रत गीत "संयममय जीवन हो" का सामूहिक रूप से संगान किया। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य देवाराम प्रजापत सहित शिक्षकगणों की सहभागिता रही। उधर अणुव्रत विश्व भारती के पूर्वाध्यक्ष निर्मल एम रांका ने भी कोयंबटूर स्थित निवास स्थान पर परिजनों के साथ अणुव्रत गीत का संगान किया। उल्लेखनीय है कि तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाचार्य आचार्य श्री तुलसी ने आज से पचहत्तर वर्ष पूर्व मानव को आचरण की दृष्टि से नैतिक व प्रमाणिक बनाए जाने के प्रयोजन से अणुव्रत आंदोलन का शंखनाद किया था जिसके माध्यम से उन्होंने हजारों किलोमीटर की पदयात्रा कर छोटे छोटे संकल्प लोगों को स्वीकार करवाकर उनके जीवन की दिशा व दशा को बदलने का ऐतिहासिक कार्य किया जिसको वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण आगे बढ़ा रहे हैं। ...

ठाणे में अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन

प्रात:काल संवाददाता

मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 18 जनवरी को ठाणे में अणुव्रत महासंगान कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। आचार्य तुलसी द्वारा 1 मार्च 1949 को स्थापित यह आंदोलन 74 वर्ष पूर्ण कर अपने 75वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। वर्तमान में अणुव्रत आंदोलन का अमृत महोत्सव वर्ष पूरे देश में मनाया जा रहा है। जिसके शुभारंभ की घोषणा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने गुजरात प्रवेश के साथ ही अंबाजी के निकट खेरोज में की थी। महावीर बडाला ने बताया कि यह आयोजन ठाणे के रेमंड मैदान में होगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर के नेतृत्व में अणुव्रत समिति मुंबई अध्यक्ष रोशनलाल मेहता, संयोजक महेंद्र बागरेचा, मनोज सिंघवी आदि सक्रिय हैं।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में हजारों बच्चे बने प्रतिभागी

■■ राष्ट्रीय संयोजक राजेश चावत की रिपोर्ट ■■

अणुविभा का एक महत्वपूर्ण प्रकल्प है - अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट। यह नयी पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का एक राष्ट्रव्यापी अभियान है। इसके अंतर्गत गायन, चित्रकला, लेखन और भाषण जैसी वैविध्यपूर्ण विधाओं में होने वाली प्रतियोगिताएँ बच्चों के सर्वांगीण और संतुलित विकास में बहुत ही अहम भूमिका निभाती हैं। इन प्रतियोगिताओं के लिए दिये जाने वाले विषय बच्चों के जीवन निर्माण में सहयोगी बनते हैं।

- ऐसे ही एक विषय "असली आजादी अपनाओ" पर आधारित रहा वर्ष 2023 का अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट। 19 जुलाई 2023 को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण का पावन आशीर्वाद प्राप्त कर राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, प्रकल्प के राष्ट्रीय संयोजक राजेश चावत एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में इस कार्यक्रम की शुरुआत की गयी।
- इस प्रकल्प की जानकारी अधिक से अधिक स्कूलों तक पहुँचाने के उद्देश्य से वेबसाइट, पोस्टर्स, बैनर्स, ब्रोशर्स एवं "असली आजादी अपनाओ" की मुख्य थीम पर एक गाना तैयार किया गया। अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ के मार्गदर्शन में इस कार्य को पाँच जोन के माध्यम से संचालित करने हेतु नॉर्थ जोन से प्रणिता तलेसरा, साउथ जोन से सुभद्रा लुणावत, ईस्ट जोन से संजय चौरड़िया, वेस्ट जोन से किरण परमार व पुष्पा कटारिया एवं सेंट्रल जोन से साधना कोठारी को मनोनीत कर उन्हें कार्यभार सौंपा गया।
- 18 राज्यों में 20 एसीसी प्रभारी तथा 23 राज्य प्रभारी मनोनीत किये गये जिनमें शामिल हैं - नॉर्थ जोन से नीता खोखावत, कुंदन भटेवरा, उषा सिसोदिया, सुनील मुणोत, साउथ जोन से कुशाल बांठिया, लाभेश कस्वां, मुकेश डूंगरवाल, रीटा सुराणा, अजीत चौरड़िया, ईस्ट जोन से जीत प्रभात, संदीप घोषाल, हर्षिला चौरड़िया, वेस्ट जोन से मामोल कोटेचा, रेखा ढालावत, ममता परमार, डिंपल हिरण, आशा पंचोलिया, करुणा कोठारी, सेंट्रल जोन से पूर्णिमा कोठारी, राजन जैन, राज गुंदेचा आदि।
- 15 सितम्बर तक देशभर में लगभग 90 जिलों के 1050 स्कूलों ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में रजिस्ट्रेशन करवाया एवं वहाँ स्कूल स्तरीय प्रतियोगिताओं का

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन

राज्य	आयोजक अणुव्रत समिति
असम	गुवाहाटी
बिहार	किशनगंज
छत्तीसगढ़	भिलाई
दिल्ली	दिल्ली
गुजरात	ग्रेटर सूरत
कर्नाटक	मैसूर
मध्य प्रदेश	इंदौर
महाराष्ट्र	मुंबई
ओडिशा	कटक
राजस्थान	जयपुर, उदयपुर, जोधपुर और चूरू
तमिलनाडु	चेन्नई
तेलंगाना	हैदराबाद
उत्तर प्रदेश	गाजियाबाद
पश्चिम बंगाल	हावड़ा
हिमाचल प्रदेश	हरिसिंह तातेड़ के संयोजकत्व में

आयोजन कर अणुव्रत समितियों के माध्यम से 31 अक्टूबर 2023 तक जिला स्तरीय कार्यक्रम संपन्न करवाये गये। इसमें जयपुर, कोटा, सवाई माधोपुर, उदयपुर, राजसमंद, आमेट, नाथद्वारा, भीलवाड़ा, शाहपुरा, मुंबई, पालघर, इचलकरंजी, वापी, अहमदाबाद, ग्रेटर सूरत, भुज, भिलाई, अंबिकापुर, श्रीगंगानगर, गंगाशहर, जोधपुर, पाली, बेंगलुरु, मैसूर, चिकमंगलूर, नौगांव, खारुपेटिया, बरपेटा, रोड, धुबड़ी, कोलकाता, दलकोला, फॉरबिसगंज, अररिया कोर्ट, बालोतरा, गुवाहाटी, किशनगंज, दिल्ली, चेन्नई, हिसार, भिवानी, सिरसा, पेटलावद, इंदौर, रायपुरिया, करवड़, बामिया, झकनावद, बोलासा, कल्याणपुरा, जगराओं, गाजियाबाद, मैसूर, कटक, चूरू, हैदराबाद, हावड़ा आदि अणुव्रत समितियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

➪ स्थानीय स्तर पर अर्थ सहयोग जुटाकर इन वृहद् कार्यक्रमों के आयोजन के लिए निश्चय ही ये अणुव्रत समितियां बधाई की पात्र हैं। जिला स्तरीय विजेताओं का राज्य स्तरीय कार्यक्रम भी अणुव्रत समितियों के सहयोग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय स्तर के अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट - 2023 के आयोजन की सूचना शीघ्र ही जारी की जानी है।

➪ इस प्रकार लगभग 41 हजार बच्चों की सहभागिता के साथ अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट - 2023 अपनी सफल सम्पन्नता की ओर अग्रसर है। अणुविभा की केंद्रीय टीम के साथ-साथ इसे सफल बनाने में सहयोगी बनी समस्त अणुव्रत समितियों और उनसे जुड़े अणुव्रत कार्यकर्ताओं के प्रति हार्दिक आभार।

डॉ. महेंद्र कर्णावट व डॉ. दिलीप धींग को भिक्षु प्रज्ञा सम्मान

उदयपुर। 'अणुव्रत पत्रिका' के पूर्व संपादक डॉ. महेंद्र कर्णावट एवं अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को 27 दिसम्बर को अशोक नगर स्थित विज्ञान समिति के डॉ. दौलतसिंह सभागार में आचार्य भिक्षु प्रज्ञा सम्मान 2023 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान, केलवा द्वारा शेषमल कज्जूदेवी कोठारी परिवार के सौजन्य से दर्शन, साहित्य व अध्यात्म में विशिष्ट योगदान के लिए प्रतिवर्ष दो विद्वानों को शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति और मानधन के साथ प्रदान किया जाता है। इस अवसर पर मुनि संबोधकुमार 'मेधांश' ने डॉ. कर्णावट के समर्पण और डॉ. धींग की लेखकीय प्रतिबद्धता को प्रेरणादायक बताया। संस्थापक डॉ. कुंदनलाल कोठारी ने पुरस्कार का महत्व बताया। अध्यक्षता कर्नल डॉ. दलपत सिंह बया ने की। संस्थान अध्यक्ष दिनेश कोठारी ने कहा कि डॉ. कर्णावट और डॉ. धींग जैसे मनीषियों के सम्मान से पुरस्कार का गौरव बढ़ा है। डॉ. एल.एल. धाकड़ ने डॉ. कर्णावट और डॉ. पारसमल अग्रवाल ने डॉ. धींग का परिचय दिया।

डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अपने वक्तव्य में आचार्य भिक्षु के क्रांतिकारी व्यक्तित्व को रेखांकित किया और अपनी सामाजिक यात्रा के संस्मरण सुनाये। डॉ. धींग ने कहा कि हम अंधेरे से नहीं डरें, बल्कि अंधेरे में उजाले की साधना करें, जैसी आचार्य भिक्षु ने 'अंधेरी ओरी' में की थी। प्रणत धींग ने काव्यपाठ किया। अव्वल छात्र जयकुमार बोहरा का भी सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में 'अणुव्रत' पत्रिका के संपादक संचय जैन, राजस्थानी भाषा, साहित्य व संस्कृति अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. देव कोठारी, विज्ञान समिति के कार्याध्यक्ष डॉ. बी. एल. चावत सहित अनेक शिक्षाविद, वैज्ञानिक, समाजसेवी और साहित्यकार उपस्थित थे। 'बच्चों का देश' के सहसंपादक प्रकाश तातेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अणुविभा मुख्यालय चिल्ड्रन'स पीस पैलेस पहुँचा बच्चों का दल

अणुव्रत समिति बीकानेर द्वारा बालोदय एजूटुर का यादगार आयोजन

राजसमंद। अणुविभा का राजसमंद स्थित मुख्यालय चिल्ड्रन'स पीस पैलेस अणुव्रत बालोदय एजुटूर का मुख्य केंद्र है। इस प्रकल्प के अंतर्गत नयी पीढ़ी के नव निर्माण को लक्षित अनेक रचनात्मक कार्यक्रम संचालित होते हैं जिनमें एक प्रमुख व रोचक कार्यक्रम है बालोदय एजुटूर।

अणुव्रत समिति, बीकानेर की पहल पर 30 एवं 31 दिसम्बर को दो दिवसीय बालोदय एजुटूर का आयोजन किया गया। इस टूर में हीरालाल सोभागमल रामपुरिया उ.मा.वि. बीकानेर (विद्या निकेतन) के 40 विद्यार्थियों के साथ ही कुल 60 सदस्य शामिल हुए। विद्यार्थियों ने तीन समूह बनाकर बड़े उत्साह से बालोदय दीर्घाओं का अवलोकन किया। साथ ही लघु एनिमेशन फिल्म 'द बोट' और 'मंकी एंड मोंक' देखी और फिल्मों के विभिन्न पहलुओं पर सार्थक चर्चा की। बाल संसद में बच्चों ने लोकतांत्रिक मूल्यों को समझा और परिवार, स्कूल सहित अपने जीवन के हर क्षेत्र में इन मूल्यों को क्यों और कैसे अपनाया जाना चाहिए, इन मुद्दों पर खुली चर्चा की। संवाद आधारित चर्चाओं ने बच्चों को अपने भीतर झाँकने, अपने व्यक्तित्व को पहचानने, एक सफल जीवन के मायनों को जानने और उस दिशा में कदम बढ़ाने के रास्तों से परिचित कराया।

बालोदय एजुटूर आवासीय बालोदय शिविर और एजुकेशनल टूर का मिला-जुला स्वरूप है जिसमें मेवाड़ के ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का भ्रमण भी शामिल रहता है। यह बच्चों के लिए एक यादगार अनुभव रहा। अणुविभा कार्यकर्ता निरंतर बच्चों के साथ रहकर उनके अनुभवों को रोचक और उद्देश्यपरक बना रहे थे।

प्रातःकालीन सत्र में बच्चों ने प्रकृति की गोद में रहकर इसकी खूबसूरती का नजदीक से आनंद लिया। जीवन विज्ञान प्रशिक्षक जगदीश बैरवा ने बच्चों को आसन, कायोत्सर्ग और प्राणायाम के प्रयोग कराये। अन्तिम सत्र में बच्चों ने अपने अनुभव साझा किये। अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने बच्चों को अणुव्रत का महत्व समझाया और संयमित जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा दी।

बीकानेर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष तथा यात्रा के संयोजक झंवरलाल गोलछा ने बताया कि इस भ्रमण से अणुव्रत समिति के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों, बालकों, विद्यालय की छात्राओं, अध्यापिकाओं एवं कर्मचारियों को बेहतरीन स्थलों का अवलोकन करने का लाभ मिला। विद्या निकेतन की प्रिंसिपल व यात्रा की सह-संयोजिका अनुराधा जैन ने भी यात्रा में बेहद सकारात्मक सहयोग प्रदान किया, जिसके लिए उनका सभी ने आभार प्रकट किया। बालोदय एजुटूर में प्रकाश तातेड़, देवेन्द्र आचार्य, जगदीश बैरवा एवं प्रतिभा जैन की सक्रिय सहभागिता रही।

उत्तरांचल क्षेत्र अणुव्रत कार्यकर्ता प्रशिक्षण संगोष्ठी

राजसमंद। उत्तरांचल क्षेत्र के अणुव्रत कार्यकर्ताओं की एक दिवसीय प्रशिक्षण संगोष्ठी का आयोजन 24 दिसम्बर को अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के सभागार में हुआ। उद्घाटन सत्र में मुनि अतुल कुमार ने अणुव्रत कार्यकर्ताओं को उद्बोधन दिया कि वे छोड़ना सीखें, अनासक्त बनें, पद का मोह न रखें, अहंकार को छोड़ें और समाज को अधिक देने का भाव रखें। उन्होंने कहा कि आज इंसान जन्म ले रहा है मगर इंसानियत नहीं जन्म ले रही है। अणुव्रत अच्छे इंसान बनाने का अभियान है। अणुव्रत नैतिक जीवन जीने की कला है। अणुव्रत की जीवनशैली के जन-जन में प्रसार के लिए अणुव्रत आचार संहिता की जानकारी जरूरी है।

अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत आंदोलन के उद्भव से लेकर वर्तमान परिप्रेक्ष्य तक का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। आपने आचार संहिता का वाचन करवाते हुए इसे जीवन में अपनाने पर जोर दिया। अणुव्रत कार्यकर्ता की भूमिका को विशिष्ट बताते हुए हर कार्यकर्ता से तन-मन-धन से आजीवन जुड़े रहने की अपील की। अणुव्रत के वर्तमान 50 प्रकल्पों की जानकारी देते हुए उन्हें सक्रियता से पूर्ण करने की अपेक्षा रखी।

तेरापंथ विकास परिषद् के सदस्य पदमचन्द पटावरी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने राष्ट्र निर्माण के लिए अणुव्रत की अवधारणा प्रस्तुत की। उन्होंने वर्तमान विषम परिस्थितियों में अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार को अत्यधिक जरूरी बताया। अणुव्रत गौरव पूर्व न्यायाधीश डॉ. बसन्तीलाल बाबेल ने कहा कि अणुव्रत एक जीवनशैली है, इसे जिया जाता है। अणुव्रत एक साधन है, साधना है। इसके सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है।

अणुव्रत गौरव डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रत की अमृत यात्रा के संस्मरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि विख्यात साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार ने आचार्य तुलसी के चिन्तन व शैली को गांधी के समतुल्य माना। डॉ. कर्णावट ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत कार्यकर्ताओं की भूमिका को रेखांकित करते हुए सफल कार्यकर्ता में संयम, सादगी, श्रम निष्ठा, स्वाध्याय, समझ, सूझबूझ, वक्तृत्व कला, संयोजन, समर्पित भाव, सहिष्णुता, आत्मविश्वास आदि गुणों का होना आवश्यक बताया।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संचय जैन ने अणुव्रत गीत एवं अणुव्रत आचार संहिता की व्याख्या करते हुए अणुव्रत अमृत किट की सामग्री का अवलोकन कराया। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन, अणुव्रत अनुशास्ता, अणुव्रत के लक्ष्य और विभिन्न प्रकल्पों पर प्रकाश डाला। अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने अणुव्रत के विभिन्न प्रकल्पों से जुड़ने का आह्वान करने के साथ ही अणुव्रत अमृत किट के रजिस्टर संधारण की प्रक्रिया बतायी तथा अणुव्रत समितियों के रजिस्ट्रेशन की विधि से अवगत कराया।

अणुविभा के न्यासी एवं अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष अशोक डूंगरवाल ने कहा कि अणुव्रत कार्यकर्ता की कथनी-करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए। अणुव्रत समिति राजसमंद के अध्यक्ष अचल धर्मावत ने कहा कि अणुव्रत चरित्र विकास के लिए एक संकल्प यात्रा है।

अणुव्रत समिति राजसमंद से 30, आमेट से 5, भीलवाड़ा 4, उदयपुर व आसींद से 3-3, बालोतरा, दिवेर, नाथद्वारा, पुर, भीम, गंगापुर से 2-2, बाड़मेर, अजमेर, शाहपुरा से 1-1 तथा अणुव्रत मंच प्रतापगढ़ से 4 समेत कुल 64 संभागी शामिल हुए।

संभागियों ने अपनी जिज्ञासाएं रखीं, जिनका समाजान अणुविभा के पदाधिकारियों ने किया। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों का संचालन राजस्थान प्रभारी अभिषेक कोठारी, बालोदय प्रकल्प की संयोजक डॉ. सीमा कावड़िया एवं 'बच्चों का देश' पत्रिका के सह सम्पादक प्रकाश तातेड़ ने किया। अणुविभा के सहमंत्री जगजीवन चौरड़िया ने आभार व्यक्त किया।

अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन

दिल्ली। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति ने 14 जनवरी को अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन हिन्दी भवन में किया। अणुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, महामंत्री भीखमचंद सुराणा, संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, दिल्ली समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा, निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी, मंत्री राजेश बैंगानी, काव्यधारा के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. धनपत लुनिया, दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत इत्यादि ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम में साध्वीश्री अणिमाश्री ने अपने प्रेरणा पाथेय में काव्य रचनाओं की सम्प्रेषणीयता का महत्व बताते हुए कहा कि अणुव्रत दर्शन समाज की दिशा बदल सकता है। कवि डॉ. रसिक गुप्ता ने निराले अंदाज में अणुव्रत का संदेश दिया। एसीसी कॉन्टेस्ट की विजेता रही गुंजन ज्वेल दत्ता ने अपनी रचना में नारी की व्यथा को रेखांकित किया। कवि डॉ. सत्येंद्र सत्यार्थी, विनय विनम्र, सरला मिश्रा, सुनहरी लाल तुरन्त एवं अन्य कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों की अहमियत बताते हुए अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार का संदेश दिया।

कार्यक्रम में कल्याण परिषद् संयोजक के. सी. जैन, अणुव्रत न्यास के निवर्तमान न्यासी सम्पत नाहटा, अणुव्रत महासिमिति के पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा व अशोक संचेती, अणुविभा के कार्यसमिति सदस्य सुरेन्द्र नाहटा, उत्तरी दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्ष मधु सेठिया, अणुव्रत समिति संरक्षक मन्नालाल बैद, बाबूलाल दुगड़, उत्तमचंद छाजेड़, नरेन्द्र डागा, अणुव्रत समिति दिल्ली के उपाध्यक्ष डॉ. अनिलदत्त मिश्रा, सह मंत्री पवन गिड़िया, कोषाध्यक्ष विनोद चोरड़िया, प्रचार मंत्री दिनेश शर्मा तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन समिति के सदस्य प्रदीप संचेती ने किया। आभार ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक चन्द्रकांत कोठारी ने किया। इससे पहले अणुव्रत समिति की ओर से सभी कवियों का स्वागत किया गया।

गुवाहाटी। अणुव्रत समिति की ओर से अणुव्रत अमृत वर्ष के तहत 24 दिसम्बर की सुबह तेरापंथ धर्मस्थल में अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय कवियों ललित कुमार झा, किशोर जैन काला, पुष्पा सोनी, हरकीरत हीर, अंजना जैन, सौमित्रम ने अपनी कविताओं से श्रोताओं का मन मोह लिया। तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष पवन जम्मड़, कार्यक्रम संयोजिका जया घीया एवं हेमलता गोलछा ने भी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर अणुविभा के असम एवं त्रिपुरा प्रभारी छत्तर सिंह चौरड़िया, समिति के निवर्तमान अध्यक्ष बजरंग लाल डोसी, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा, समिति के मंत्री संजय चौरड़िया समेत अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इससे पहले अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बजरंग बैद ने सभी का स्वागत-अभिनंदन करते हुए अणुव्रत दर्शन के विषय में विस्तृत जानकारी दी। सभी आमंत्रित कवियों का अणुव्रत दुपट्टा ओढ़ाकर तथा अणुव्रत साहित्य प्रदान कर अभिनंदन किया गया। अणुव्रत समिति की प्रचार-प्रसार मंत्री सरोज बरड़िया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अणुविभा का स्थापना दिवस मनाया

राजसमंद। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमंद का 42वाँ स्थापना दिवस समारोह 30 दिसम्बर को आयोजित किया गया। प्रारम्भ में अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर के संदेश का वाचन किया गया। नाहर ने अपने संदेश में अणुविभा द्वारा बाल विकास के क्षेत्र में चलाये जा रहे विभिन्न उपक्रमों को शिक्षा जगत के लिए अनुकरणीय बताया। उन्होंने अणुविभा के संस्थापक मोहन भाई सहित इसके विकास में योगभूत सभी कार्यकर्ताओं का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि औपचारिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ जीवन निर्माण के लिए आवश्यक बालोदय कार्यक्रमों को जोड़ने से ही शिक्षा का असली उद्देश्य पूरा हो सकेगा।

अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार तथा अणुविभा के प्रारंभिक काल से जुड़े हुए अफजल खान 'अफजल' ने अणुव्रत विश्व भारती की विकास यात्रा को रेखांकित करने के साथ ही इसके संस्थापक मोहन भाई द्वारा बच्चों के लिए निर्देशित विशेष कार्यों से अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि अशोक डूंगरवाल ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन 75 वर्षों से सतत गतिशील कार्यक्रम है। अणुविभा के 50 प्रकल्पों द्वारा देशभर में अणुव्रत का अभियान जारी है। अणुविभा अणुव्रत की एकमात्र संस्था है, इसका कार्यक्षेत्र देश-विदेशों में है। महेश पगारिया ने मोहन भाई को गांधीवादी विचारों का व्यक्तित्व बताया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष संचय जैन ने अणुविभा के उद्देश्यों और उनकी पूर्ति की दिशा में अब तक हुए प्रयासों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि बच्चों की शिक्षा के प्रति समाज को अपना दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है। जितना ध्यान बच्चों की औपचारिक शिक्षा पर दिया जा रहा है, उससे अधिक ध्यान अभिभावकों व शिक्षकों को उनके व्यक्तित्व निर्माण और संस्कार निर्माण पर देने की जरूरत है। उन्होंने अणुविभा से अपने जुड़ाव और अणुव्रत बालोदय प्रकल्प से प्रेरित शिक्षा के सकारात्मक पक्ष को उजागर किया।

अणुव्रत समिति, राजसमंद के अध्यक्ष अचल धर्मावत ने मानवीय मूल्यों की स्थापना में अणुविभा के योगदान के बारे में बताया। माही जैन ने कहा कि यह संस्था नैतिक मूल्यों के संवर्द्धन की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने युवाओं को भी अणुविभा से जोड़ने की बात रखी।

इस अवसर पर अणुविभा के पंच मंडल सदस्य गणेश कच्छारा, बाल साहित्यकार कुसुम अग्रवाल, रमेश माण्डोत, हिम्मत बाबेल, डॉ. जीवनलाल शिशोदिया, ख्यालीलाल मेहता, भरत दक, मूलचंद भालावत, डॉ. एस. एल. जैन आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन 'बच्चों का देश' पत्रिका के सह सम्पादक प्रकाश तातेड़ ने किया।

"अणुव्रत नीतिमान और चरित्रनिष्ठ पीढ़ी का निर्माता है"

पर्यावरण जागरुकता अभियान

■■ राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष में पर्यावरण जागरुकता अभियान के तहत अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में देशभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

➪ अम्बिकापुर अणुव्रत समिति की ओर से 'अणुव्रत समिति अम्बिकापुर' लिखा हुआ गमला पौधा सहित सरस्वती शिशु मंदिर की प्राचार्य को भेंट किया गया। इस अवसर पर बच्चों को पौधों में पानी व खाद किस तरह से, कितनी मात्रा में दी जाये, इन बातों की जानकारी दी गयी।

➪ **भुज अणुव्रत समिति** ने अन्य अनेक संस्थाओं के साथ मिलकर राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस पर 2 दिसंबर को लोगों से अत्यंत आवश्यक होने पर ही स्कूटर, कार, बाइक आदि का उपयोग करने की अपील की।

➪ **पाली अणुव्रत समिति** की बैठक में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के प्रति जन-जन में जागरुकता लाने के कार्य को गति देने के लिए योजना बनायी गयी। समिति द्वारा मानपुरा-भाखरी स्थित सज्जन लॉ महाविद्यालय में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर तले जन जागृति का कार्य किया गया।

➪ **जयपुर अणुव्रत समिति** द्वारा जयपुर पब्लिक स्कूल की प्री-प्राइमरी विंग में ईको फ्रेंडली बैनर का विमोचन किया गया। साथ ही बच्चों को ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने का संकल्प दिलाया गया।

➪ **बीकानेर अणुव्रत समिति** द्वारा ही. सो. रामपुरिया उ. मा. विद्यालय के साथ मिलकर 'आओ अणुव्रत जीवनशैली अपनाएं : पर्यावरण बचाएं ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाएं' विषय पर आधारित पर्यावरण जागरुकता रैली गंगाशहर के मुख्य चौराहों से निकाली गयी। इसमें शामिल लोग पर्यावरण संरक्षण के लिए उठाये जाने वाले कदमों के नारे लगा रहे थे।

➪ **सिलीगुड़ी अणुव्रत समिति** द्वारा 'घर-घर पौधा, हर घर पौधा' मिशन के तहत महावीर इंटरनेशनल में 'अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी' लिखित गमले पौधे सहित भेंट किये। वहीं महावीर इंटरनेशनल अपना घर आश्रम में कोई भी फेस्टिवल ईको फ्रेंडली तरीके से कैसे मनाएं, के बारे में जानकारी दी गयी।

➪ **डाबड़ी अणुव्रत समिति** ने शानदार तरीके से बच्चों को ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने का संदेश दिया। ग्रीन बोर्ड पर ड्रॉ करके भी बच्चों को यह संदेश दिया कि जब तक हमारी संवेदनाएं पर्यावरण के प्रति नहीं जुड़ेंगी, तब तक हम पर्यावरण का संरक्षण नहीं कर सकते। उन्हें बताया कि वायु, जल, ध्वनि और मृदा

प्रदूषण के मानव पर हानिकारक प्रभाव होते हैं, इसलिए हमें पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्यों को विभिन्न तरीकों से जनमानस तक पहुँचाना चाहिए ताकि हमारे देश की युवा पीढ़ी ईको फ्रेंडली बने तथा पर्यावरण को संरक्षित रखते हुए अपना जीवन यापन करे।

➪ **औरंगाबाद अणुव्रत समिति** ने हाईस्कूल, श्रेयस बाल मंदिर और श्रीकृष्ण महानुभाव आश्रम में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के लिए जनजागृति का कार्य किया। इस दौरान अणुव्रत समिति के मंत्री ने बताया कि पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए हम त्योहारों को कैसे सुंदर ढंग से मना सकते हैं। कई सारी बीमारियाँ पानी के कारण होती हैं। इसलिए हमें जल की सुरक्षा, स्वच्छता और बचत के लिए विशेष जागरूक रहना चाहिए। उसी प्रकार मृदा यानी मिट्टी से हमें सारी जीवनोपयोगी वस्तुएं प्राप्त होती हैं। ऑक्सीजन भी हमें पेड़-पौधे ही देते हैं। हम सभी संकल्प लें कि आने वाले हर त्यौहार को हम ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के रूप में ही मनाएंगे।

औरंगाबाद अणुव्रत समिति ने नववर्ष पर ईको फ्रेंडली बैनर का लोकार्पण किया गया। समिति की अध्यक्ष रूपा धोका ने कहा कि मकर संक्रांति पर बच्चे पतंग उड़ाते हैं। पतंग की डोर से अनेक पक्षियों की मृत्यु हो जाती है। पतंग उड़ाते समय तेज आवाज में लाउडस्पीकर बजाने से ध्वनि प्रदूषण होता है। इसे देखते हुए उन्होंने सभी से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने की अपील की। ज्ञानशाला के बच्चों को भी पतंग न उड़ाने की प्रेरणा दी। इस कार्य में तेरापंथ युवक परिषद् का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

➪ **अहमदाबाद अणुव्रत समिति** द्वारा 12 जनवरी को शाहीबाग में अणुव्रत उद्यान के सामने जनजागृति का कार्यक्रम आयोजित किया गया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश धींग,

निवर्तमान अध्यक्ष सुरेश बागरेचा, उपाध्यक्ष सुरेन्द्र लुनिया, सहमंत्री विजय छाजेड़, परामर्शक जवेरीलाल संकलेचा, महेन्द्र चौपड़ा, सदस्य प्रकाश सोनी, राकेश सिपानी आदि ने लोगों से ईको फ्रेंडली थीम पर मकर संक्रांति उत्सव मनाने की अपील की। उन्हें बताया कि पतंग की डोर आपकी गर्दन के लिए बेहद खतरनाक हो सकती है। ऐसे में अपनी गर्दन को पोलो नेक टी-शर्ट के साथ या फिर स्कार्फ/दुपट्टे से ढकना जरूरी है। समिति की ओर से चाइनीज मांझे से बचाव के लिए दोपहिया वाहनों पर तार का स्टैंड निःशुल्क लगवाया गया।

अहमदाबाद अणुव्रत समिति ने बाल सेवकों के साथ चार रास्ता, रिवर फ्रंट सर्किल एंव घेवर सर्किल पर पर्यावरण संरक्षण से संबंधित पोस्टर व बैनर लगाकर जनजागृति का प्रयास किया।

➪ **फरीदाबाद अणुव्रत समिति** ने ईको फ्रेंडली फेस्टिवल बैनर तले बाल विकास केंद्र, वाल्मीकि चौपाल, नेहरू नगर में जनजागृति का कार्य किया।

➪ **हिसार अणुव्रत समिति** द्वारा चर्च संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष राजेन्द्र अग्रवाल ने अपने संबोधन में कहा कि हमें सभी त्योहारों को मिलजुल कर मनाना चाहिए। वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण के लिए हर नागरिक को प्रयास करने चाहिए। उन्होंने लोगों को क्रिसमस की शुभकामनाएं दीं।

➪ **किशनगंज अणुव्रत समिति** ने चर्च में जाकर ईको फ्रेंडली फेस्टिवल का संदेश दिया। लोगों को बताया कि हमें जल, हवा व मृदा को प्रदूषित न करने की बात जन-जन तक पहुँचानी है।

➪ **शिवपुरी अणुव्रत मंच** द्वारा बच्चों से पौधरोपण करवाया गया तथा "हमें लगाकर मत छोड़िए, देखभाल कर हमें विस्तार दीजिए, हम भी ईश्वर की रचित अनुपम कृति हैं" का संदेश तख्तियों के माध्यम से दिया गया।

➪ **बरपेटा अणुव्रत समिति** ने कैथोलिक चर्च में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल का बैनर स्थायी रूप से लगाया तथा ईको फ्रेंडली क्रिसमस मनाने की प्रेरणा दी।

चेंबूर में अणुव्रत वाटिका का लोकार्पण

मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत वाटिका का लोकार्पण चेंबूर में हुआ। इस अवसर पर मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा, अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार, साध्वीश्री काव्यलता के मंगल सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम की

अध्यक्षता अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने की। नाहर ने कहा कि अब तक पूरे देश में सात वाटिकाओं का लोकार्पण हो चुका है। स्थान विशेष की जरूरत को देखते हुए पर्यावरण के अनुरूप वाटिका बने तो बहुत उपयोगी होगी। इस

अवसर पर अणुविभा के उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, सहमंत्री मनोज सिंघवी, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका, मीडिया सदस्य महावीर बडाला, राजेश मेहता, प्रशांत तातेड़, अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता, मंत्री राजेश चौधरी, कोषाध्यक्ष ख्यालीलाल कोठारी, अभातेयुप के अध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री अमित नाहटा, महिला मंडल मुंबई अध्यक्ष विमला कोठारी, वाटिका संयोजिका सीमा सोनी, सहसंयोजक चंद्रेश दुग्गड़, शर्मिला डूंगरवाल आदि उपस्थित थे।

किशनगंज में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन

किशनगंज। शहर में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन 12 जनवरी को उपासिका सायर बाई, महिला मंडल अध्यक्ष संतोष देवी व ज्ञानशाला संयोजिका शीला लुनिया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष रश्मि बैद तथा मंत्री ममता सुराणा ने किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति की ओर से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल भी मनाया गया। इस अवसर पर समिति की उपाध्यक्ष सुनीता कोठारी, उपाध्यक्ष भारती डागा, सह मंत्री सोनम लुनिया, कोषाध्यक्ष मनीषा दफ्तरी, सहमंत्री रुचि टोंगिया, मीडिया प्रभारी कविता जैन की भी उपस्थिति रही।

ईको फ्रेंडली अभियान के तहत चयनित रचना

पर्यावरण रक्षा करो, वो तुम्हारी करेगा

-शुभकरण बैद, लाडनूं

पर्यावरण रक्षा करो, वो तुम्हारी करेगा।
तुम थोड़ा श्रम करोगे, वो वर्षों साथ देगा।
हरे पेड़ काट कर के हम, निज नुकसान कराते हैं।
कहते सबको रोज मगर, कुछ भी तो ना कर पाते हैं।
पर्यावरण रक्षा करो...
हरे पेड़ हम ना काटेंगे, जो हैं उन्हें बचाएंगे।
वृक्षारोपण के द्वारा हम, ज्यादा पेड़ लगाएंगे।
पर्यावरण रक्षा करो...
बिजली पानी को देखो हम, कितना व्यर्थ गंवाते हैं।
व्यर्थ बहाना बंद किया अब, वर्षा जल न गंवाते हैं।
पर्यावरण रक्षा करो...
युद्धों के द्वारा पर्यावरण का, जो नुकसान कराते हैं।
युद्ध रोकने की खातिर, हम उनको भी समझाते हैं।
पर्यावरण रक्षा करो...
आतिशबाजी नहीं करेंगे, पर्यावरण बचाएंगे।
पर्यावरण नुकसान किये बिन, हर त्यौहार मनाएंगे।
पर्यावरण रक्षा करो...
(लय : तुम एक पैसा दोगे वो दस लाख देगा)

आर्थर रोड जेल में अणुव्रत की गूँज

मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में आर्थर रोड जेल में अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा नशामुक्ति एवं जीवन विज्ञान का कार्यक्रम कैदियों के बीच रखा गया।

कार्यक्रम में मुनिश्री वर्धमान कुमार ने अणुव्रत को अपनाकर जीवन जीने की कला सिखायी। मुनिश्री जागृत कुमार ने जीवन विज्ञान एवं ध्यान के प्रयोग करवाये। मुनिश्री डॉ. अभिजीत कुमार ने अणुव्रत के नियमों की व्याख्या के साथ ही छोटे-छोटे उदाहरणों द्वारा किस प्रकार जीवन में बदलाव ला सकते हैं एवं अच्छा जीवन जी सकते हैं, गुनाहों से बच सकते हैं, इस पर उद्बोधन दिया। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने महाव्रत एवं अणुव्रत के बारे में बताने के साथ ही नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी।

जेल अधीक्षक हर्षद अहिराव ने चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि महीने में दो बार ऐसे कार्यक्रम अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा जेल परिसर में आयोजित किये जाएं तो कैदियों में सुधार हो सकता है। उन्होंने अणुव्रत के अनुरूप जीवन जीने का प्रयास करने की बात भी कही।

इससे पहले अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष रोशन मेहता ने सभी का स्वागत किया तथा अणुव्रत और अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा संचालित प्रकल्पों की जानकारी दी। मंत्री राजेश चौधरी ने बताया कि समिति की ओर से जेल अधीक्षक सहित पूरे स्टाफ को अणुव्रत साहित्य भेंट कर एवं दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति मुंबई के कोषाध्यक्ष ख्याली कोठारी, एलीवेट टीम से जितेंद्र सेठिया, अणुव्रत क्षेत्र दक्षिण मुंबई के संयोजक नरेंद्र मूणोत, सुरेश बापना, श्रेयांस मूणोत, निखिल डाकलिया, देवेश मिश्रा आदि की सक्रिय सहभागिता रही।

अणुव्रत के प्रकल्पों पर लगायी प्रदर्शनी

चूरू। गीतांजलि पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने अणुव्रत विश्व भारती द्वारा संचालित ड्रग डिएडिक्शन, डिजिटल डिटॉक्स,

अणुव्रत वाटिका एवं अणुव्रत बालोदय समेत विभिन्न प्रकल्पों पर तैयार प्रोजेक्ट्स की प्रदर्शनी स्कूल प्रांगण में लगायी।

कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल निदेशक दामोदर गौतम ने दीप प्रज्वलित कर किया। कक्षा 7 के विद्यार्थी गोपाल शर्मा, ध्रुव शर्मा, जय बागोरिया व हेमेंद्र शर्मा ने अपने प्रोजेक्ट के जरिये पर्यावरण व पृथ्वी को बचाने का संदेश दिया। कक्षा 8 की सना, रिया व अलशिफा ने नशामुक्ति पर प्रोजेक्ट बनाकर नशे से दूर रहने का संदेश दिया। कक्षा 7 की समीक्षा व नाविका शर्मा ने अपने प्रोजेक्ट से मोबाइल का अनावश्यक प्रयोग न करने तथा सोशल मीडिया से दूर रहने का संदेश दिया। सभी बच्चों को अणुव्रत समिति द्वारा पुरस्कृत किया गया।

अणुव्रत समिति की अध्यक्ष रचना कोठारी व विद्यालय की अध्यापिका मोनिका शर्मा ने बच्चों को प्रोजेक्ट तैयार करने के लिए प्रोत्साहन व सहयोग दिया। अणुव्रत समिति की कोषाध्यक्ष लक्ष्मी कोठारी, शशि कोठारी, संजय भाटी, पायल दफ्तरी, अनु बांठिया, सोनू शर्मा आदि ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

वॉक एंड रन से दिया नशामुक्ति का संदेश

चिकमंगलूर। जिला पुलिस की ओर से नशामुक्ति अभियान के तहत 6 जनवरी की सुबह वॉक एंड रन का आयोजन किया गया। स्थानीय अणुव्रत समिति ने भी कार्यक्रम में सक्रिय

सहभागिता निभायी। समिति के सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत संगान के बाद एसपी विक्रम आमटे ने स्कूल व कॉलेज के 3000

विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने की शपथ दिलायी। इसके पश्चात् शासक एचडी तम्मैया ने हरी झंडी दिखाकर वॉक एंड रन रैली का शुभारंभ किया। इसमें पुलिस बैण्ड, गणमान्य व्यक्ति और स्कूली बच्चे शामिल हुए। लगभग 4 किलोमीटर के वॉकथान के माध्यम से पूरे जिले को नशामुक्त बनाने का संदेश दिया गया। जिला अधिकारी मीना नागराज, ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य भारती दीदी एवं अणुव्रत समिति की अध्यक्ष मंजू भंसाली ने मंच को सुशोभित किया। एचडी तम्मैया ने अपने वक्तव्य में अणुव्रत समिति के कार्यक्रमों में सहयोग का भरोसा दिलाया।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के मंत्री गौतम आच्छा, पूर्व अध्यक्ष लालचंद भंसाली, कोषाध्यक्ष किशोर आच्छा, किशोर बोथरा राकेश कवाडिया, पुष्पराज गादिया, सुशील भंसाली तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे

ध्यान की उपादेयता के बारे में बताया

वडोदरा। अणुव्रत समिति की ओर से 24 दिसम्बर को प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें प्रशिक्षक

श्रेयांश महेता ने जीवन में ध्यान की उपादेयता के बारे में बताने के साथ ही कायोत्सर्ग, महाप्राण ध्वनि, चैतन्य केंद्र प्रेक्षा एवं मंत्र प्रेक्षा के द्वारा ध्यान करवाया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेश मेहता, मंत्री महावीर हिरण, पूर्व अध्यक्ष संतोष सिंघी समेत बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

AkashGanga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुविभा

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

के ऐतिहासिक अवसर पर

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

की रचनात्मक भेंट

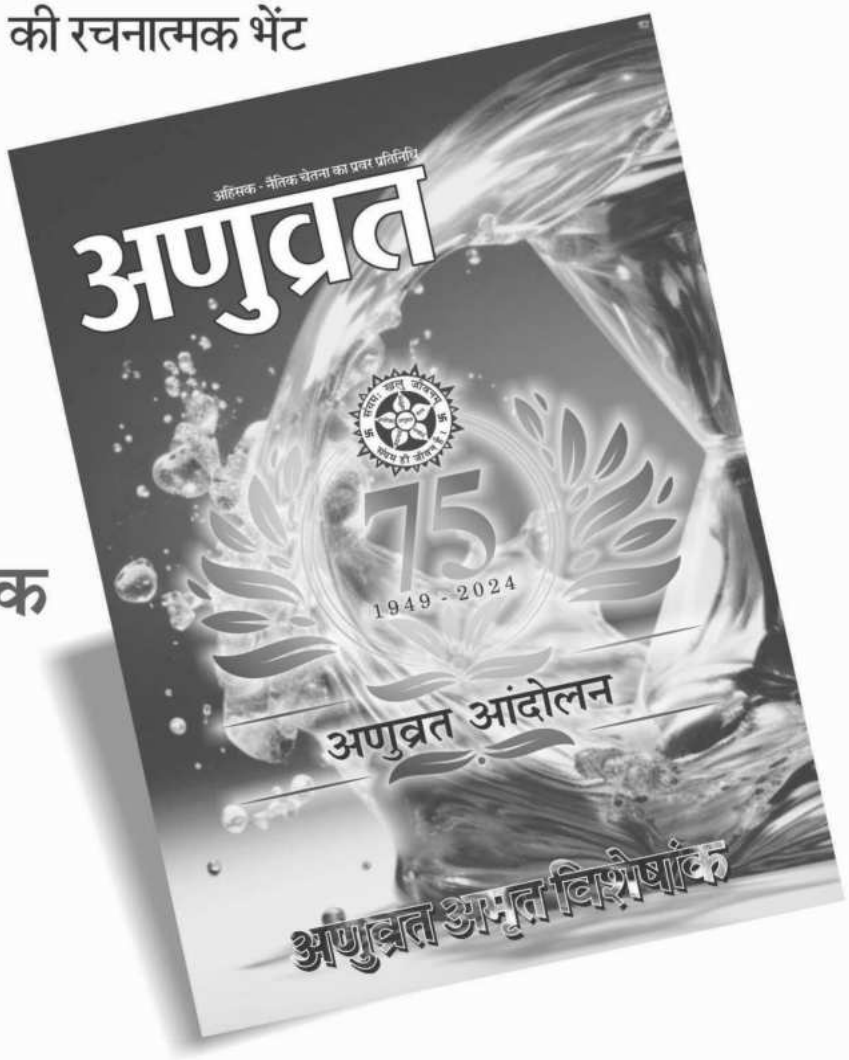

'अणुव्रत' पत्रिका का

अणुव्रत अमृत विशेषांक

(मार्च-अप्रैल 2024 संयुक्तांक)

विशेषांक के आकर्षण

अणुव्रत अनुशास्ताओं के अमृत वचन

विशिष्टजनों के संदेश । अणुव्रत आंदोलन के ऐतिहासिक संदर्भ । अणुव्रत अमृत महोत्सव की झलकियाँ । अणुव्रत कार्यकर्ताओं के उद्‌गार । विद्वान लेखकों के आलेख । प्रेरक कविताएँ । संदेशपरक कहानियाँ आदि

रचना सम्प्रेषण हेतु सम्पर्क सूत्र

+91 9414273749 | 9116634512 | anuvrat.patrika@anuvibha.org

विज्ञापन बुकिंग हेतु सम्पर्क सूत्र

+91 9810155861 | 9899445249 | delhi@anuvibha.org

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
February, 2024

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2024-26
Licence No. U(C)-215/2024-26
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/01/2024
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

आप सादर आमंत्रित हैं...

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह

10, 11 व 12 मार्च, 2024

पावन सन्निधि

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण

आयोजन स्थल

महाड़ - लोणेर (जिला - रायगढ़, महाराष्ट्र)

आयोजक

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

सम्पर्क सूत्र : 9422 416999, 98223 03836, 74101 59834, 98692 73412

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**